बरिस-5 अंक-17

सिरिजन

www.sirijan.com

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

जुलाई-सितम्बर 2022

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका
अंक-17, जुलाई-सितंबर 2022

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
		2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
बिशिष्ट सम्पादक	:	बृजभूषण तिवारी
उप सम्पादक	:	तारकेश्वर राय
कार्यकारी सम्पादक	:	संजय कुमार मिश्र
सलाहकार सम्पादक	:	राजीव उपाध्याय
सह सम्पादक	:	1. भावेश अंजन
		2. अमरेन्द्र कुमार सिह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
		5. राम प्रकाश तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविद सिह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
पश्चिम भारत प्रतिनिधि	:	बिजय शुक्ला
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय
- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4

आपन बात
- आपन बात - तारकेश्वर राय / 6

कनखी
- हँस के लोढ़ा करे बड़ाई, हमहूँ शम्भूनाथ के भाई- डॉ अनिल चौबे / 13

कथा-कहानी
- पुरान अखबार - अंकुश्री /26
- पंच प्रधान - सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा / 29
- आँखि - मदनमोहन पाण्डेय / 35
- सावन - बिनोद सिह गहरवार / 46
- शीशवानी के खेत - बिद्या शंकर विद्यार्थी / 50
- दिया-बाती - डॉ कमल उपाध्याय / 52
- रोटी - अभियंता सौरभ कुमार / 86
- बाढ़ - नन्दीश्वर द्विवेदी "राजन" / 90
- उपहार - बन्दना श्रीवास्तव / 98

कविता
- छव मुक्तक - दिनेश पाण्डेय / 23
- बंद मुठ्ठी - कृष्ण मुरारी राय / 28
- दोहा - अखिलेश्वर मिश्र / 33
- भोजपुरी - कनक किशोर / 34
- तोहराँ कवनो गतरे लाज नइखे - मदनमोहन पाण्डेय / 37
- पर्यावरन - निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 38
- जीवन-मृत्यु - अमरेन्द्र कुमार सिह / 43
- बलिदानी बैकुण्ठ शुक्ल - संजीव कुमार त्यागी / 44
- सोर बहुते अंदर बा - गुलरेज शहजाद / 49
- अगुताइल उमिर - गुलरेज शहजाद / 49
- जिनगी के कारोबार - गुलरेज शहजाद / 49
- दीपशलभ - मार्कण्डेय शारदेय / 54
- कीमत - कौशल मुहब्बतपुरी / 62
- हम त किसान के बेटउवाँ - राम पुकार सिह "पुकार" ग़ाज़ीपुरी / 64
- आषाढ़ एगो चिन्तन - संजय कुमार राव / 65
- खुले में शौच के बंद करीं - सुजीत पाण्डेय / 68
- मंगरुवो के प्यार हो गइल - विमल कुमार / 69
- उतरि जाई पानी - अवध किशोर 'अवधू' / 72
- जियान करऽता - सन्तोष कुमार विश्वकर्मा 'सूर्य' / 72
- बाबूजी - डॉ मधुबाला सिन्हा / 75
- रोजो इंतज़ार में ना - गणेश नाथ तिवारी "विनायक" / 76
- आदमियत खोजाता - बृजमोहन उपाध्याय "बृज" / 81
- अनमोलक थाती - सुहानी राय / 89
- भोजपुरी जनि रउरा बिसराईं - बृजेश शुक्ला (नेउरा) / 89

गीत/ गजल
- डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ ग़ज़ल / 16
- ठुमुकत चले दिहऽ - सुभाष पाण्डेय / 27
- पावस गीत - सुभाष पाण्डेय / 27
- दूर बाटे किनारा - आकाश महेशपुरी / 28
- बेटी के बिदाई - आकाश महेशपुरी / 28
- गइल भँइसिया पानी में - रामरक्षा मिश्र विमल / 58
- अब नीमन होई - रामरक्षा मिश्र विमल / 58
- भजपुरी काहें लिखवावत बानी भाई ? - रामरक्षा मिश्र विमल / 58
- काफी बा – नक्क मझव्वी / 59
- बदरा काहें नाहीं मानेलऽ - इंद्र कुमार दीक्षित / 59
- दूर बाटे किनारा - आकाश महेशपुरी / 60
- बेटी के बिदाई - आकाश महेशपुरी / 60
- निर्गुन - सौदागर सिह / 61
- तनी घुँघुटा उठा के देखऽ ना - संजय मिश्र "संजय"/ 63
- ई तो मौसम के मार हऽ / - संजय मिश्र "संजय"/ 63
- कजरी - माया शर्मा / 66
- चढ़त असढ़वा - माया शर्मा / 66
- नशा - मधुसूदन पाण्डेय / 67
- माई - मधुसूदन पाण्डेय / 67
- जरूरत बा - गीता चौबे "गूँज" / 70
- आदमी - विद्या शंकर विद्यार्थी / 70
- चललऽ - विद्या शंकर विद्यार्थी / 70
- छदमी बनल बा छाँह - देवेन्द्र कुमार राय / 71
- नेह के डोर - कृष्णा श्रीवास्तव / 71
- भीड़ बहुते बा - आर के भट्ट "बावरा" / 73
- मिर्जापुरी कजरी - श्याम श्रवन / 73
- रिस्ता नाता नकली बाटे - सुरेश गुप्त / 74
- नशामुक्ति - संजीव शुक्ल सचिन' / 74
- मंजिल मिले आसानी से - दीपक तिवारी / 77
- हमसे फरका रहि के - दीपक सिह / 77
- माई के महिमा क गीत - रघुबंशमणि दूबे / 88
- ए बदरी - धीरेन्द्र पांचाल / 96
- दू गो ग़ज़ल - उमाशंकर दूबे 'अनुज' / 96
- डहकत इंसान से का मतलब? - शैलेन्द्र कुमार साधु / 97

पुरुखन के कोठार से
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 14
- राधा मोहन चौबे "अंजन" जी के कविता /15

आलेख/निबंध
- बेटा के नइहर में घर के गूर - भगवती प्रसाद द्विवेदी / 8
- भोजपुरी के पहिल कवि ईसानचन्द - प्रो.(डॉ.)जयकान्त सिह 'जय' / 11
- महेश्वराचार्य के आलोचना साहित्य - डॉ ब्रजभूषण मिश्र / 17
- भोजपुरी : स्मृति आ समकाल क मैजिक-डॉ रविद्र नाथ श्रीवास्तव "परिचय दास"/24
- 102 बरिस के हो गइनी भोजपुरी के बेजोड़ लोकगायक ...... -मनोज भावुक / 39
- चक्र - योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी / 82

संस्मरण
- समबन्ध के सम्बोधन - मनोज कुमार वर्मा / 78

कहाउति
- भुलात कहाउति - -माया शर्मा / 80

हँसी-ठिठोली- निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 84

सतमेझरा- 1-3, 5,85,103-108

भोजपुरी के ताकत गुगल पहिचान लिहलस, रउआ कब पहिचानब..?

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

भोजपुरी भाषाभाषी लोग खातिर ई बहुते खुशी के बात बा कि सर्च इंजन (गूगल) अन्य कई भाषा की तरह भोजपुरी में भी ट्रांसलेट करे के निर्णय लिहले बा। देर सबेर भोजपुरी भाषा के ताकत गूगल पहिचान लिहलस। ई एगो बड़हन उपलब्धि बा, ए से आठवीं अनुसूची में शामिल होखेवाला रास्ता खुली।

जब भोजपुरी लिखे- बोलेवालन के प्रभाव, विश्व स्तर पर बढ़ रहल बा, अइसे में सर्च इंजन गूगल जदि ट्रांसलेट की सीरीज में भोजपुरी भाषा के भी शामिल कइले बा त भोजपुरिया लोग खातिर ई बहुते खुशी के समाचार बा। अपनी भाषा खातिर ई एगो शुभ समहुत कहल जाई। ए उपलब्धि में भोजपुरी क्षेत्र के युवा साफ़्टवेयर इंजीनियर भाई- बन्धु लोग के भी अथक परिश्रम आ अतुल्य योगदान बा जे देश में आ देश के बाहर गूगल कम्पनी खातिर काम करत बा। उहाँ सभे के करोड़ों भोजपुरिया लोग के असिरबाद ज़रूर पहुँची।

जब कवनो भाषा बड़हन रूप लेवे लागेला त ओकर परभाव भी बहुते व्यापी होखे लागेगा। अब भोजपुरी के व्यापक रूप के देखत, एह भाषा के भाषाई चेतना पर भी ध्यान दिहल जरूरी हो गइल बा। भोजपुरी के सम्मान लोक के सम्मान हऽ, लोक संस्कृति के सम्मान हऽ। ई भाषा बहुते सहज, सरल आ सरस बा।जेकर आपन साहित्य, काव्य, लोकपरम्परा के गीत, आदि मजिगर विरासत जोगावल बा।

बाकी तबो अश्लीलता के चुरइल भोजपुरी भाषा के आँचर छोड़त नइखे। केतना समझावल जाउ कि कवनो भाषा अश्लील ना होले, बल्कि वो भाषा में परोसल जा रहल विषयवस्तु के अश्लील कहल जा सकेला। बाकी आपन भोजपुरी माई त अपने जामल कुलबोरन लोग के कुकृत्य के दाग अपनी माथे ढो रहल बाड़ी। ए बात से केहू इनकार नइखे कर सकत कि कुछलोग अब्बो अइसन धनपिचास बा जे औरत के रूप सौन्दर्य आ मान मर्दन के आपन मर्दानगी बना के गीत संगीत के माध्यम से परोस के पइसा कमाता। अब भोजपुरी खातिर त कवनो सेंसर बोर्ड बा ना, एही से ए भोजपुरिया बुड़वन के अश्लील विषय, यूट्यूब आ मंच आदि के माध्यम से दर्शकदीर्घा में पहुँचावल जा रहल बा। द्विअर्थी संवाद, गीत के देखे- सुनेवाला लोगो मिलियन में बा, जे से एह लोग के मोटहन कमाई हो जाला, त ई लोग बेर बेर इहे कुल्हि परोसेला। नकली नोट असली नोट के परचलन से बाहर क देला, उ भोजपुरी के जानलेवा जिन्न, सुघर गीत संगीत के अपने घर में परदेशी बना दिहें सन।

ई भोजपुरी के कैंसर जइसन लाइलाज बीमारी बुझाता, एह विषय पर गम्भीर विचार विमर्श होखे के चाहीं। भाषा के पहरुआ, भोजपुरी खातिर संगठित तमाम संस्था, संगठन,देश विदेश में रहेवाला भोजपुरिया भाई बन्धु सबसे निहोरा बा कि एकजुट होके, एगो अभियान अश्लीलता के खिलाफ चला के भोजपुरी भाषा पर लागल कलंक छोड़ा देवे के ताकि वैश्विक स्तर पर अपनी भोजपुरी भाषा के लिलार चमकत रहो, केहू अंगूरी ना उठा सके।

भोजपुरी के ताकत गूगल पहिचान लिहलस,रउआ कब पहिचानब..? भाषा अपना समाज आ संस्कृति के अटूट हिस्सा होले, भाषा एगो आइना नू ह जी। जे में व्यक्ति आ समाज के सोच आ संस्कार के झलक लउकेला.....

अन्त में उहे पुरनका नेह छोह के भरोसे सिरिजन के ई सतरहवाँ अंक रउआ सोझा परोसल जा रहल बा। एह अंक के विषय में भी रउरी प्रतिक्रिया आ सुझाव के इन्तजार रही।

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

भोजपुरी भाषा के आत्मा गीत-गवनई में बसेला । ओ आत्मा के मुआवे-मेंटावे के बेवस्था भोजपुरी के तथाकथित स्वनामधन्य स्टार गायकलोग आ म्यूजिक कम्पनिन के साँठगाँठ से लगातार जारी बा । एम्मे दोसिहा खाली उहे लोग रहित त एकहक गवइया के चालीस- पचास लाख भिउअर (देखनिहार), फालोवर (लगुआ-भगुआ/पिछलग्गू) भा लाइकर (प्रशंसक/खुशामदी) ना रहितें। ए कुसंस्कारिन के एतना भिउअर (देखनिहार), फालोवर (लगुआ-भगुआ/पिछलग्गू) भा लाइकर (प्रशंसक/खुशामदी) बिदेसी भा गैर भोजपुरीभाषी लोग त नाहिए ह। ई सबलोग भोजपुरिया ह आ जाने- अनजाने ए लोग के लाखन- करोड़न रुपया हर महीना दे रहल बा । कचरा गीत-संगीत पर मिलल राउर रुपया ए लोग के मरजादाहीन बना दिहले बा। राउरे रुपया "फुहरपन बन्द करावेवाली" रउरी आवाज के दबा देबे में भरपूर सहजोग करता ।

रउआँ सही में भोजपुरी गीतन से फुहरपन मेंटावे चाहतानीं त "जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" के निहोरा मानीं आ कहीं रउरा केहू का पेज भा यूट्यूब चैनल पर फूहर गीत मिलता त चार गो काम करीं:-

१) चैनल भा पेज पर फूहर गीतन के डिस्लाइक(नापसंद) करीं।

२) रिपोर्ट करीं।

३) पेज आ यूट्यूब चैनल के अनफालो करीं।

४) पेज आ चैनल के ब्लाक करीं।

भोजपुरी गीत-गवनई के मान सम्मान बचावे आ पुराना गौरव वापिस ले आवे खातिर ऊपर लिखल काम जरूरी हो गइल बा।

भोजपुरी हमार ह, राउर ह आ सबसे बढ़ि के हमरी आ रउरी पुरुखन के थाती ह। एक्के हमनीं धनलोलुप लोगन का भरोसे ना छोड़ल जाई। बिना कवनो भेदभाव के आजुए से ई काम सुरू क दिहल जाउ आ हर भोजपुरिया अपना दस गो इयार दोस्त से ऊपर लिखल काम जरूर करावे। कुछुए दिन में परिणाम सामने आई।

निवेदक-

प्रधान सम्पादक,

सिरिजन

(जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया)

आपन माटी-आपन थाती

जूलाई-सितम्बर 22 के अंक "सिरिजन" के पाँचवाँ बरिस के पहिलका अंक ह। सुने में केतना नीमन लागता कि "सिरिजन" सफलता पूर्वक अपना सफर के चार बरिस पूरा क लिहलस । आँखी के सोझा 29 जूलाई 2018 के ऊ तारीख घूम जाता जब हमनीके आपन आधा-अधूरा समझ के साथे एह ई-पत्रिका के लोकार्पण कइले रहीं जा, कुछ साहित्य प्रेमी अउरी सुधि पाठक समाज के सोझा, समहृत अंक के कवर पेज सबके सोझा राखल गइल रहे। तब से आजतक सबसे बड़का चुनौती पत्रिका के निरंतरता के कायम राखल रहे, एह सफर में कुछ लोग असमय सहयोग के हाँथ खींच लिहल, कूछ लोग साथ छोड़ दिहल, बहुते उतार चढ़ाव के बीच हमनिके एके कायम राखे में सफल रहनी जा। आज जब बीतल 48 महीना के बारे में सोचतानी त खुशी के सैलाब उमड़ आवता। "सिरिजन" से हमके ब्यक्तिगत रूप से सम्मान, पहिचान अउरी बिकट परिस्थिति में भी रास्ता निकाले के जज्बा सौगात में मिलल बा । एह कम समय में पत्रिका जेकरा हाथे गइल ऊहे सराहल । पत्रिका के सहयोग खातिर देश भर से भोजपुरिया समाज के कलमकार से ले के आम पाठक, तकनीकी जानकार लोग आगे आइल, सभे खुशी खुशी आपन आशीष के हाथ सिरिजन के माथे रखलस। ओकरा खातिर सिरिजन दल द्वारा रउरा सभे के नाँव लिहल त मोनासिब नइखे बाकी माथ नवा के कर जोर के नमन कर रहल बा, आभार जना रहल बा । राउर सहयोग के बिना ई सफर कहाँ सम्भव रहे ।

अगर पत्रिका समय पर पाठक के सोझा पहूँच पावता त एमे राउर बहुत बड़ भूमिका बा, रचनात्मक सहयोग बा, पाठक के अपना माईभासा में साहित्य पढ़े पढावे के लालसा बा, ओहि के हुरपेटला से ही नियत समय पर पत्रिका के प्रकाशन हो रहल बा। राउर सराहना पा के ही हमनीके हौंसला के पाँख मिलेला आ उड़ान भरे के ऊर्जा भी, पत्रिका पर रउरा सब के प्रतिक्रिया हमनी खातिर ऊर्जा अउर आशीर्वाद के काम करेला। रउरा नजर से हमनी के खुद के तरासिले जा। रउरा सभे के सहयोग आ साथ ही हमनीके असली ताकत बा, पूँजी बा।

पत्रिका के रुपया-पइसा ना बलुक टीम सिरिजन के हौंसला चला रहल बा । जिद्द अउरी जुनून चला रहल बा। जवना दिन पत्रिका शुरू भइल रहे ओह्ू दिन हमनीके लगे खाली जिद्द अउरी जुनून ही रहे, आजुवो हमनीके जिद्द अउरी जुनून के ही अपना हिया में जिया के रखले बानी जा, समय के साथे ई अउरी पोढ़ हो रहल बा । एह

उतजोग से कुछ पावे के आस नइखे बल्कि समर्पण के भावना बा, माईभासा से लगाव ही कर्म करे खातिर उकसा रहल बा टीम सिरिजन के। साँच मन से लोग जुड़ रहल बाण, माईभासा के बढ़न्ती के यज्ञ में सभे आपन हिस्सा के सहयोग रूपी आहुति दे रहल बा, सभकर धन्यवाद बा सभकर आभार बा।

आवे वाला तिमाही में जेठ के गरमी से उजबुजाइल धरती पोस-परानी के सोझा बरिखा के आगमन के संदेश लेके आ रहल बा । गरमी से तवाँत वसुंधरा के नन्ही-नन्ही बरीखा के बूंद से अभिषेक करत आषाढ़ के आगमन के साथे ही प्रकृति के रंग बदले के शुरूआत हो जाला। फेड़ रुख खेत बघार सब हरियरा जाले, प्रकृति मुस्कुराए लागेली। एहि महीना में गरमी में बंद भइल इस्कूल खुल जालनि आ खुल जाला खेत भी। कहे के मतलब ई कि महीनन से बंद भइल खेती-बारी के कामों एही महीना से शुरू हो जाला। बदरी से बरिसत बौछार में भींजत खेतिहर धान के रोपे शुरू क देलें। श्रम गीत के अनुगूंज से खेत-बघार गुलजार हो जाला। प्रेम मार्गी सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी के प्रसिद्ध बारहमासा ईयाद आवता -'चढ़ा असाढ़, गगन घन गाजा, साजा बिरह दुंद दल बाजा।'

आसाढ़े से चउमास के शुरुआत हो जाला। बरसात के एह चार महीनन में मांगलिक काम के मनाही रहेला।

पहिले परब तेवहार उल्लास अउरी ऊर्जा के साथे आवत रहलन स आ खुशी अउरी गर्मजोशी के साथे एकर बिदाई होखे। अब उ परब तेवहार खाली कथा कहानी के हिस्सा बनी के रह गइल बाण स। कुछ लोग बा जे आजुवो ओके जोगा के रखले बा।

सावन महीना में शुक्ल पक्ष तृतीया के एगो तेव्हार परेला जेके हरियाली तीज कहल जाला, ई उत्सव माई बहिन लोग के उत्सव ह। सावन में जब प्रकृति हरियर चादर ओढ़ के हँसत बिहँसत झूमत लउकेले त मन मयूर क नाचल लाजमी बा, ससुरइतिन बेटी बहिन फुवा के ईयाद करे के उत्सव ह ई, नइहर से श्रृंगार के समान के साथ मिठाई पाहुर आवेला, ओहि के पहिन के उत्सव मनावे के रीत चलल आ रहल बा अपना समाज मे । फेड़ के डहंग पर झुलुआ बन्हा जाला, हँसी ठिठोली करत गीत गाके झुलुआ झूले के परिपाटी ह अपना समाज मे। समय के मार इहो तेव्हार पर परल बा, अब झुलुआ कमे देखे के भेटात बा।

सावन महीना में शुक्ल पक्ष तृतीया के एगो तेव्हार परेला जेके हरियाली तीज कहल जाला, ई उत्सव माई बहिन लोग के उत्सव ह। सावन में जब प्रकृति हरियर चादर ओढ़ के हँसत बिहँसत झूमत लउकेले त मन मयूर क नाचल लाजमी बा, ससुरइतिन बेटी बहिन फुवा के ईयाद करे के उत्सव ह ई, नइहर से श्रृंगार के समान के साथ मिठाई पाहुर आवेला, ओहि के पहिन के उत्सव मनावे के रीत चलल आ रहल बा अपना समाज मे । फेड़ के डहंग पर झुलुआ बन्हा जाला, हँसी ठिठोली करत गीत गाके झुलुआ झूले के परिपाटी ह अपना समाज मे। समय के मार इहो तेव्हार पर परल बा, अब झुलुआ कमे देखे के भेटात बा।

सावन महीना में पूर्णिमा के दिन आकाश में चाँद जब अपना पूरा स्वरूप के साथे दर्शन देलन त अपना देश मे रक्षाबंधन के तेवहार के आगाज होला, भाई बहिन के प्रेम अउरी कर्तब्य के समर्पित रहेलन ई चाँद । ई भाई बहिन के पावन रिसता के मजबूती अउरी भावनात्मक रूप से पोढ़ करेला। कन्या पूजा करेवाला आपन देश मे कूछ भाई लोग के कलाई सुने रह जाला काहे कि उनकर माई बाबू उनकर बहिन के दुनियाँ में आवही ना दिहलन जा, कन्या भ्रूण हत्या के जघन्य अपराध एकर कारण बा भा एगो संतान के धारणा। हर रिश्ता जरूरी बा जिनगी के खुशहाल राखे खातिर ।

भादो महीना के कृष्ण पक्ष के कृष्ण जी एह धरती पर अवतार ले ले रहनी उहाँ के जन्मदिन के जन्माष्टमी के रूप में मनावेला देश दुनिया में फइलल सनातन धर्म के माने वाला लोग । गीता में एक जगह कृष्ण जी कहतानी “जब-जब धर्म के हानि अउरी अधर्म बढ़ी, तब-तब हम जन्म लेब”। बुराई केतनो बड़ियार काहे ना होखे ओके एक न एक दिन हारही के परेला। जन्माष्टमी के परब, गीता के एह बात के पुष्टि करेला । परव के माध्यम से निरंतर काल तक सनातन धर्म के आवे वाली पीढ़ी अपना आराध्य के गुणन के जान सकी अउरी उनकर देखावल रस्ता पर चले के कोशिश करी।

स्वतन्त्रता दिवस के ईयाद करे के पावन तारीख भी इहे तिमाही में आई, ई हमनीके ईयाद दियावेला कि देश के आजादी खातिर आपन सुख सुविधा अउरी आपन जिनिगी के कुरबानी देवे वाला ओह शहीदन के शहादत अउरी इतिहास के भूलइलो भुलाए के नइखे। केतना साहस रहे, आपन जान के बाजी लगा के देश के आजाद करेवालन शहीदन में, आज 75 साल बादो ना हम जान पवनी ना रउवा, ऊ त इतिहास बन गइलन जा बाकी रह गइल ओहन लोग के वीरता के कहानी जवन आज भी रूह कंपा देला, मरल देश भक्ति के जगा देला, स्वतंत्रता के अहमियत के बता देला।अगर हमनीके के छिटाइल रहल जाई, जाति राज्य धर्म बड़ छोट में बटाइल रहल जाई, त स्वतन्त्रता खातिर आपन प्राण देवे वाला के साथे धोखा हो जाई । आज भले हमनीके गोरन के हुकूमत से आजाद हो गइनी जा लेकिन आपन देश के भ्रष्टाचार, जमाखोरी, कलाबजारी, भाई भतीजावाद, दहेज प्रथा, बेरोजगारी, घरेलू हिसा, कन्या भ्रूण हत्या, अशिक्षा आदि जइसन बेमारियन से आजादी मिलल बाकी बा। एह खातिर साँच मन से प्रयास कइल जरूरी बा। कुल काम सरकारे ना करी, कुछ काम हमनियो के करे के परी।

कुवार महिना के कृष्ण पक्ष के अष्टमी के दिन एगो अउरी तेव्हार दस्तक देला जेके देश जीवित्पुत्रिका व्रत, जितिया व्रत, जीमूतवाहन व्रत आदि अलग अलग नाव से भले जानत होखे, लेकिन आपन भोजपुरिया बघार में एके जिउतिया के नाव से पहिचानल जाला, जीवित सन्तान के लमहर निरोग उमिर के कामना के साथे उमिर के कवनो पड़ाव पर पहुँचल माई बिना कवनो दबाव के निर्जला व्रत राखेले। जबसे गाँव से नाता टूटे लागल घर के संख्या कम आ मकान के संख्या बढ़े लागल तब से एह परब पर भी गरहन लागे लागल। शहर भले एके भुलात जाता लेकिन गाँव आजुवो अपना सभ्यता संस्कृति रित-रिवाज के बचा के रखले बा। शहर में रहत सन्तान खातिर आजुवो गाँव मे माई कवनो चकवड़ के झुर हिला के कहेले... ए अरियार ..... का बरियार .... जाके रामजी से कह दिह.. फलाना के माई जिउतिया भूखल बाड़ी। जिउतिया के पारन पर बने वाली दाल के सुवाद आजुवो जेहन में सुरक्षित बा। छप्पन भोग भी फीका बा एकरा सोझा, बहत्तर रंग के मसाला से भी ऊ सुवाद ना भेटाला जवन अम्मा के हाँथ के बनावल दाल में भेटात रहे। शायद माई के साँच मन से कइल अनुष्ठान के चलते रहे ऊ सुवाद। चटकार दाल के नाव सुनते मूँह में पानी आ जात रहे आ अब आँखि में लोर आ जाला।

पाँचवाँ बरिस के आगाज पर सब पाठक, कलमकार, तकनीकी सहयोगी, प्रचारक, शुभचितक अउरी संगी साथी लोग के हिया से बधाई । आगे के रास्ता कठिन जरूर बा लेकिन जइसे अब तक के सफर तय कइनी जा ओइसही, जब तक रवुरा सभे के आशीष के हाथ सिरिजन के माथ पर बनल रही, आगे के भी सफर चलत रही । थाके के नइखे रुके के नइखे ।

राऊर आपन,

तारकेश्वर राय

उप सम्पादक, सिरिजन

आजु रोज कवनो-ना-कवनो भाषा मू रहल बिया, बाकिर भोजपुरी अपना लालित्य आ लोकसंवेदना के बदउलत लगातार जियतार बनल फइलल-पसरल जा रहल बिया। ओइसे त वाचिक परंपरा में एकर लोकसाहित्य हजारन बरिस से चरचा में रहल बा, बाकिर देश के आजादी का संगहीं एकरा निबंध-लेखन के समहुत भइल आ आचार्य महेन्द्र शास्त्री के 'पानी' शीर्षक से 'भोजपुरी ' में छपल ललित निबंध एकरा उठान के सूचक बनल। ओह में पानी के बहाना से सेहत, सफाई, चिकित्सा, प्रदूषण पर बड़ा बेबाकी से सवाल उठावल गइल रहे। बाकिर आजुओ पानी के मोल कहाँ बूझल जाला। एकरा महातमे से निबंध के शुरुआत भइल रहे- 'पानी के मोल ना समुझल जाला। ई ना रहित तब बुझाइत। पानी छुअला बिना कामो चली त पियला बिना खराई होखे लागी। कंठ सूखे लागी, जान जाए लागी।'

निबंध का आखिर में लालित्य से भरल पाँती खास तौर से अखियान करे जोग बाड़ी स- 'भादो के दही कादो' मशहूर ह। कवि कालिदास के सबसे बढ़िया कविता 'मेघदूत' मेघ के ही दूत बनाके तैयार भइल।विश्व कवि रवि बाबू ओहीं ते राह ताकसु जइसे कामी अपना कामिनी के। पानी से तीर्थ, पानी से प्रतिष्ठा। पानी पर पोथा लिखा सकेला। पानी ना रहे त जिन्दगानी कवना काम के! जेकरा आँख में पानी ना, उहो कवनो आदमी ह?'

एह पानीदार निबंध का बाद भोजपुरी के पहिल निबंध-संग्रह आइल डॉ विवेकी राय के **'के कहल चुनरी रंगा ल'** शीर्षक से, जवना में गँवई जिनिगी के जीवंत छटा देखते बनत रहे। रबी के फसिल कटइला पर बोझा ढोवत बनिहारिन के एगो दृश्य देखीं शीर्षक निबंध में- 'राहे-राहे रासलीला, खेते-खेते वृन्दावन--ई फागुन के महीना, ई खेत, ई खरिहान, ई कटिया, ई धूप, ई बसंती चोली, ई गुलाबी चुनरी, मस्त चाल--अजी, धनिया से के कहल कि अब चुनरी रंगा ल!'

गजब के लालित्य बा एह निबंध में। अइसन जनात बा जइसे सँउसे गाँव, खेत-खरिहान आउर उहवाँ के हलचल जियतार हो उठल होखे- 'अइसन जनात बा कि इहवें जमुना क किनारा बा, इहवें कन्हैया क बंशी बाजति बा। इहवें कुंज-गली क छेड़छाड़ होति बा।खेत में कृष्ण बाड़न, खेत में राधा। कहाँ से ई शोभा आइल? खेते में जिनिगी आ खेते में जवानी। बनिहारिन लोगन से के कहल कि बोझा माथ प उठाके जमुनापारी पाड़ी नियर माकत चल जा। के कहल कि चमक-चमक के, झमक-झमक के, उचकि-उचकिके, लपकि-लपकिके, देहि भाँजत, गेना नियर उछलत चउए पर चल जा!'

जवना उठान से भोजपुरी निबंध के नींव रखाइल, ओह के गौरव-स्तंभ बनावे में जवना विभूतियन के यादगार अवदान रहल, ओह कड़ी में एगो समर्पित नाँव बा पुन्नश्लोक अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी के।हालाँकि उहाँके मूलत: आ सुभावत: कवि रहनीं आ स्फुट काव्य, खंडकाव्य, प्रबंधकाव्य, गीत, ग़ज़ल, बरवै वगैरह में उहाँके इतिहास रचले रहनीं। बाकिर इहो बात सोरहो आना साँच बुझात बा कि कवियो खातिर कसौटी के पैमाना गद्ये रहल बा- 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।'

गद्य में त विद्यार्थी जी के सिरिजना बेजोड़ रहे। उहाँ के बतकहिओ अतना सरस, धाराप्रवाह, नानार्थक आउर अखियान करे जोग होत रहे कि सुननिहार लोग अभिभूत हो जात रहे। लोकचेतना जगावेवाला कालजयी रचनाकार भिखारी ठाकुर उहाँ के नस-नस आ साँस-साँस में रमल रहनीं। उहाँ के बतकहिए नियर जियतार आ वैचारिक पोढ़ता से लैस होत रहे उहाँके गद्य। 'डागा बाजि गइल' के कथाकार विद्यार्थी जी के अविस्मरणीय निबंध रहे 'बेटा के नइहर', जवन भोजपुरी निबंध संकलन 'भोजपुरी निबंध निकुंज' (संपादक: डॉ विवेकी राय, सिपाही सिह श्रीमंत) में ससम्मान

संकलित होके शोहरत पवले रहे। फेरु त पुस्तिको का रूप में ओकर प्रकाशन भइल रहे। आगा चलिके 1987 में निबंध-संग्रह 'घर के गूर ' में कुल्हि नौ गो निबंध संग्रहीत कइल गइल, जवना में 'बेटा के नइहर' आ 'घर के गूर' शीर्षक ललित निबंधन का संगहीं 'भोजपुरी काहें खातिर', 'भोजपुरी भाव के रछपाल', 'भोजपुरी के हबेख: तुलसीदास का हाथे' नियर भाषा-साहित्य से जुड़ल विचारपरक निबंधो शामिल बाड़न स। 'अपनइती', 'खंड़हर बचाईं', 'जूझ जहालत से',

'नीनि नइखे परत' शीर्षक से छपल निबंधो चितन-लालित्य से लबरेज़ बाड़न स।

अपना निबंधन का बिसे में अविनाश जी के कहनाम रहे- 'हम कउड़ी में कसीदा काटे के ना,अपना हाथ से मोटिया बीने के कोसिस कइले बानीं। मोटिया रूखर-आखर होला सही के, बाकी जाड़ा-पाला में कुछ काम के होखेला ओकरा जे गाँव-गिरान में जांगर चलाके अनकर-आपन मुँह के आहार उपराजेला।'

'घर के गूर ' शीर्षक विद्यार्थी जी मातृभाषा खातिर इस्तेमाल कइले बानीं। एह से जुड़ल एगो प्रसंगो के चरचा बा, जब भिखारी ठाकुर बंगाल के एगो जलसा में उहाँ के जन-जन में अपना मातृभाषा खातिर अजगुत नेह-छोह देखिके कहले रहनीं-

देखन के जलसा ललसा कर
मातृभाषा घर के गूर है।

तबे नू निबंधकार घर के गूर के बखान करत कहले बा- 'हँ, त घर के गूर के माने-मतलब तनी पसन से बूझि लेबे के चाहीं। पर-पाहुन एक-प-एक दुआर प आ गइलन। बेरा-कुबेरा केहू राही-बटोही हकासल-पिआसल पहुँचल। ओह घरी पत-पानी रचनिहार घर के गूर से बढ़िके दोसर कुछ ना होखे। आटा, घीव, दूध, दही सभ का साथे मिलिके गूर से जवन परकार चाहीं, तेयार कइ सकीला। सोचीं सभे, बिना गूर के छूँछे पिसान कि घीव ईजति बचाई? दूधो-दही बेगर मीठा डलले सरबत बनी? सोगहग गूर के भेली आ भर लोटा टटके घींचल कुइआँ का जलो से जवन कंठ जुड़ाँव होला तवन बरफ का सरबतो से ना। ओह में गूर जो अपना घर के उपराजल होखे त का पूछे के! घर के गूर खरचे में इचिको आहस ना लागे।'

चितनशील रचनाकार विद्यार्थी जी घर के गूर से मातृभाषा से जोड़त साफ-साफ कहत बानीं-

'भले तनी खटतुरुस लागे, बाकी गूर चीनी से पवीतर आ सेहतमंद ह। ऊहे हाल मातृभाषा के बूझीं। अटपट चाहे सोझ बात में लइका-सेयान-बूढ़, निपढ़-पढ़निहार सभे जेकरा के हरदम हबेखल करे। ऊहे नू असली धन ह, जवना के भंड़ार कबो ना खलिहाय, ना जेकरा के खरचला में कवनो आहसे होला।'

भोजपुरी के अमरलत्ती-अस फइले-पसरे के आस-बिसवास का संगे निबंध के समापन होत बा- 'तथाकथित 'शिक्षित समुदाय' चाहे सहरी सभ्यता में सनाइल अपना संस्कृति के भोर डलनिहार लोगन के बस चलित त भोजपुरी साहित्य के सिरिजन ना होखे पाइत। भरोसा एके बा जे गाँव-गँवई का भाग का साथे भोजपुरियो के भाग एक-ना-एक दिन जागि के रही। कोटि-कोटि जगे का कंठ आ काम के सह पाके ई अमरलत्ती दिनो-दिन पसरते जाई।'

विद्यार्थी जी के निबंधन में भाव के अनूठापन मौजूद बा आ रस के परिपाक एह किसिम से होता कि पढ़निहार ओमें डूबि के सोचे बदे अलचार हो जात बा। एह माने में उहाँके निबंधन पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के ई कथन सइ फीसद सही जनात बा-

जा में रस कछु होत है,
ताहि पढ़त सब कोय,
भाव अनूठो चाहिए,
भाषा काहू होय।

अइसने बेशकीमती भाव आ करुन रस में सनाइल निबंध बा- 'बेटा के नइहर', जवना में आजु के शहरी जिनिगी के कशमकश आ रोजी-रोटी खातिर शहर-दर-शहर छिछिआत परदेसी पूत के आँतर के पीर कचोटत रहि जात बा। अइसन कमासुत बेटा खातिर आपन गाँव नइहर बनि जात बा, बाकिर अइसन नइहर कि गाँव-गँवई के अपने लोग ओकरा खातिर बेगाना हो जात बा। निबंधकार के मन में बेरोजगारी के मुद्दा जरि जमवले बा। एगो बानगी देखीं- 'कवनो ना कवनो तरे लइकी के वर त खोजि लिआता, बाकी लइका के नोकरी ढूँढ़त-ढूँढ़त छरपट छूटि जाता।क्षीरसागर के अनंत भगवान भलहीं थरिए में भेंटा जासु, बाकी चाकरी के चनरमा खातिर बेकार नवहिन के सँउसे अकास-पताल छाने के परता।'

बहरवाँसू बेटा के कइसे गँवई लोग अपना बिरादरी से बहारि देत बा, एकर एगो झांकी देखीं- 'फेमिली लेके जवन पूत बहरा गइलें, ऊ सचहूँ बहरा गइलें, कम-से-कम अपना गाँव से। अब उनुकर अड़ान परदेसे के ठहर-ठेकान में बा। गाँव के लोग उनुका के अपना में नइखे गनत। तबे त कबो काल छुट्टी-छपाटी में गाँवें अइला पर संछेपे में साहब-सलामत का बाद नोकरिहा से निठुरी मुँहें केहू ना केहू पूछिए देता-कब ले जाए के होखी?'

'बेटा के नइहर' में बेटी का संगें बेटा के अइसन तुलनात्मक आ काव्यात्मक विवेचन कइल गइल बा कि पाठक भावविभोर भइला बेगर ना रहि सके । बहरवाँसू बेटा के दयनीयता के चित्र उकेरत निबंधकार के निष्कर्ष बा- 'ससुरइतिनि बेटी खातिर गाँव अबहीं ले किछु रसम-रेवाज रखले बा,बाकी बहवाँसू बेटा के सामाजिक पूछ नइखे।'

नगर-महानगर में चाकरी के चक्की में पिसात नवही के बेचारगी के ऐनक बा 'बेटा के नइहर',जवना में नोकरिहा अपना गाँव से

परंपरा से स्मृतियन के मार्फत जुड़ल चाहेला आ ओकर आँतर भितरे-भीतर घवाहिल होके रहि जाला। एह से उजड़त गाँवन के फेरु से हरियरावे आ शहर-गाँव में 63 के नेह-नाता बनावे के परी। जरूरत बा त बस अतने जे सहरइतिनि जिनिगी का जवरे गाँउझ नाता लगावल जाउ, दूनों में छत्तिस के ना, तिरिसठ के मेल बइठावल जाउ, ठीक ओइसहीं जइसे ससुरइतिनि बेटी का दूनों बाँहि का भीतर नइहर-सासुर के नेह समेटल रहेला।'

जवना पोढ़ता से भोजपुरी निबंध के शुरुआत भइल रहे, ओह परिपाटी के पुन्नश्लोक अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी ना खाली आगा बढ़वले बानीं, बलुक कथ-शिल्प-संवेदना के दिसाईं नवकी पीढ़ी आ दीगर भाषा के रचनिहारन के ऐनको देखवले बानीं। उहाँ के भाषा टकसाली बा आ भोजपुरी के खाँटी शब्द, लोकोक्ति, मुहावरा आउर बिबधर्मी काव्यात्मक उक्तियन के जियतार इस्तेमाल उहाँ के निबंधन के खास बनावत बा। गाँव, लोकसंस्कृति आउर लोकभाषा खातिर उहाँ के समरपन जगहा-जगहा झलकत बा। एगो यशस्वी कवि के ई कालजयी निबंध पढ़निहारन के दिल के उदबेगत, आन्दोलित आउर झंकृत करत आ रहल बाड़न स। इन्हनीं के जतना बेरि पढ़ल-गुनल जाई, हरेक हाली नया-नया अरथ खुलत जाई। इहे नव्यता एह निबंधन के बेशकीमती बनावत बा।

इन्हनीं के पुनर्पाठ जरूरी बा। विद्यार्थिए जी के शब्द में- 'आन ठहर अपना पुरखा-पुरनियाँ का नाँव के सुमिरनी बनावल जाला, बाकी हमनीं किहाँ पुजनउग पुरखन का कीरति-कथा के कवनो खोजे-खबर नइखे लिआत।'

आखिर कब होई एह दिसाईं सकारात्मक आ रचनात्मक उतजोग?

भगवती प्रसाद द्विवेदी
पटना (बिहार)

भोजपुरी के पहिल कवि ईसानचन्द

जब पूरबी बोली भोजपुरी का साहित्यन के अध्ययन के सिलसिला चलल त एकरा पुरान साहित्यिक परम्परा आ ओकरा भासिक रूपन के पड़ताल होखे लागल। पहिले बिद्वान अध्येता लोग भोजपुरी भासी क्षेत्र के निरगुन भक्ति धारा का ज्ञानाश्रयी साखा के संतकवि कबीर दास का साखी, सबद आ रमैनी के भासाई नजरिया से अध्ययन करके उनका के भोजपुरी के आदि कवि बतावल। फेर कुछ पीछे नजर दउड़ावल लोग त नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु गोरखनाथ आ उनका चेला लोग जइसे - भरथरी, गोपीचंद आदि का पदन में पच्छिम आ उत्तरी भोजपुरी के भासिक तत्वन के आधार पर भोजपुरी काव्य साहित्य के सीमा - बिस्तार दसवीं - एगारहवीं सदी के नाथ सम्प्रदाय का एह जोगी लोग के पदन तक बढ़ावल लोग।

फेर जब संतकवि कबीर दास आ नाथ सम्प्रदाय के गुरु गोरखनाथ आदि का पदन का कई दार्शनिक, आध्यात्मिक, यौगिक आ सांस्कृतिक अनुभूतियन का सङ्गे - सङ्गे भोजपुरी क्षेत्र के बेवहार में आवे वाला संज्ञा, सर्वनाम, बिसेसन, क्रिया, उपसर्ग, प्रत्यय, बिभक्ति, परसर्ग आदि भोजपुरी का भासिक तत्वन के दरसन बौद्ध पंथ का बज्रयानी शाखा के आचार्य कवि सरहपाद, सबरपाद, भुसुकपाद आदि के दोहा आ चर्यापदन में पा के भोजपुरी काव्य साहित्य के प्रारंभिक काल आठवीं- नउवीं सदी तक खींच ले गइल।

एही तरह से पूरबी बोली - भोजपुरी के भासिक आ साहित्यिक बिकास के अध्ययन के क्रम सातवीं सदी का दूगो आउर कवियन के नाम चर्चा में आइल । जवना में एगो भाखा के कवि बाड़न ईसानचंद आ दोसर बरननकवि (वर्णकवि) बेनी भारत मतलब बेनी कवि। 'भाखा' भोजपुरी में भासा के सामान्य उचरित संज्ञा रहल बा।

आचार्य हवलदार त्रिपाठी ' सहृदय ' अपना पुस्तक ' भोजपुरी भासा आ साहित्य के उद्भव आउर विकास ' में उलेख कइले बाड़न कि

महाकवि बाणभट्ट (जे खुद भोजपुर क्षेत्र के रहस)

अपना ' हर्षचरितम् ' में अपना मित्र - मंडली के दू जवारी कवि इसानचंद आ बेनी भारत (बेनी कवि) के चर्चा कइले बाड़न। ऊ इसानचंद के भाखा कवि आ बेनी भारत के बरननकवि कहले बाड़न। (पन्ना -१३) । ओह समय में बरननकवि (वर्णकवि) राज दरबारी कवि लोग के कहल जात रहे जे अपना आश्रयदाता के अस्तुति आ गौरव - गाथा गाके उनका मान - स्वाभिमान बरनन करत रहलें। ऊ लोग भाँट भा चारन कवि कहात रहे। बेनी भारत बरननकवि रहलें। जे अपना बोली - भाखा में समय आ समाज का एक - एक पक्ष पर आपन भाव - विचार कविता के जरिए राखत रहे ओकरा के भाखाकवि कहल जात रहे। अपना बोली - भाखा में किसिम - किसिम के कविता लिखे वाला भाखाकवि रहले ईसानचंद।

आचार्य शिवपूजन सहाय के अनुसार " हर्षचरितम् के महाकवि बाणभट्ट के बारे में बतावल जाला कि ऊ भोजपुर

(साहाबाद जिला) जिला में, सोन नदी के पच्छिम छोर पर, बसल 'प्रीतकूट' गाँव के रहे वाला, सम्राट हर्षवर्धन (६०६-६४८ ई.) के समकालीन रहलें। (हिन्दी साहित्य और बिहार - संपादक - श्री शिवपूजन, प्रथम खंड, पन्ना - १)। बाणभट्ट ' हर्षचरितम् ' के प्रथम उच्छ्वास में ईसानचंद के आपन मित्र बतावत लिखले बाड़न - ' भाषाकविरीशान: परंमित्रम्। ' (हिन्दी साहित्य और बिहार, प्रथम उच्छ्वास - सं. श्री शिवपूजन सहाय, पन्ना -१)। एह आधार पर बिद्वान लोग ईसानचंद के गाँव बाणभट्ट के गाँव भोजपुर जिला के प्रीतकूट भा ओकरा आसपास के गाँव मनले बा। अब प्रीतकूट के नाम पिअरो हो गइल बा। सम्राट हर्षवर्धन आ बाणभट्ट के समकालीन भोजपुर जिला का पिअरो गाँव का एह भोजपुरी भाखा के कवि ईसानचंद के ' चिन्तातुराङ्क ' के उपाधि मिलल रहे। आचार्य शिवपूजन सहाय ' शुक्ल अभिनन्दन ग्रन्थ के हवाले से एगो अस्लोक के उलेख कइले बाड़न जवना में उनका ' चिन्तातुराङ्क ' उपाधि के चर्चा बा -'इति व: प्रशस्तिकार: कवि: स चिन्तातुराङ्क ईशान:। यत्पालनार्थमर्थयति पार्थिवस्तां स्थिति श्रृणुत॥(कलकत्ता, सन् १९५५ ई., इतिहास - पुरातत्व - खंड - पन्ना - २००)

आचार्य शिवपूजन सहाय जी ' जैन - साहित्य और इतिहास ' के उलेख के आधार पर आगे लिखले बाड़न कि स्वयंभूदेव अपना ' पउमचरिउ ' आ 'रिट्ठनेमिचरिउ ' में अपना पहिले का कवि लोग का सङ्गे ईसानचंद के इयाद कइले बाड़न (नाथुराम प्रेमी, दूसरका संस्करन, सन् १९५६ ई. - पन्ना - ६)।

नाथुराम प्रेमी अपना एह ग्रन्थ में ईसानचंद कवि के सप्तसती के २७५ आ ८४ गाथा के रचनाकार कहले बाड़न।(पन्ना - १९९-२००)

अपभ्रंस के महाकवि पुष्पदन्त का ' अपभ्रंस - महापुराण ' में भी एह भोजपुरी भाखा के कवि ईसानचंद का नाम के आदर से उलेख कइल गइल बा। ' शुक्ल अभिनंदन ग्रन्थ ' में श्रीलोचन प्रसाद पाण्डेय के कहनाम बा कि " ईसानचंद के रचना रायपुर आ नागपुर का संग्रहालयन के सुरक्षित शिलालेखन में बा। ऊ बहुते बड़ सानदार कवि रहलें, अइसन उनकर पद्य - रचनन ब्यक्त करेलन स। ऊ महासिव बालार्जुन के मतारी, मौखरी - नरेस सिरी सूर्यवर्मा के बेटी आ ' प्राक् - परमेश्वर ' बिसेसन से बिभूसित कोसलाधिपति सिरी हर्षगुप्त महाराज का महारानी के अपना प्रतिभा से अमर बना गइल बाड़न।"(इतिहास - पुरातत्व - खंड, पन्ना - १९९-२००)

अब तक का उलेखन से ई उजागर होता कि सातवीं सदी का आरंभिक दसक में बिहार के भोजपुर जिला का पिअरो (तत्कालीन प्रीतिकूट गाँव) गाँव के भाखाकवि ईसानचंद भोजपुरी के पहिल कवि रहलें। इनका रचनन का अध्ययन - अनुसंधान के बादे भोजपुरी काव्य - साहित्य का प्राचीन परम्परा के ज्ञान बोधगम्य हो पाई।

◆ ◆ ◆

प्रो.(डॉ.)जयकान्त सिंह
'जय'
छपरा, बिहार

अबे सेना के सवाल अझुराइले रहल ह तले शिवसेना के बवाल शुरू हो गइल। चाहवाला त नाक में दम क के आफत जोतलहीं रहलें हँ तले हई टेम्पूवाला एकनाथ सिंदे विपक्ष खातिर शनिचर मतिन कपार पर सवार हो गइल बाड़न। सड़क से सदन तक जाएवाला रास्ता अब सदन से पाँच सितारा होटल तक जाता। परसाई जी कहले रहनीं कि साधो ! अब करे के ई चाहीं कि रोज विधानसभा की बहरी एगो बोर्ड पर आज के बाजार भाव लिख देबे के चाहीं आ संगे-संगे ओ विधायक लोग के सूची भी चिपका दिहल चाहीं जे बिकाऊ बा। ए से किननिहार का सुभीता हो जाई आ बिकाऊ माल का भी सहूलियत होई आ सूरत गोहाटी आवाजाही के झंझट आ खर्चा भी बचि जाई। हे तरे बेज्जती खराब कइल जाला। जा हो ई राजनीति ह त उद्धव ठाकरे के बपौती खेत में उलाट के मड़आ बोवत बाड़ लोग जदी हमरी साहित्यिक बपौती में खुरपी भी ले के खेत के डाँड़े लउक गइलऽ लोग त बेजाईंए होई, बता देत बानीं। पुरनियाँ लोग कहत रहे कि ढेर बेइज्जती होत होखे त ओमें दोसरो के मिला लिहला से आधा इज्जत बाँचि जाला। बाकी सिंदे त निर्दलियन के मिला- मिला के ऊधो बाबा के इज्जत के बड़ा पाव बना रहल बाड़ें।

एने जब से ज्ञानवापी में शिव जी मिलल बानीं तबसे एक्को लोढ़ा सिलवट पर ठीक से नइखन बइठे के चाहत। सभे अपना के शम्भूनाथ के भाई बुझता। बुझो, हमरा कवन काम बा कुछ कहला के?

अग्निपथ योजना के विरोध में एगो आन्हर आ एगो लंगड, (माफ़ करीं) एगो नैनदिव्यांग आ एगो टांगदिव्यांग दुनू जने टरेन फूँकत रहेलोग। वायरल वीडियो रउवों देखले होखब। ए सभे के मलेटरी में भरती होखे वाला ए भकेंसी से होखेवाला दूरगामी परिणाम साफसाफ लउकत रहे। जइसे शिवसेना के विधायक अब्दुल सत्तार हिन्दुत्व की रक्षा खातिर महाराष्ट्र से गोहाटी चहुँप गइलन ओसहीं इहो पंच मलेटरी में भरती खातिर आंदोलन करत रहे लोग। बाकी हमरा कवन काम बा कहला के?

ऊधो बाबा के अब सोचे के पड़ी, ई राजनीति ह एमें कवनो जरूरी नइखे कि बाबूजी बड़हन नेता रहनीं त रउआ भी बड़का कहाइबि। ई कुल्हि साहित्य में होला,"हँसि के लोढ़ा करे बड़ाई, हमहूँ शम्भूनाथ के भाई"।
एगो अउरी बात बा। शिवसेना के चुनाव चिन्ह तीर कमान ह। जदी एकनाथ सिंदे शिवसेना पार्टी पर आपन दावा करसु तबो उनका चुनाव चिन्ह कमान ही मिली काहें कि उड़त तीर त ऊधो बाबा पहिले ले लिहले बानीं....।

◆ ◆ ◆

डॉ. अनिल चौबे

सम्पादक, सिरिजन

स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के कविता कुक्कुर (अध्याय - 8)

कुक्कुर केतनो मेहनत कइलसि खेती के हालत ना सुधरला ।
उलटे भारी मँहगी अकाल दूनूँ आ के एक साथ परल ॥1॥

ज्यादे से ज्यादे पोरसा भर धरती खनि के जब हलि जाला ।
तब खाजु भेंटा जाला कुक्कुर के काम पेट के चलि जाला ॥2॥

अत: प्रांत में पोरसा भर के लाखन कुवाँ खनाइल ह ।
गोसयाँ लोगन के खाद्य समस्या ना परंतु सुधियाइल ह ॥3॥

गोसयाँ हमार अब का खइहें जब ई चिंता व्यापल विशेष ।
तब उड़त उड़त कुक्कुर आपन पहुँचल जा के जरमनी देश ॥4॥

अवरी केतने दोसरा देशन के लेखा जब बइठवलसि ह ।
तब आ के गोसयाँ लोगन के एक नया उपाय बतवलसि ह ॥5॥

जब कमी अन्न के बाटे तब ई हे उपाय अपनाईं जाँ ।
हाथे हाथे ले के कुदार अब मूस मारि के खाईं जाँ ॥6॥

मुर्गी सूवर आ गाइ भँइसि खइला में ज्यादे दाम लगी ।
पर मूस मुवा के खाइला में लागत ना एक छदाम लगी ॥7॥

मूसे में ढ़ेर भिटामिन बा सब डाँक्टर लोग बतावता ।
एपर एगो नीमन सुझाव हमरा बिचार में आवता ॥8॥

आगी पर मूस पकवला से रोवाँ चमड़ा सब जरि जाई ।
तब ओमें जवन भिटामिन बा ओकर कुछ अंश सँपरि जाई ॥9॥

लेकिन बिलकुल ताजा धइ के जे काँचे मूस चबा जाई ।
तब एमें ना कुछ शुबहा बा ऊ सजी भिटामिन पा जाई ॥10॥

◆◆◆

भोजपुरी के आचार्य कवि
पं. धरीक्षण मिश्र

चिन्ता के अगनी

चिन्ता के अगनी तहरा के लेस-लेस खा जइहें
ए मैना तू आसरा छोड , तोता फेरु ना अइहें ।

काहें आंख मिलवलू कइलू फुदुक-फुदुक के खेला
पतइन के कोरा में सटि के खूब लगवलू मेला
ना जनलू की पतझड़ आई, पात-पात झर जइहें
ए मैना तू आसरा छोड़ , तोता फेरु ना अइहें ।

ढेर बहाना कइलू जग से, कनखी से बतिअवलू
देश-काल मौसम सगरो के ठुकरवलू लतिअवलू
पछतइला में का बाटे अब बीतल दिन लवटइहें
ए मैना तू आसरा छोड़, तोता फेरु ना अइहें ।

फगुनी हवा चइता के पुरवा बरखा परल फकारी
जड़वा के साथे-साथे रस लुटलू पांखि पसारी
भरल उमरिया के सब साथी ढलती के अपनइहें
ए मैना तू आसरा छोड़, तोता फेरु ना अइहें ।

आपन जिनगी अपने काट ना केहू दुख बांटी
इ दुनिया ह सुख के साथी दुख के देहियां माटी
सुख में जे-जे चहकल साथे असमय देख परइहें
ए मैना तू आसरा छोड़, तोता फेरु ना अइहें ।

लागल पल भर पलक सुगनवा अचके में आ गइले
अइसन उमगल प्राण दुनू के साथे में उड़ गइले
मिलल नयन तब प्राण जुड़ाइल अंजन नसन जुड़इहें
ए मैना तू आसरा छोड़, तोता फेरु ना अइहें ।

◆ ◆ ◆

भोजपरी गीत सम्राट
पं0 राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गज़ल

डॉ. जौहर शफियाबादी
विभागाध्यक्ष (उर्दू)
डॉ. पी. एन. सिंह महाविद्यालय, छपरा

हो गइल का से का

हो गइल का से का, देखते रह गइल।
आँख फूटल लवा ,देखते रह गइल ॥

चाँन गरहन से कहिया,भला घट सकल।
लोग बिगड़ल हवा, देखते रह गइल ॥

केहू सावन सजवले बा आठो पहर।
केहू उमड़ल घटा ,देखते रह गइल ॥

जोग-टोना भइल बे असर दर्द में ।
बैध आपन दवा ,देखते रह गइल ॥

नेह उनकर पता झप से हथिया लेलस।
बुद्धिया आपन पता , देखते रह गइल ॥

केहू जौहर जिनिगिया,लुटा के जीयल।
केहू आपन नफा, देखते रह गइल ॥

◆ ◆ ◆

बाझन के बा गोल सुगनवा

बाझन के बा गोल सुगनवा।
अपनोअँखिया खोल सुगनवा॥

केकर गोड़ लहू में भीजल ।
कौन भइल बे मोल सुगनवा॥

बरखा हंस-हंस के बहसत बा।
अपनो पर के तोल सुगनवा ॥

रूप नदी से भर के ले आ ।
आँखिन के नव डोल सुगनवा॥

कौन खरीदी जौहर जी अब ।
तू बारे अनमोल सुगनवा ॥

◆ ◆ ◆

महेश्वराचार्य के आलोचना साहित्य

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

भोजपुरी साहित्य के आलोचना आ समीक्षा के आधार स्तम्भ महेश्वराचार्य जी (महेश्वर प्रसाद) सन् 1934 ई. में सेन्ट्रल हिन्दी इसकूल बनारस से मैट्रिक पास कइला के बाद स्वाध्याय से अपना ज्ञान के समृद्ध कइलीं । इसकूलिए जीवन में साहित्य के लकम लागल आ मरे तक बरकरार रहल । पहिले हिंदी आ भोजपुरी में कविता लेखन से गतिविधि बढ़ल जे आगे रसगर आलोचना में परिवर्तित हो गइल । महेश्वराचार्य जी अपना आलोचना - समीक्षा के चलते प्रसिद्ध भइलीं । अपना साहित्यिक रूझान के बारे में महेश्वराचार्य जी अपना ' भिखारी ' नामक आलोचना ग्रंथ मे बतवले बानी - " अपने बचपन में , जाड़े के दिनों में , रजाई के नीचे , अपने गाँव के शान्त वातावरण में सुरीली आवाज में आ रही ' रामचरित मानस ' की चौपाइयों के मधुर स्वर ने मुझे अभिभूत किया , वह चिरस्मरणीय छाप मेरे मस्तिष्क पर छोड़ गया । मुझे आज भी याद है वह सहज चौपाई - ' आगे चले बहुरि रघुराई '। जहाँ तक भोजपुरी के प्रति रूझान के बात बा , उहाँ का खुलासा करत ओही पुस्तक में लिखले बानी -- " जैसे - जैसे क्षेत्रीय भाषाओं , विशेषतः भोजपुरी के संपर्क में आया , वह मुझे सरस , भावपूर्ण , काव्यमयी और मर्मस्पर्शी लगी । इसी बीच कलकत्ता प्रवास में सुरीली आवाज में आ रही उस गीत की पंक्ति ने मुझे बहुत दिनों तक बेचैन रखा –

' होत भिनुसरवा , जइब , राजा कलकतवा ,
तनि बोल , बतिआ ल, कि अइब कि ना ? '

पहिले महेश्वराचार्य जी के भोजपुरी के तीन गीत संग्रह प्रकाशित भइल -- ' बिरहिणी बाला ' (1934 ई.) , ' सुराज के सपना ' (1947 ई.) आ ' दइबी घटना ' (1949 ई.) । हिन्दी में उहाँ के आलोचना आ समीक्षा ग्रंथन के प्रकाशन 1952 ई. से शुरु भइल । कबीर , सूर , जायसी , तुलसी आ मीरा के काव्य पर केन्द्रित समीक्षा ग्रंथ -- ' पञ्चामृत ' ; ' प्रिय प्रवास की राधा ' ; ' गुप्त जी की यशोधरा ' आ ' यशोधरा की करुण साधना ' 1952 ई. में प्रकाशित बाड़ें स । समय समय पर कल्याण में लिखल - छपल निबंधन के संग्रह 1953 ई. में ' प्रेमाञ्जलि ' नाम से छपल । ' जनकवि भिखारी ' (1963 ई.) आ 'भिखारी ' (1978 ई.) हिदीए में लिखल आलोचनात्मक ग्रंथ बा । भिखारी ठाकुर के भोजपुरी साहित्य पर हिन्दी में लिखल एह दुनों ग्रंथ के अलावे भोजपुरी साहित्य पर भोजपुरी में लिखल दू गो आलोचना के किताब छपव बा -- ' सीता के लाल : एक समीक्षा ' (1977 ई.) आ ' त्रिपुटी ' (1978 ई.) । ' बतकूचन ' सात गो व्यक्तिगत निबंधन के संग्रह बा जे 1978 ई. में छपल रहे । महेश्वराचार्य जी के 'भोजपुरी काव्य साहित्य के इतिहास ' नामक पातरे किताब 2008 ई. में छपल बा । एह सब के अलावे महेश्वराचार्य जी के फुटकर लेख भोजपुरी पत्र पत्रिकन में छितराइल बा । एह लेखन से आलोचना आ समीक्षा के साहित्य का बढ़ंती में सहयोग मिलत बा । भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका ,भोजपुरी समाचार , भोजपुरी साहित्य , जगरम , भोजपुरी परिवार ,पतरातू वार्षिकी सहित अन्य अनेक पत्र पत्रिका स्मारिका आदि अइसन पत्रिकन में शामिल बाड़े ।

जहाँ तक भोजपुरी साहित्य के आलोचना - समीक्षा के सवाल बा , महेश्वराचार्य जी हिन्दी माध्यम से शुरु कइलीं आ ऊ पुस्तकाकार ' जनकवि भिखारी ठाकुर ' नाम से आइल । एह में कई उप शीर्षक से भिखारी साहित्य पर विमर्श उहाँ का कइले बानी । उप शीर्षक बा -- परिचय , भिखारी का भक्त हृदय , रामनाम की लौकिक प्रतिष्ठा , राम विवाह और कृष्ण लीला , उपालम्भ , द्रौपदी पुकार , गंगा स्नान और गंगा बहार , भाभी विलाप , बेटी वियोग , विधवा विलाप , ननद और भउजाई , नीति , मर्यादावाद और उपदेश , समाज और भिखारी , न्याय और भिखारी का कवि हृदय । एह में कई गो उपशीर्षक भिखारी ठाकुर के रचना के नाम पर बा । पं. गणेश चौबे अपना पुस्तक 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस ' एह पुस्तक के व्योरा देत लिखले बानी - "भिखारी ठाकुर के लोकनाटकन के प्रशंसात्मक समीक्षा, जवना में लेखक ई सिद्ध करे के कोशिश कइले बाड़ें कि उनका नाटकन में भक्ति भावना से लिखाइल पदन के भरमार बाटे ।" अगर ई कहल जाए कि भिखारी ठाकुर के नाटकन भा पदन में जे भक्ति भावना के प्रभाव बा , ओकर प्रभाव महेश्वराचार्य जी पर पड़ल बा आ ओकरे के अभिव्यक्त करे के सफल प्रयास उहाँ का एह निबंधन के जरिये कइले बानी । एह में पूर्ववर्ती आलोचक लोग से तुलना के साथ साथ कहावत - मुहावरा आ शब्दन के रसगर व्याख्या कइले बानी । भिखारी ठाकुर के साहित्य पर केन्द्रित उहाँ के दूसर हिंदी पुस्तक - ' भिखारी ' बा । एहू में कई गो उपशीर्षक बना के समस्त भिखारी साहित्य के आलोचना प्रस्तुत कइल गइल बा । उपशीर्षक खातिर भिखारी ठाकुर रचित पदन के पाँति के चुनाव बा । ठाकुर जी के परिचय उनका रचनन के अंतःसाक्ष्य के आधार पर ' गलती बहुत लउकते जाई ' उपशीर्षक से कइल गइल बा। ' पटहा कवन अनमोल ' उपशीर्षक अंतर्गत भिखारी ठाकुर के पहिल रचना आ उनका रचना प्रक्रिया के विश्लेषण व्याख्या बा । भिखारी ठाकुर के आध्यात्मिक आ भक्ति भावना के आलोचनात्मक व्याख्या ' मइया पटकत बानी माथ ' नामक लेख में बा। भिखारी द्वारा राम नाम के महत्त्व प्रतिपादन ' राम कह सुगवा ' उपशीर्षक से त राम विवाह के बरनन के विशेषता ' चितचोर रामजी दुलहा ' उपशीर्षक वाला लेख में बतावल गइल बा । बीच - बीच में महेश्वराचार्य जी रामचरित मानस के चउपाइयन से तुलनो करत गइल बानी । भिखारी ठाकुर के कृष्णलीला संबंधी भिखारी साहित्य के विश्लेषण सूरदास जी के पदन से तुलना के साथ 'लागल बा कूबरी के तीर' उप शीर्षक निबंध में कइल गइल। पौराणिक कथा के आधार पर द्रौपदी चीर हरन प्रसंग के प्रभाव भिखारी साहित्य पर कइसे आ कतना बा महेश्वरचार्य जी पड़ताल कइले बानी । गंगा संबंधी मान्यता भिखारी साहित्य में का बा ' रखिह चरन के सरन ' उपशीर्षक निबंध में त ' जनम - जनम दीह दरस ' उपशीर्षक निबंध में गंगा पर केन्द्रित पदन के विश्लेषण बा । भिखारी साहित्य में विरह वर्णन के व्याख्या विश्लेषण - ' उमिरिया भरिया ना ' उपशीर्षक से त देवर- भउजाई के संबंध में भिखारी के विचार के विश्लेषण ' हो मोर देवर दुलरु ' उपशीर्षक निबंध में मिलत बा । बेमेल बिआह पर भिखारी साहित्य के विश्लेषण ' छछनवल जियरा ' उपशीर्षक निबंध में बा त ' विधवा विलाप ' के व्याख्या विश्लेषण ' ए मोर जाउत दुलरु ' में । ' पुत्र बध ' नाटक के ' अब होइबू लरकोर ' उपशीर्षक से ; ' गबर घिचोर ' नाटक के ' दुखवा समुझ हीरा ' उपशीर्षक से आ ' कलियुग प्रेम ' के ' पियवु निसइल ' उपशीर्षक से व्याख्या विश्लेषण मिलत बा । नशाखोरी के खिलाफ भिखारी ठाकुर के विचार के विश्लेषण - मूल्यांकन एह में बा ॥ ' लहुरी ननदिया , ए सँइया ' उपशीर्षक निबंध में ननद - भउजाई के पारिवारिक संबंध पर , भीतरे बइठल माथ कमाव ' निबंध में भिखारी ठाकुर के अपना जातीय कर्म के बारे में विचार के विश्लेषण आ भिखारी साहित्य में जवन सामाजिक मरजाद बनवले रखला पर विचार आइल बा ,के विश्लेषण महेश्वरचार्य जी ' कहेले असले बात भिखारी ' उपशीर्षक निबंध में आलोचनात्मक दृष्टि डलले बानी । परिवार आ नारी के कुलीनता - शालीनता पर भिखारी ठाकुर के नजरिया के अनुशीलन ' अँकरी नाहि मिलत बा एहि बेरि ' उपशीर्षक निबंध में आइल बा । भिखारी ठाकुर अपना समाजी लोग -- नाच मंडली के सदस्य लोग के सामाजिक मर्यादा में रहे के शिक्षा अपना कार्यक्रम के दौरान देत रहीं । ओह सीख के व्याख्या विश्लेषण महेश्वरचार्य जी ' टिकुली चोली सारी में ' उपशीर्षक से कइले बानी , जबकि भिखारी ठाकुर के रचना कौशल आ रचना प्रक्रिया के विश्लेषण ' सदा भिखारी रहसु भिखार ' निबंध में । भोजपुरी खातिर मानक ग्रंथ बा । एह दुनों ग्रंथ के जरिये भिखारी ठाकुर के साहित्य के

गहिराई के पता चलल आ दुनिया के ध्यान खिचाइल ।

भोजपुरी साहित्य के आलोचना समीक्षा भोजपुरी में कम नइखीं कइले । ' भोजपुरी साहित्य ' के प्रवेशांक (जुलाई , 1965 ई.) उहाँ के लेख - ' संतन के भोजपुरी सेवा ' छपल बा ,जे हिंदी साहित्य का आदिकाल के भक्त कवि लोग भोजपुरी में रचना कइले बा ,ओह पर विचार बा। । एही साल एही पत्रिका के सितंबर अंक में भिखारी ठाकुर के नाटक - ' बिदेसिया ' पर केन्द्रित समीक्षात्मक लेख - ' डगरिया जोहत ना ' छपल बा । जबकि अक्तूबर अंक में छपल ' लागल बा कुबरी के तीर करेजवा में ' नामक आलेख में भिखारी ठाकुर के कथ्य , शिल्प , भाषिक संरचना आ रचना प्रक्रिया पर विचार आइल बा । ' उरेह ' (जनवरी , 1978 ई.) में महेश्वरचार्य जी के आलेख -- ' प्रणयी के काव्य साधना ' छपल बा , जवना में डॉ. रामनाथ पाठक प्रणयी के काव्य में उनका अंतरंग जीवन के प्रभाव कतना आ कइसे पड़ल बा विचरले बानी । एह में प्रणयी जी के जीवनो वृतांत मिली । एही पत्रिका का अप्रील,1980 ई. के अंक में श्रद्धानंद पांडेय रचित महाकाव्य ' श्रीरामकथा ' के समीक्षा उहाँ का कइलै बानी । ' उचार ' (जनवरी - फरवरी , 1979 ई.) में ' लोक कलाकार भिखारी ठाकुर ' शीर्षक लेख में भिखारी ठाकुर के रंगमंचीय कलाकार के रूप में परखल गइल बा । 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका ' (जुलाई - सितम्बर ,1981 ई.) में ' भिखारी के विदेसिया नाटक के उपास्य ' छपल बा । 'भोजपुरी समाचार' (जनवरी- फरवरी, 1981 ई.) में महेश्वरचार्य जी के आलोचनात्मक आलेख - ' कौशिकायन खातिर समझदारी चाहीं '। एह आलेख में 'कौशिकायन ' के समीक्षा जे भृगुनंदन त्रिपाठी कइले रहीं, 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका ' में ' पुजनउग पुरखन के फोंफी ' शीर्षक से आ खारिज करे के कोशिश कइल गइल रहे , ओकर जवाब बा । महेश्वरचार्य जी कौशिकायन के एगो गौरव ग्रंथ बतवले बानी । ' भोजपुरी परिवार पत्रिका ' (वार्षिकी - 1983 ई.) में महेश्वराचार्य जी के आलोचना 'भोजपुरी नई कविता ' छपल बा ,जवना में नई कविता के कथ्य शिल्प आ भाव पक्ष पर विचार कइल गइल बा । एही पत्रिका के वार्षिकी - 1984 में विगत दस बरिस में भोजपुरी कविता कै उपलब्धि पर ' भोजपुरी कविता के विगत दस बरिस ' नामक लेख में कइल गइल बा ।

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के कई एक अंक में महेश्वराचार्य जी के कई गो मूल्यांकन परक महत्वपूर्ण आलेख छपल । रघुवीर नारायण के ' बटोहिया ' के अनुशीलनात्मक अध्ययन सितम्बर 1985 ई. के अंक छपल बा । जनवरी , 1990 ई. के अंक में छपल आलेख - ' भोजपुरी के अप्रतिम प्रतिमान महेन्दर मिसिर ' में उहाँ के मान्यता बा कि भिखारी ठाकुर पर मिसिर जी के गहिर प्रभाव पड़ल बा । कथ्य ,धुन आ लय सब प्रभावित बा । ' डॉ. रामनाथ पाठक प्रणयी : व्यक्तित्व - कृतित्व'(अक्टूबर आ नवम्बर , 1991 ई.) में प्रणयी जी के पीड़ा , प्रकृति , यथार्थ आ गरीब दुखिया के कवि मनले बानी । उहाँ का मानत बानी कि प्रणयी जी के रचनन में प्रकृति प्रदत्त चेतना का स्थान मिलल बाटे । ' हास्य के निकष ' नामक निबंध (दिसम्बर , 1993 ई.) में सैद्धांतिक चरचा बेसी कइले बानी । डॉ. धीरेन्द्र बहादुर चाँद सम्पादित एगारह कवियन के नवगीत संग्रह - ' एक पर एक ' के समीक्षा करत उहाँ का लिखले बानी - " नवगीत के पूरा संकलन पढ़हीं लायक ना समझहूँ लायक बा । अंदाज अइसन बा कि अबहीं भोजपुरी में नवगीत के दोसर संकलन एकरा लेखा नइखे निकल सकल । " मार्च -1995 ई.के अंक में भोला प्रसाद आग्नेय के कहानी संग्रह - ' वसीयतनामा ' के समीक्षा करत उहाँ का लिखले बानी -- "सभ कहानी में लेखक के भोगल आ देखल यथार्थ बा। युग के यथार्थ चित्रित करके लेखक पाठक के हृदय पर चोट करत बा । " सितम्बर - 1996 ई. के अंक में हीरा प्रसाद ठाकुर के 'गउरा गाथा ' के समीक्षा भइल बा । " ' जगरम ' (अंक - 9 , मार्च - 97) के कबीर विशेषांक में ' संत कबीर आ भक्त तुलसी ' शीर्षक लेख में दुनो भक्त कवियन के तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कइले बानी । 1985 ई. में ' कुंजन स्मारिका ' में कुंजन जी पर एगो लेख छपल बा ।

महेश्वरचार्य जी के दू गो समीक्षा पुस्तिका बा -- ' सीता के लाल : एक समीक्षा ' आ ' त्रिपुटी ' । पहिली पुस्तिका में कुंज बिहारी कुंजन रचित खंडकाव्य - ' सीता के लाल ‘ के समीक्षा ' अपने जामल घोड़ा रोकलस ' ; ' ज्यों साहिल के साल ' ; ' हँसते - हँसते लोटे ' ; ' रूस रे सठ हनुमान कपि ' आ ' विष कीरा विष खात ' उपशीर्षकन में बाँट के कइल गइल बा । समीक्ष्य पुस्तक के कथ्य ,

शिल्प , भाषिक संरचना पर विचार करत महेश्वरचार्य जी परम्परागत आ सामाजिक मरजाद के प्रतिकूल उद्भावना खातिर कवि के सामाजिक आ भौगोलिक परिस्थिति के दोषी मनले बानी । ' त्रिपुटी ' में डॉ. जितराम पाठक के कविता के ' रूप ' ; अश्विनी कुमार 'आँसू ' के ' रस ' आ आनंद संधिद्रुत जी के कविता के ' गंध ' उपशीर्षक से तीनों कवियन के एक - एक कविता के व्याख्या विश्लेषण के माध्यम से प्रभावशाली आलोचना कइले बानी । आलोचना के जरिये रचनो बेसी रुचिकर हो गइल बा ।

महेश्वरचार्य जी व्यावहारिक आलोचना के क्षेत्र में पहिला आलोचक - समीक्षक बानी ,जेकरा आलोचना पद्धति में व्याख्या ,विश्लेषण आ तुलनात्मकता के समावेश बाटे । प्रभाववादी आलोचना समीक्षा में आलोचक अपना ऊपर रचना के पड़ल प्रभाव के विवेचन विश्लेषण करेला । संवेदना से भरल आलोचक एह तरह के आलोचना समीक्षा अपनावेला । ई मन के उड़ान वाला , भाव के गहिर अनुभूति वाला आ अथोर कल्पनाशक्ति वाला होखेलन । रचना के शक्ति से जे पाठक आ भावक के परिचय करा देवे । महेश्वरचार्य जी के आलोचक में ई सब गुण पावल जाला । भिखारी ठाकुर के लोक नाटकन के शक्ति से पाठक- दर्शक के परिचय करावे में एह पद्धति से सफल भइल बानी । भिखारी ठाकुर पर केन्द्रित दुनों किताब एह पद्धति के अनुपम उदाहरण बा । रचना के भावभूमि आ रस में समीक्षक खुद त बूड़त - बहत बा ,अपना पाठको के बूड़त - बहवावत बा । एगो अंश नमूना खातिर काफी होई --

" रामनाम की अल्हड़ - विह्वल साधिका गणिका की प्रशंसा किन शब्दों में की जाए , जो काठ के सुग्गे को पिजड़े के भीतर बंद कर कहती है , प्यार से पढ़ाती है , प्रेम और आग्रह से सिखाती है --

राम कह राम कह राम कह सुगवा ।
नाहीं त टँगात बाटे सगरो से लुगवा ।
कहूँ ना पूजली हाँ गौरिया दुरुगवा ।
होत बा बिहान बोले लागल मुरुगवा ।
कहत 'भिखारी'आजु हउए कलिजुगवा ।

शायद किसी ने उसे बता दिया था कि जब काठ का सुग्गा राम - राम बोल देगा , तो उसको भगवान दर्शन देंगे और उसका उद्धार हो जाएगा । गणिका को इस तरह रटते - रटते कई दिन निकल जाते हैं , पर काठ का सुग्गा राम - राम नहीं बोलता है । गणिका रात को तलवार लेकर बैठती है और तय करती है कि यदि सुग्गा 'राम - राम' नहीं बोलेगा, तो वह अपनी हत्या तलवार से आप कर लेगी । आखिर बिहान होने को आता है और मुर्गा बोलने लगता है । फिर भी सुग्गा नहीं बोलता । गणिका ज्योंही तलवार उठाती है कि सुग्गा ' राम - राम ' बोल देता है और गणिका परम शांति को प्राप्त करती है । ऐसा है सहज , सुबोध , चुस्त - दुरुस्त , सुन्दर - मधुर और चुलबुला रामनाम । लोक अथवा परलोक में इसके जोड़ का दूसरा नाम ही नहीं है ।

सर्वत्र इसकी महिमा न्यारी है । जब गणिका काठ का सुग्गा पढ़ाकर शान्तिलाभ करती है तो इस कलियुग में भिखारी ठाकुर को सिर्फ राम नाम का ही सहारा रह जाता है । वह बड़े ही गदगद होकर असंख्य तोते से कहते हैं ---

' राम - राम बोल बिहान भइल तोता ।
भोजन सयन करत निसि बीतल ,
कबले लुकइब अलोता । '

-- जनकवि भिखारी ठाकुर, पृ. - 11-12

अइसहीं ' त्रिपुटी ' नामक पुस्तक से एगो अउर उदाहरण देखल जा सकत बा ---

" भोजपुरी जनपद आ भोजपुरी इलाका के मोलायम नाश्ता ह ' लावा फॉकल ' । एह से पाठक (डॉ. जितराम पाठक , कवि) नवयुवक लोग के दिल खोल के ललकरले बाड़ें (छुट्टी देत बाड़ें) -' रूप जोन्हरी के लावा ह / मसकाव लोग / डालत जा फॉका के फॉका / आ भसकाव लोग 'जोन्हरी के लावा के खूबी ह कि फॉकते - फॉकते घोंटा जाला । अतना जल्दी मुँह में गल जाला कि पते ना लागे कि कब कंठ के नीचे उतरल । ई लावा हवा अइसन हलुक ह , जइसन नया नवहर दुलहिन । एकरा खाये के आ भोगे के दू गो विधि पाठक बतावत बाड़ें । मसकाव आ भसकाव । मसकावल हलुक चीज के भोगे के हलुक विधि भइल , भसकावल फॉका के फॉका अंधाधुन्ध आँखमूँद के खइला के कहल जाई । मसकवला में मुँह नइखे चलावे के । भीतरे भीतर रस लेवे के बा आ भसकवला में मुँह बावे के पड़ी । एह से ई चिन्हावे लाइक खवाई भइल । "

--- त्रिपुटी , पृ. - 14

महेश्वरचार्य जी अइसन आलोचक बानी , जे एक- एक पाँति , एक - एक शब्द के लेके दूर- दूर तक कल्पना के उड़ान लगावत मिलब । उहाँ के आलोचना में अनुभूति के गहराई संगे संवेदनशीलता त मिलबे करेला , पाठक अउर रसिक खातिर अभिभूत करेवाला प्रसंगन के भरमारो मिलेला । व्याख्यात्मक आलोचना प्रणाली के सबसे बड़ विशेषता विश्लेषण ह । रचना में तटस्थता से मूल्यांकन एह प्रणाली में होला ,जवना से रचना के विशेषता सोझा आवेला । महेश्वरचार्य जी एह प्रणाली के भरपूर प्रयोग कइले बानी । शब्द - शब्द आ पाँति - पाँति के विश्लेषण से रचना के लैनू निकालल उहाँ के खासियत बा । अश्विनी कुमार आँसू के गीत के रसवादी व्याख्या के क्रम में उहाँ का एह प्रणाली के प्रयोग कइले बानी । महेश्वरचार्य जी के अभिव्यक्ति कौशल के आस्वादन करीं -

" मधुर भाव के कविता लिखे में ' ट ' वर्ग के शब्दन के छाँटल गइल बा । एहिजा ' ट ' वर्ग के शब्दन के भरमार लउकत बा । तबहूँ कविता के मधुरता जात नइखे । कविता के मिठाई आ मोलायमियत बढ़ले जाता । भोजपुरी भाव प्रवण शब्दन के ई खूबी बा कि ऊ अपना कोमलता से ' ट ' वर्ग के कर्कशता पर पानी फेर देत बा । ' टोअल ' आ ' टीसल ' कह देला प अइसन भाव राशि व्यक्त हो जात बा, जवना के बराबरी करे खातिर दोसर कवनो भाषा के वाक्य के जरूरत पड़ी ।

' टोअल ' स्पर्श के सुखद विषय भइल । छुअला के टोअल ना कहल जाई । कामशास्त्र के अनुसार शरीर में एकाधे गो अइसन अंग बाड़े स , जहाँ टोअल अनायासे सट जाई । कवनो नायिका जे कह दे कि फलाना टोअत बाड़ें , त बूझे वाला बेमेहनती बूझ जाई कि का टोअत बाड़ें । एह से टोअला के सीवान में एकाध गो शरीर के नाजुक आ महत्त्वपूर्ण अंग बाड़ें स ।" -- त्रिपुटी , पृ. - 26 - 27

अइसहीं ' भिखारी ठाकुर ' नामक ग्रंथ में ' उमिरिया भरिया ना ' शीर्षक लेख में उनका नाटक ' विदेशिया ' के आलोचना के क्रम में गीत के पाँति -- ' पिया ' निपटे नदनवाँ ए सजनी । हमरा घोंटात नइखे कनवा भर अनवा ए सजनी। ' के व्याख्या विश्लेषण कवना प्रकार उहाँ कइले बानी , देखल जा सकत बा -- " घोंटात भोजपुरी का एक शब्द विशेष है , जिसका अर्थ होगा कंठ से नीचे भोजन उतारना । ' कनवा ' का अर्थ ' छटाँक ' नहीं अपितु कण मात्र होगा। विरह की गंभीर स्थिति में भोजन दुर्लभ हो जाता है । "

अइसन प्रभावशाली आ व्याख्यात्मक आलोचना में साधारणो पाठक के मन रचना से बेसी रमेला , बेसी रस मिलेला ।

आलोच्य साहित्य के प्रभाववादी आ व्याख्यात्मक आलोचना के क्रम में आन - आन भाषा के रचनाकार आ ओकरा रचना से तुलनात्मकता देखावत चलत बानी , जे उहाँ के तुलनात्मक आलोचक सिद्ध करत बा । ' त्रिपुटी ' आ ' सीता के लाल : एक समीक्षा ' में महेश्वरचार्य जी के तुलनात्मक आलोचक से भेंट होत रहत बा । ' जगरम ' पत्रिका के ' कबीर विशेषांक ' में उहाँ के आलेख 'संत कबीर दास आ भक्त तुलसी दास ' त निछक्का तुलनात्मक आलोचना के उदाहरण बाटे । ' त्रिपुटी ' में ' रूप ' शीर्षक निबंध में आलोच्य कविता 'रूप ' पर विचार करत उहाँ का अंग्रेजी कविता , कालिदास द्वारा शंकुतला रूप के बरनन आ तुलसीदास द्वारा सीता रूप बरनन से शुरुआत करत डाँ. जितराम पाठक के रूप बरनन पर विचरले बानी । भिखारी साहित्य के विशेषता बतावे लागि सूर आ तुलसी के काव्य से उदाहरित करे में उहाँ का रुचि देखवले बानी । ' संत कबीर दास आ भक्त तुलसी दास ' में उहाँ के एह पद्धति के गुणल समुझल जा सकत बा - " कबीर सत्य साधक रहलें । तुलसी सत्य शिव सुंदर के पुजारी । कबीर में पीड़ा बा ,तुलसी में जिन्दगी । कबीर नारी के छोड़लें आ नारी तुलसी के छोड़ली । कबीर के सोझा निर्गुण निराकार ब्रह्म रहलें तुलसी का सगुण साकार । कबीर पंडित - मुल्ला के संगे सत्ता के चुनौती दिहले । तुलसी अपना लोकज भाषा के चलते पंडित लोग के कोप भाजन बनलें । कबीर जहाँ निंदक के नियरे राखे के बात कहलें , त तुलसी खल के बंदना कइलें ।

दूनों ज्ञानी आ फन के माहिर , बाकिर झुक के कहल लोग -

मसि कागद छुआ नहि -- कबीर,
कवित्त विवेक एक नहीं मोरे -- तुलसी ।"

एह तरह से महेश्वरचार्य जी भिखारी साहित्य आ लोक साहित्य से प्रभावित हो के भोजपुरी साहित्य के अनुशीलन- परिशीलन आ व्याख्या - विश्लेषण शुरु कइलीं । भारतीय साहित्य आ संस्कृति से पुरहर पहचान के कारण रसगर भाषा में आलोचना कार्य उहाँ के प्रतिष्ठा दिअवलस ।

◆ ◆ ◆

डॉ० ब्रज भूषण मिश्र
मुजफ्फरपुर, बिहार

छव मुक्तक

वजूद
छा गइल चान पर स्याह छाहीं घनी
मेघ आवारगी पर उतारू भइल।
कुछ त पुरवा के मीठी शरारत रहे,
कुछ त मौसम फरेबी बाजारू भइल।
आजकल्ह ना कतो जीउ लागे सखी,
आँखि में कुछ चुभन अस लगे हर बखत।
साँस के गर्म झोंका जरावे बदन,
सब वजूदे लगत बा बिमारू भइल।

मछरी-अहेर
का कहीं आजु कुछ बात अजगुत भइल
पर कहे बिन न पानी पचे पेट के।
काँखि तर दाबि चिलवन मुँधेरे खने,
चान गइलन नदी तीर आखेट के।
चेल्हवा के चिलक देखि ललचल ह जी,
कुछ न सूझल त धोती बिछइले गँवें।
जाल कइके उछारे के मकसद बिफल,
ऊ त लेले दहाइल ह झरपेट के।

पीर अजानी
बाँसबन के परे रोशनी कुछ मधिम
भान होखे कि केहू दियारी धइल।
दूर कतहीं सुनाता नदी के सदा
रात तरइन के मर्दुमसुमारी भइल।
बे घटा गाल पर आ गिरल जल कनी!
आँखि खुलले रहल, धार ढुलकत रहल।
पीर-आँगछ कहाँ कब बिजानल ह के?
भेद भोगले प सगरी उघारी भइल।

थिर चित्त
फेरु चंदा प पाँकी उछारल ह के?
रेत माटी के धब्बा बेढंगा लगे।
चंद बदरी के टुकड़ा निचानी तरत,
आसमानों के चेहरा बेरंगा लगे।
पौन रह-रह उबासी हवें ले रहल,
गाछ के पात डोले उमस से सिहर।
आजु के राति बोझल तनी अनमनी
मौन गतिहीन आकाशगंगा लगे।

असर
कौन आले प दीया सिरा के गइल,
गाढ़ चुप्पी पिघल के पसरते रहल।
एक पाँखी उदासलि रहल रात भर,
चान पच्छिम कगर में ससरते रहल।
ओद पलकन प पानी ठहर ना सकल
कान के गर्त में जा भुलाइल कहीं।
बात कहिए भइल आजु पनखी फुटल,
रामजी के बियाड़ी लसरते रहल।

ऊब
नोंचि के आसमाँ के बिखेरल ह के,
पोखरा के सतह सुरमई अस लगे।
गाछि निहुरल निहारे चिकुर जल मधे,
आजु काहे त उचटल अधर-रस लगे।
मेघ अबहूँ न लउकत कहीं तान तक,
आदमी बा झुराइल पथल के तवे।
साँझि के आगवनि बा उमस से भरल,
रात आँगछ भयद साँस असबस लगे।

◆ ◆ ◆

दिनेश पाण्डेय
पटना

भोजपुरी व्यवहार में बरते जाए वाली, बोले जाए वाली आ लिखित भासा, दूनों ह। एगो बड़हन भू-भाग में ऊ बोलल जाले। यद्यपि आज ऊ देवनागरी में लिखल जाले बाकिर कब्बों एकरे खातिर 'कैथी' लिपियो उपयोग में लीहल जात रहे। एकर भासाई आ क्रियापद क अन्विति में गहिर परंपरा के सन्निवेस हवे। ई खाली 'लोक' के श्रेनी में डाल के छुट्टी पा लिहल जाए वाली भासा नइखे। भोजपुरी मात्र भोजपुरी फिल्मन आ कुछ सांगीतिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमन ले सीमित नइखे। भोजपुरी साहित्य के अभिकेन्द्रक ले सामान्य आदमी के कई बेर ना पहुँच ना हो पावेला, यद्यपि ओकर आधार सामान्य मनई हवे... ।

भोजपुरी साहित्य के असली रूप अब जनसमाज के समने कायदे से 'आधुनिक आ समकालीन रूप ' में आवे के चाहीं । वइसे अबहूँ कुछ हद तक आ रहल बा । एके दूसर भासा में कहल जाय त अब हमनी के अइसन पाठक-समाज विकसित करे के ह जवन भोजपुरी साहित्य प्राथमिकता से पढ़े। हमनी के वोह तरह के समाज बनावे के चाहीं, जेम्मे भोजपुरी में लिखे वाला आलोचक, निबंधकार, कवि आ पत्रकार हमनी खातिर क्रेज के विसय होखे। हमनी के समाज के वैचारिक नेतृत्व करे वाले खातिर स्पृहा होखे। जे लोग सामाजिक चाहे राजनैतिक छेत्र में सक्रिय ह , उनके कुछ इतर कारनन आ सक्रियता के कारन लोग जानेलें। ई एगो अलगे समाजसास्त्र ह जवन लोग हमनी के सांस्कृतिक (साहित्य, कला, संगीत, थियेटर, नृत्य इत्यादि) नेतृत्व करेलन , विशेष तौर पर साहित्यिक नेतृत्व, उनके प्रति हमनी के तात्कालिक उदासीनता बहुत विकट रूप में लउकेले । वृहत्तर अर्थ में ई एक तरह के सांस्कृतिक विपथन ह । हमनी के कइसन समाज बना रहल हईं जा जेम्मे कंपनियन से पैकेज, सोफा, एलईडी, कार, बंगला हमनी के समकालीनता में शामिल ह बाकिर साहित्य नइखे। का हमनी के अइसन भोजपुरी समाज ना बना सकीले जहाँ शहरी, अर्धसहरी या ग्रामीण मेहरारू-मरद बजार जायँ, कवनों समान खरीदें त उनके सोच में एगो भोजपुरी के किताब या पत्रिको खरीदल सामिल होखे ?

अबहिन जवना कवि-व्यक्तित्व के बारे में ठीक से धियान भोजपुरी समाज के ना गइल ह , ऊ हवें - बिसराम। ऊ जब बिरहा सुनावत रहलें त फुटकर प्रसंग में एगो भिन्न प्रकृति के कविता बोलत रहे। भिखारी ठाकुर के समानांतर या उनके कालांतर के साहित्य पर अबहिन हमनी के केन्द्रीय दृष्टि ठीक से गइल ना लगत हवे , अइसन कुछ लोग के मत बा। भिखारी ठाकुर के साथे -साथे अपने अवरहूँ समकालीन साहित्यधर्मी आ साहित्य सिलपियन के पारदरसी अन्वेसन आवस्यक ह। कवनहूँ संस्कृतिशील समाज के उद्बुद्ध होखला के लच्छन इहे ह कि ओकर संवेदनसीलता के केतना लय ह। साहित्य वोही संवेदनमयता के विलच्छन लय ह। समाज खाली समाज के फोटोकॉपी नइखे। कॉपी कहि के हम ओकरा के अवमूल्यित ना करब। ओम्में अंतकरन के विसादो-संवादो हवें ।

भोजपुरी में लोक ह त अत्याधुनिकतो हवे। लोकसंस्कृति से प्रेरित होखल या परंपरा से दम प्राप्त कइल एगो स्वस्थ प्रकृति क निदरसन ह बाकिर ओसे आगे बढ़िके अपन समय

व समाज पर दीठ गइल हमनी के अग्रगामी बनाई । सामाजिक चेतना के बगैर हमनी कई गो फूहर संवाद या स्तरहीन हास्य अथवा देह के अनर्थक प्रस्तुति से मुकाबला ना क पावल जाई । ई बात याद रखे के चाहीं कि राजनीति से अधिक दूर ले साहित्य जाला , यद्यपि दूनों में द्वंद्व देखल आजु के टाइम में नासमझी होखी। बस कहे के ई बा कि साहित्य, समाज, कला के राजनीति के उपनिवेस मानल गलत हवे। कई बेर राजनीति तात्कालिकता से पार ना पावे त साहित्य सदी- सताब्दी- अनंतकाल खातिर अंतरदीठ देला ।

एही से भोजपुरी साहित्य आ सिल्प पर ठीक से धियान जाए खातिर एगो वातावरन के निर्मिति आवश्यक हवे । अइसन माहौल बने कि जनसमाज आलोड़ित हो उठे कि बगैर अपन लिखित साहित्य के समझले, पढ़ले या अवगाहित कइले हमनी के एगो निस्चित तरह के बिबधर्मिता, गहराई आ थाती से वंचित रहि जाइल जाई। भोजपुरियो समाज कृषि समाज से औद्योगिक व जटिल समाज की ओर बढ़ चुकल बा। हमनी के अपन सांस्कृतिक संरच्छन खातिर अब वोही तरह के उपकरन चुने के होखी। भोजपुरी समाज के पास अथाह, अगाध आ स्मृति-परकता ह। हर संस्कृति में स्मृति समय क एगो मापदंड हवे। स्मृति ना त सच पूछीं त समय ना। भोजपुरी साहित्य आत्मा के जीवित प्रतिरूप ह।

सर्जनात्मक भोजपुरी साहित्य धरती आ आकास के दुर्लभ मेल हवे, जेम्में परिचित बंधुत्व के संस्पर्स हवे, गोधूलि के रंग हवे । ओम्में मूल के तलाश हवे आ केन्द्र - बिदु के खोज। ओम्में जटिलता, वेदना, आधुनिक कला आ अंतर्मन के आधार-वक्तव्य हवे। भोजपुरी ‘राज्य’ से अधिक ‘समाज पोसित ' हवे। ओम्में कण्ठ- स्वर से ले के नएपन के प्रक्रिया के अनेक रूप हवें। असली महत्व हवे - समाज में भोजपुरी के साहित्य-आलोड़न आ भासिक परिमार्जन। डॉक्टर सीताकांत महापात्र के सब्दन में- ‘साहित्य मंच के भासा हवे, मैजिक के भासा हवे। ई भावाभिव्यक्ति के नूतन मोड़ हवे, अपरिचित महादेस में नयका मील के पत्थर हवे ।

◆ ◆ ◆

डॉ. रवींद्र नाथ श्रीवास्तव

'परिचय दास',

नई दिल्ली

‘‘पुरान अखबार एह तरह से फेंकऽ मत, सहेज के रख द!’’ सोहन बाबू के ई कहला पर उनकर बेटा मोहन पूछलन, ‘‘पुरान अखबार कवना काम में आई ?’’

‘‘पुरान अखबारे ना, दोसरो पुरान चीज जोगा के रखे के चाहीं। पता ना, ऊ कब काम में आ जाए। पुरान अखबार तहिआवे, बिछावे चाहे जिल्द लगावे में काम आवेला।’’

‘‘हँ, ई बात त बा।’’ बाबूजी के बात मोहन के सही लागल। ऊ कहलन, ‘‘पुरान अखबार के जिल्द लगवला से ओकरा भीतर किताब नया के नया रह जाला।’’

‘‘एही से कहनी हँ कि पुरान समझ के फेंक मत, ओकरा के जोगा के रख !’’

‘‘बाबूजी ! एगो बात कहीं ? पुरान के जोगावल जब अतना जरूरी बा त दादा के गाँवे काहे भेजवा देले बानी ?’’ मोहन दादा के बारे में सोचे लगलन, ‘‘उहँवा ऊ एगो नौकर के भरोसे बाड़न। उनका के जोगावल जरूरी नइखे का ?’’

मोहन के बात सुन के सोहन बाबू सोच में पड़ गइलन। बाकी ऊ सोचे में समय बर्बाद ना कइलन। झट से गाड़ी निकललन आ मोहन आ उनका माई के गाड़ी में बइठा के कहलन, ‘‘हमनी के गाँवे चले के बा।’’

रात होत-होत सोहन बाबू गाँव से बाबूजी के ले के आ गइलन। बाबूजी के पलंग पर बइठा के उनकर गोर धोवत कहलन, ‘‘रउरा आ गइनी, अब हम निश्चित हो गइनी।’’

‘‘हम बूढ़ आदमी, तहार कवन काम करेब कि तू निश्चित हो गइल ?’

‘‘रउरा एह पलंग पर बइठल रहीं, राउर इहे काम बा।’’ सोहन बाबू उनकर गोर पर आपन माथ रख देहलन।

मोहन ओहीजा ठार रहस। ऊ झट से कहलन, ‘‘जब पुरान अखबार काम आ सकत बा त रउरा त घर के पुरनिये बानी।’’ उहो दादाजी के गोर पर आपन माथ रख देलन।

बगले में ठार मोहन के माइयो उनकरा गोर पर गिर पड़ली, ‘‘रउरा खाली आपन हाथ हमनी के माथ पर रखले रहीं, बस।’’

दादाजी तीनों के माथ पर हाथ रखत कहलन, ‘‘खुश रह !’’

◆ ◆ ◆

अंकुश्री
रांची, झारखण्ड

ठुमुकत चले दिहऽ

कोमल मासूम सनेहिया के
दूनो अँखियन में पले दिहऽ।
सरधा के सुघर सपन-शिशु के
अँगना में ठुमुकत चले दिहऽ ।

मन मनमानी से मानी ना,
मरजाद होत का जानी ना।
स्वारथ में एक झलक खातिर
छलि जा कहियो त छले दिहऽ ।

सुधि के गरमी बेशरमी से,
कुछ नरमी से हठधरमी से,
पघिलावे हठ के बर्फशिला,
बिन रोके-टोके गले दिहऽ ।

दियना दरदे के बारल बा,
तबहूँ अन्हियारा हारल बा,
ई सुरुज चान मड़ई के हऽ,
मति फूँकि बुतइहऽ, जले दिहऽ ।

पग में जग बेड़ी डलले बा,
कतना बतलाईं छलले बा,
जतना ताना सौगात मिलल,
सगरे 'संगीत' में ढले दिहऽ ।

◆ ◆ ◆

सुभाष पाण्डेय
प्रधान सम्पादक 'सिरिजन',
भोजपुरी ई पत्रिका

पावस गीत

मुअना बदरा घेरे, बरसे-कइसे अइहें साजना।
ना निकसेला केहू घर से-कइसे अइहें साजना।

बरसे बदरा दिन रात सदा सब लोग छिपे करि बन्द किवारी।
न जहाज उड़े नहि रेल चले नहि आवत जात दिखात सवारी।
सखि सावन में बड़ आस रहे अइहें सजना हरखात दुआरी।
सब आस डुबे एहि नीर मधे कइसे पिय आइ भरे अँकवारी।

जब गरजे त अपना गरजे
अपने तरजे, अपने नरजे
दूसर भलहीं तड़पे तरसे- कइसे अइहें साजना।

कजरी धुन कंठ भुलाइल बा झुलुआ सुसुके सब ओर निहारी।
बगिया नहि जासु कबो सखिया मुरझाइल गात फटी तन सारी।
खग गीत सुहात न तीत लगे मृदु बैन लगे अब पारत गारी।
भकसावन सावन के दिनवाँ अब भाड़ परे अतना पनियारी।

तनिक देर थथमे ना बिलमे
बस पानी बा पानी दिल में
ना लाजे, ना कवनो डर से- कइसे अइहें साजना।

कबहूँ पुरुआ कबहूँ पछुआ कबहूँ चउआइ चले ललकारी।
झिंगुरा झनकार कपार बथे ददुरा टरराइ रिगावत बा री।
दिनवें रतिया जस लागत बा रतिया त लगे बहुते करियारी।
उनके कुछ दोस दिहीं कइसे एहि हाल करीं कइसे बरियारी।

अरजी मिनती करीं निहोरा
तन करिया मनवो ना गोरा
बेरि बेरि मग रोके हरसे- कइसे अइहें साजना।

◆ ◆ ◆

बंद मुट्ठी

बंद मुट्ठी लाख कऽ बा , खुल गइल त खाक कऽ ।
चाहि के भी बढ़ ना पावे , तीन पत्ती ढाक कऽ ॥

आज ओही राह पर बा लोग बहुते चल रहल
कर्ज लेके घीव पियऽ ह कथन चार्वाक् कऽ ॥

हइ मिले हउहो मिले , यानी कि जे हहुआ गइल ,
बन के अइसन लोग रह जाला कुक्कुर रज्जाक कऽ ॥

दीपक जले तनिकी हवा में , ढेर में जाला बुता ,
ढेर कऽ चाहत सदा बन जाला फुंसी नाक कऽ ॥

आत्मिक संतोष कऽ बाटे पलानी ढह रहल
कंक्रीट कऽ बस छत उठावल जा रहल बा धाक कऽ ॥

◆ ◆ ◆

कृष्ण मुरारी राय
टुटुवारी , बलिया,
उत्तरप्रदेश

बन्हू अउरी सन्हू दूनू भाई में प्रेम एतना कि बुझइबे ना करे कि कबो अलगउजियो होई। लोग कहे कि "सन्हुआ का तीत लागेला त बन्हुआ पानी पियेला।" माने चोट चाहे केहू का लागे दुखाला दूनू भाई का। लेकिन नथुनी माने पेंचइलो के त अलगौजी करवावे में कौनो जोड़ ना रहे। अनासे लोग उनके 'पेंचइल' ना कहे। जहाँ ढुकि जासु विध्वंश कइए के निकलसु। कहे वाला उनके नीमन कहे चाहे बाउर कहे, 'पेंचइल' कहे 'कुचुरा' कहे उनका कौनो फर्क ना। पीठ पीछे त भगवानो के लोग गारी देला, फेरु उनके काहें लोग छोड़ि दी?

घरे बइठल-बइठल समूचा इलाका के एकदम सटीक जानकारी, दू चारि कोस के एरिया में सबके इतिहास, सबके काला चिट्ठा एकदम कंठस्थ। दुआरे हमेसा दस आदमी के मजमा लागले रहे। नियम क़ानून अउरी लगावला बझावला के कथा कहानी सुनावत लोग के मनोरंजनो करत रहसु। आपन कवनो कामो ना अउरी दूसरा के बाति से फुर्सतो ना, इहे त समाज सेवा ह।

अब बन्हू अउरी सन्हू में बेजोड़ भायवद्धी बा त एइसे पेंचइल का का फायदा ? उनका त फायदा तब बा नू, जब दुनो भाई में लाठी चले, कपार फाटे, दरखास्त पड़ो पुलिस आवे मिसिल बने मुकदमा होखो। लेकिन बन्हू सन्हू में जब कबो बिगड़बे ना करे, त का करसु? जब ना बन्हू-सन्हू के खोजसु ना सन्हू-बन्हू के त का बिगड़ी ? मालिक रहले बन्हू-सन्हू त एगो कारिन्दा रहले, दिनरात मेहनत करसु उपार्जन करसु अउरी रकम होखे त बेंचसु बन्हू। सन्हू का एहू से मतलब ना कि भइया का करत बाड़े ? भइया चाहें लीख से लाख क देसु चाहे लाख से लीख, सन्हू का कौनो मतलबे ना। लेकिन बन्हुओ सन्हू के बहुत मानसु बलुक अपना से बढ़ि के। लेकिन पेंचइल जब पड़ि गइले त ओहू बेचारू लोग के प्रेम के थाह लागि गइल अउरी दुइए चार महीना में अलगा हो गइल लोग।

बन्हू अउरी सन्हू के बीच अलगौजी करवावे में पेंचइल के बड़ी बड़हन हाथ रहे। जेतने भर पेंचइल कहले ओतने भर बन्हू कइले। अलगौजी के पंचाइत बइठल त पेंचइल हाराहरी सन्हू के घाटा के ही बाति बतियावसु। सुनि के सन्हू रिसिया गइले अउरी बाते-बात पर बात बढ़ि गइल। फेरु त दुनू जने में धरा-धरी नियरा गइल। सन्हुओ उनके भला बुरा कहले त उहो लगले संकल्प सुनावे कि "जो रे सन्हुआ,, जहिया मौक़ा मिल जाई, तोहके बर्बाद ना क दीहनी त हमहू इन्सान के औलाद ना। अलागौजी होइयो गइल लेकिन एकर सबसे अधिका मलाल बुढ़िये माई का रहे। ऊ त रोजे पानी पी-पी के पेंचइल के गरियावसु - "जो रे निरबसिया, तें हमार घर बिगड़ले तोर राम बिगाड़सु।" कबो बुढ़िया के गारी पेंचइल सुनि जासु त ऊहो प्रण करे लागसु "जो रे बुढ़िया, अबहिन तोके का भोगवनी अब भोगायेब। तोरी मुअला लास के ना सड़ा दिहनी त हमरो नाम पेंचइल ना।"

पेंचइल का सन्हू के गारी घोस अउरी भला बुरा कहला के बहुत बाउर लागल रहे। तब्बे से मौक़ा खोजसु कि कहीं तनिको मौक़ा मिलित त इनके ढंग से बतइतीं लेकिन सन्हू बेचारु अलगौजी की बाद आपन सहेजले में ब्यस्त रहले। उनका कहीं उठला-बइठला के फुर्सत कहाँ रहे कि केहू से कुछू बतियावसू अउरी उनके मौक़ा देसु। अलगौजियो भइले अब त एगो अरसा बीति गइल रहे, लेकिन पेंचइल के कृपा से दुनू भाई की बीच के दूरी अबो कम ना, महीना दू महीना में कम से कम एक दू बेर बोल-ठोल होइए जाउ। हालांकि झगड़ो कवनो हक – पद के ना, बस एगो मलाल।

अलगउजी में चूँकि माई सन्हू के बखरा पड़ल रहली त उनके जीयन वाला एक एकड़ खेतो सन्हुए के जिम्मे रहे। ओ खेत में ऊ गन्ना बोअले रहले अउरी हर साल बिना लागत के ही छतियाफार गन्ना होखे। गुड़-महीया से त घर भरि जाउ। खाये में अलम्फेंच, नाहीं त बन्हू के देखा-देखा के आस-पड़ोस, पर-पट्टीदारियो में देसु, रिश्तेदारियो भेजवावसु। सब लेहला-देहला का बादो हर साल दू सौ ढाई सौ पसेरी गुड़ बेंचबो करसु, लेकिन बन्हू भाई के एगो फूटल कौड़ियो ना देसु।

बस बन्हू अउरी बन्हू बो का एहिके हमेसा मलाल रहे अउरी ऊ लोग हमेसा चाकू पिजवत रहे कि "कहिया माई मरित कि इनके सदावर्त चलावल देखइतीं। जहिया माई मरि जाई तहिया पहिले जीयन वाला खेत में रस्सी तनाई ओकरी बादे दाह संस्कार होई। जबे बुढ़िया बीमार पड़े बन्हू के घरे कथा-पोथी हवन पूजन होखे लागे। देवता सब के भखौती होखे लागे कि "आजुये माई के मुआ द हे भगवान! जल्दी माई के उठा ल हे भगवान कि हमरो थरिया में महिया रोटी के महावर सजो।" लेकिन सब कथा-पोथी का बादो बुढ़िया जब जी जाउ त बन्हू के घरे मातम पसरि जाउ।

ओ साल सन्हू खेत में तनी खादर का डारि दिहले की ऊँखि एकदम गँसि गइल। रास्ता चले के समासीध ना। ई देखि के एने सन्हू के मोछि फरफराए लागल, त ओने बन्हू के घरे छाती पीटाए लागल, त एने इरिखा में बन्हू दुबराये लगले। वो साल त अनुमान रहे कि हर साल से डेढ़ गुना बेसी गुड़ बिकाई लेकिन दुर्भाग्य से अबे कोल्हुआड़ो ना गड़ाइल रहे तले कातिके में माई मरि गइल। अब का होखो? आधा राति के माई के घर में से निकालि के सन्हू लास का लग्गे बइठि के जार बेजार रोवे लगले।
सुनते बन्हू दूनू मरद मेहरारू के ख़ुशी का मारे छोहे छाती फाटि गइल। रोवत-गावत छाती पीटत दउरि पड़ले अउरी जाते सन्हू से अझुरा गइले।

"अरे निखुरका, रे निखुरका, हमरी माई के तें पतहर पर सुता दिहले बाड़े ? मुअलो पर इनके तें दुखे दे ताड़े। ई कुश एकरी पीठ में चुभ-चुभ गड़त होई ! रोजे कहत रहनीहँ कि रे माई, तें हमरे में रहु, ई तोके बहुत दुःख देता, लेकिन ओकरो आँखी परदा पड़ल रहल ह ! कब्बो हमार ना सुनी! जे धन रहले ह से सन्हुए रहल ह! जिनगी भर बेचारी एकरी साथे भूजा भुजवलसि ह अउरी दुखे काटत मरियो गइल।

मुअला का बादो ई निदर्दी एके दुखे देता। ले आ के ई कसाई घास-फूस पर पटकि देले बा।" बन्हू छोह के अइसन नजारा पेश
कइले कि ऊ रोअले त का भइल, उनके रोअत देखि के सियारो-कुक्कर रो दिहलें। बन्हू बो विलाप करत दउरल गइली अउरी पेटी में से एकदम नया चादरा ले आ के जमीन पर बिछाके दुनो बेकति मिलि के उठा के माई के ओइपर सुता दिहल लोग।

रोअल धोवल अउरी ढंड-कमंड क के दूनू बेकति अइसन उड़ल लोग कि खोजले ना मिले लेकिन सन्हूओ का बन्हू से कौनो गरज ना रहे। ऊ अकेले दाह संस्कार के ब्यवस्था में लागल रहले। लकड़ी ले आवऽ बाँस कटवावऽ कफन ले आवऽ विमान बनवावऽ। लगभग दू घंटा में सब तैयारी हो गइल, अब त विमान पर लास सुतावल जात रहे, तले आगे-आगे बन्हू अउरी पीछे-पीछे उनके दूनू बेटा एकदम रोस से भरल हाथे-हाथे डंटा लिहले आन्ही पानी के तरे आ धमकले- "माई अब्बे ना फुँकाई। पहिले जीयन वाला खेत के बखरा लागी तब फुँकाई।" सुनते सबलोग अवाक रहि गइल। अब का होखो? कतहूँ बन्हू-बन्हू बो कूदे लागल लोग त कतहूँ उनके दुनू लड़िका। गाँव के लोग आगे बढ़िके समझावे लागल लेकिन केहूके बतिए ना सुनसु। बस एके गो बतिये कि "ना एकदम ना, पहिले जीयन वाला खेत पर रस्सी तनाई, तब जाके माई फुँकाई।" बन्हू कूदि के जाके विमाने पर बइठि गइले।

ओकरे बाद कवनेंगा बुढ़िया फुंकाइल सगरी बतावल सम्भव नइखे लेकिन एतना जरूर बता दीं कि दुनू भाई में झगड़ा-झंझट, मार फौजदारी, मर मुकदमा सगरी भइल। दुआरे दू दिन ले लास पड़ल-पड़ल सड़ि गइल ओकरे बाद फुँकाइल लेकिन तबो बन्हू कजिया ले के मोहलत नाहीं दिहले दोसरे दिने अपनी बेटन के लिहले आ के दुआरे लगले गरजे "कान खोलि के सुनि ल, पहिले जीयन पर रसरी तनाई ओकरे बाद कजिया होई। शुद्ध मन से अब जीयन वाला खेत बाँटि द, ना त हमरा मुअलो जीयला के भीरि नइखे। एकदम कुण्ड बरसा देबि। शुद्ध मन से जीयन वाला खेत बांटि द।"
सुनि के सन्हूओ लगले गरजे-
"हम ना तहरी कुण्ड से डेराइल बानी ना पेंचइल के कुचुरई से। तूहूँ कान खोलि के सुनि लऽ, ऊख काटिए के खेत छोडबि। अगर तहरा ढेर मलाल बा त गटई के सिरा तुरला के कवनो जरूरत नइखे। पंचाइत करा लऽ देखीं कौन पञ्च तहरा के फसिल सहिते खेत बाँटि

देता?" लोगो बन्द्व के राय दिहल कि मारि झगरा से नीमन बा कि पंचाइत हो जाउ।

बस त साँझिये खान पंचाइत के डुग्गी बाजि गइल कि काल्हि दुपहर में पंचाइत होई। पेंचइल का सन्द्व के गारी के कसक निकाले के बेरा आ गइल रहे, बस देरी रहे त पञ्च बनला के। रातिये खान बन्द्व भागल पेंचइल के लगे गइले अउरी ढेर राति ले दूनू जने में अपनी फायदा के उपाय बनल। पेंचइल उनके समझवले कि "देखऽ बन्द्व, पंचाइत के मोल ना ह पंच के मोल होला। आपन पंच होई त आपन फायदा नाहीं त घाटा। लोग पञ्च बदे के कही त तूँ पहिलहीं झट दे उठि के हमरे नाव ध दीह। फेरू त हम सम्हारिये लेबि। बन्द्व पेंचइल के तरकीब पर एतना खुश रहले कि आफर-पर-आफर देसु। "नथुनी भाई, अगर खेत हमरा मिलि जाई त ओइमे असो जेतना मीठा होई तीसरी तहार रही।"

समूचे गाँव के लोग साँझ खान बरम बाबा के स्थाने जुटे लागल। पंचाइत के हल्ला एतना कि लोग जुटल त का भइल, लोग से अधिका त पिल्ला जुटि गइले। बुझाउ कि कुकुरनो में बन्द्व अउरी सन्द्व के गोल बँटि गइल बा। दूनू गोल में भौं-भौं अउरी काटाकाटी ओ तरे शुरू भइल कि ना सन्द्व के गोल दबें ना बन्द्व के। साँझ के बेरा चिरइयों आपन खोता में वापस आ गइल रहली। उनकी चहचह से त बरम बाबा वाला पीपर ओ तरे गुलजार रहे जैसे ए पंचाइत के जश्न मनत होखे। नीचे कुकुरन के काटाकाटी अउरी उपर चिरइन के कलरव से बुझाऊ कि उहाँ पंचाइत ना बरात आइल बा। गाँव के संभ्रांत से ले के पुरनिया ले सभे जुटल रहे। सभे मने मन बन्द्व के बाउरे कहे कि "बन्द्व का ए तरे ना करे के चाहीं, साल भर जब सन्द्वआ फसिल सेवले बा त दु चारि दिन खातिर हिस्सा कइसन ? गन्ना काटि के खेत बाँटि दी। लेकिन ई सरवा नथुनिया पेंचइल चले देउ तब नू ? दिनरात बन्द्वआ के कान भरत रहता, अउरी ई बुरबक का कुछु बुझाते नइखें। दिनरात ओहि के सीख-बुद्धि लेत बाड़े। उनका ई बुझाते नइखे कि ऊ इनके बनावत नइखे, बिलवावता।

पंचायत शुरू भइल। बिरिछा तिवारी कहे लगले "बन्द्व काहे खातिर पंचाइत जुटवले बाड़ऽ ?"

"बाबा, माई के एक एकड़ जीयन दीयाइल रहल ह। अब जब ऊ मरि गइल तऽ ओ खेत का बँटा जाए के चाहीं लेकिन सन्द्व के मन में बेइमानी आ गइल बा। "

"सन्द्व तूँहूँ कुछु कहबऽ?",,

"हँ बाबा, साल भर फसिल के पोसनी, पटवनी, खादर लादर दिहनी हम, अउरी तैयार भइल त अबे कइसे बाँटि दीं ? हम गन्ना काटिये के खेत छोड़ब बाकी पञ्च जौने कहिहें हमरा मंजूर बा। "

"का हो बन्द्व ? सन्द्व त ठीके कह ताड़े।"

"ना बाबा, सन्द्व के बाति हमरा मंजूर नइखे। अब जब पंचाइत होते बा त हो जाउ। हम पञ्च नथुनी भाई (पेंचइल) के बदत बानीं। " बन्द्व एके साँस में सब बोलि गइले।

"लेकिन तूँ कइसे पञ्च बदबऽ ? जब तहरे अउरी पेंचइल का सब क लेबे के रहल ह त पंचाइत काहे जुटवलऽ हऽ ? कऽ लेहले रहितऽ लोगें। गाँव के लोग जेके कही ऊ पञ्च बदी। सुनते पूरा पंचाइत के लोग हँसे लागल। ओकरी बाद बिरिछा तिवारी पंचाइत के लोग का ओरि घुमले - "के पञ्च बदी? बन्द्व की सन्द्व ? रउरा सभे बताईं ?" पंचाइत के लोग एके बेर बोलि उठल - "सन्द्व।"

सुनते बन्द्व बेचारू निरास हो गइले। तबले बिरिछा तिवारी बन्द्व कि ओर घुमले- "बन्द्व सुनि लिहलऽ ? पञ्च सन्द्व बदिहें।"

"लेकिन बाबा, हम नथुनी भाई (पेंचइल) के छोड़ि के दूसरा के पंचाइते ना मानेब।

"आरे कइसे ना मनबऽ ? गाँव से बाहर नइखऽ नू? चलऽ हो सन्द्व बोलऽ, तू के के पञ्च बदत बाड़।"

सन्द्व नीचे मूड़ी गड़ले बइठल रहले। "हँ चलऽ मुड़ी उठावऽ, बोलऽ के के पञ्च बदत बाड़ ?" सन्द्व ऊपर मुड़ी उठवले अउरी चारू ओर नजर दउरवले। पंचाइत देखि के उनका आँख से आँसू आ गइल। मने-मने भाई के धिक्कारे लगले। आजू भाई एइसन ना रहित त ई घर के इज्जत पंचाइत में लुटवला के का गरज रहल ह| सभे जानता कि एगो ऊ हवें अउरी एगो हम लेकिन तनीमनी खातिर भाई प्रेम के धागा तूरि दिहले। दु मिनट ले खूब सोचले तब कहले।

"आऽऽ,भाई जब दूसरा के बातिए ना मनिहें त दूसरा के पञ्च बदला के जरूरते का बा ? हमहूँ नथुनिये भाई (पेंचइल) के पञ्च बदि दे तानी। उहे जवन कहिहें हमहू मानी लेब |" सुनते सभे अवाक रहि गइल। "ई का कइलऽ सन्द्व, "बिलारि मछरी अगोरी नू? पेंचइलवे बन्द्व के चढ़ावता, अउरी तूँ ओही के पञ्च बना दीहल।"

पूरा पंचाइत में खुसुर-फुसुर होखे लागल।

लेकिन बन्हू के दिल बाग़ बाग़ हो गइल "हाँ हाँ,, ठीक बा, ठीक बा, हमहू मानि लेब। बन्हू का चाहल बाति जब पूरा होता त उनका ख़ुशी के ठिकाना ना रहल। अब त आधा गन्ना हमार अउरी आधा तोहार। अरमान पूरला के ख़ुशी का होला, उनका चेहरा पर साफ़ झलके लागल।

सभे लागल पेंचइल के मुँह ताके लेकिन पेंचइल पञ्च की कुरसी पर आपन नाम सुनते पहाड़ जइसन जिम्मेदारी से दबा गइले, उनके जमीर उनके धिक्कार उठल, पञ्च त भगवान होला। पञ्च की कुरसी पर बइठि के बेईमानी पाप होई। हमरी बेईमानी से घाटा सन्हू का होई फायदा बन्हू का होई लेकिन पाप हमरा पड़ी। हमरा नरको में जगह ना मिली। पञ्च न्याय के हिफाजत करे खातिर होले। लेकिन पंचे अगर न्याय के हत्या करे लगिहें त समाज में विद्वेष फैली, मार-काट मचि जाई। अगर बन्हू का ओर से बेईमानी करीं त सही में न्याय मरि जाई। काल्हि अगर हमरो लोग लइका के सामने ई बेईमानी करे लागल त का होई |" तरह-तरह के बाति सोचत उनकी मन में भयंकर द्वन्द उठल अउरी दस मिनट ले जब कुछु ना बोलले तऽ बिरिछा बाबा कहे लगले - "देख ये नथुनी, दूनू आदमी के बाति सुनि ल, अउरी तहरा जौन उचित लागे तौंन कहि दऽ।"

"बाबा एइमे पूछे के का बा ? दूनू आदमी के बाति सभे जानते बा लेकिन एइमे हम इहे कहेब कि "सन्हू बुढ़िया के जीयन वाला खेत अब्बे ना छोड़िहें। ई पंचाइत उनके खेत छोड़े खातिर माघ ले के समय देता। माने तीन महीना में ऊ खेत खाली क के आधा खेत बन्हू के दे देसु। सुनते पंचाइत में ताली बाजि गइल। सभे कहे लागल "सच में पञ्च के जगह पर बइठि के बेईमानी कइल बड़ी मुश्किल बा।"

◆ ◆ ◆

सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा

भठही बुजुर्ग, कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

दोहा

दूरी राखीं दुष्ट से, कबो ना राखीं मेल।
अवसर मिलते ही करी, कलह रार के खेल ।1 ।

मस्त रहीं हरखित रहीं, जिनगी जीं बिदास।
जिनगी त संघर्ष हऽ, काहे रहेम उदास ।2 ।

कोशिश करत रहीं सदा, फल के चिंता छोड़।
हिम्मत मत हारीं कबो, भागीं मत मुँह मोड़ ।3 ।

कई तरह के लोग बा,अजब-गजब व्यवहार।
कठिनाई के देख के, मानी कबो ना हार ।4 ।

जे जागी ओकरे मिली, धन-दौलत यश नाम।
ऊ जिनगी बेकार बा, करी ना जे कुछ काम ।5 ।

मन से नफरत त्याग के, सबसे राखीं प्रीत।
हँसत रहीं, गावत रहीं, सदा नेह के गीत ।6 ।

बहुत लोग सीधा दिखे, करे अधम के काज।
अइसन लुच्चा नीच के, तूती बोले आज ।7 ।

लोभी धन के चाह में, करे ढेर अपराध।
धन के लालच में सदा, खोजे ऊ लकुराध ।8 ।

नैतिकता अब ना रहल, स्वारथ में सब लीन।
सबकुछ बा घर में भरल, तबहूँ मन बा दीन ।9 ।

भाई के भाई लुटे, लुटे मित्र के मित्र।
कलियुग में ना रह गइल, नाता नेह पवित्र ।10 ।

दुराचार बा बढ़ गइल, लउकत नइखे नेह।
पइसा खातिर लोग अब, बेंच रहल बा देह ।11 ।

◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र
पश्चिम चम्पारण

भोजपुरी

कनक किशोर,
राँची(झारखंड)

कबीर के भाषा
सैकड़न बरिस पुरान भाषा
हमार माई भाषा भोजपुरी
कइसे समृद्ध होई?
सरकारी गैर-सरकारी संस्थान के
शान ना नू बन सके
हमरा संविधान में मान्यता जे नइखे।

रउवे सोचीं
हमरा अँचरा में का नइखे
रामायण, गीता, कुरान
गीत, कविता, ग़ज़ल
कहानी, उपन्यास, नाटक
शब्दकोश, व्याकरण,
आपन इतिहास
पचीस करोड़ बोलेवाला लोग
बिदेशो में मान्यता
बाकिर देश में आजो तरसत बानीं
मान्यता खातिर काहें?

हिन्दी त बहिन
बड़की छोट ना बोलब
ओकरा हमरा से विरोध कहाँ?
सदियन से एक दूसरा से
उधार पँइचा के संबंध
एक दूसरा के पूरक
बाकिर हिन्दी के पोसपुत्र
जेकरा हमरा मातृभाषा से चिढ़ बा
काम ना नाम खातिर
खड़ा बाड़ें विरोध में
काहें?
रउवा जानतानीं
अपना स्वार्थवश।

ओ पुरान संबंध के,
हिन्दी के अहित के बात करत बाड़ें
एकरे नाम राजनीति हऽ
ई एगो षड़यंत्र हऽ
भोजपुरी के मान्यता से दूर राखे के,
बाकिर उनका रोकला से ना रुकी
उनका तूरला से ना टूटी,
भोजपुरिया जागल
अब सब भागी
जे रास्ता रोकी
ऊ कहाँ रही, ऊ सोचो।

मान, प्रतिष्ठा, सम्मान
हमरो चाहीं,
कबतक बेवकूफ बनाइब
अब ना मानब
अब हार स्वीकार नइखे
जीत चाहीं
मान्यता चाहीं
लेब
हम भोजपुरियन के स्वभाव से
अवगत बा सभे
हारे तऽ हूरे
जीते तऽ थूरे
वाला जात हऽ,
मान जाईं
भीख ना अधिकार दे दीं
भोजपुरी माथे मान्यता के पगड़ी बान्हीं
हम रउवा माथे बान्हब
झुनझुना ढेर दिन बाजल
अब झुनझुना ना
अधिकार चाहीं
मान्यता चाहीं।

◆◆◆

जवानी में बहुत जगहीं आँखि लागल,आँखि लड़ल, आँखि गड़ा-गड़ा देखल गइल। लोगवो हमके आँखि गड़ा-गड़ा देखल, लोग के समान हमरां आँखी लागे त हमरो समान लोग के आँखी लागे, बहुत बेर आँखि लाल भइल कबो रीसि में त कबो किरकिरी परला से, त कबो आँखि उठला से, त कबो आँखि अइला से।

एने बुढ़ौती में कई-कई राति आँखि पर आँखि नइखे सटत माने आँखि नइखे लागत। दूसरा से त बतिये छोड़ीं अपने आँखि के ई हालि बा, अँखिये अँखिये में राति कटि जाता। अब जेही नाहीं सेही आँखि देखा के चलि जाता आ हम आँखि मूनि के सहि ले तानी। पहिले जे आँखि नचा-नचा बतिआवे, ऊहे अब कुछु कहला पर आँखि तरेर ता। जे आँखि में बसावे के कहत रहे उहे अब आँखि देखावऽ ता। जेके आँखी के पुतरी बना के रखनी ऊ आँखि के किरकिरी बूझऽता।

राति तनिसा आँखि झपकुवे तऽ एगो पुरान अँखिदेखाव बाति मन परि गउवे। गाँव में रमेसर काका रहलें बड़ा मजकिया, लइका, सेयान, बूढ़, जवान, मरद, मेहरारू केहुए से मजाक करें आ सभे उनहूँ से मजाक करे। कई बेर आँखि लड़वले आ आँखि गड़वले भा आँखि मिलवले के चक्कर में आपन दुर्गति करा भइल रहलें बाकि अजुओ बानि नाहीं छूटल रहे।

एक दिन भोरहीं में गनेश काका के लइका चलबिधरा आँखी पर बड़का करिक्का चश्मा लगा के चलि जात रहे, दुआर बहारत रमेसर काका के पाँव लगलसि त असिरबाद देते काका पूछलें- "का रे चलबिधरा बिहनइयें ई करिक्का ढोंका काहें लगा लिहलेबाड़े?"

"आँखि आइल बा काका!" चलबिधरा ज़बाब दिहलसि त काका कहलें- " तोर आँखि चलि जाउ।"

"ए काका माने आँखि ऊठल बा।"

"त तोर आँखि बइठि जाऊ।"

अब ई आँखी के बाति एतना आगे बढ़ि गइल कि पूरा गाँव जुटि गइल, केहू आँखि तरेरे लागल, केहू आँखि देखावे लागल, केहू आँखि लाल पियर करें लागल, केहू- केहू के आँखी में खटके लागल। ओही भीड़भाड़ में कुछु आँखि मटकउलि करे वालन के भी अच्छा मौका मिलि गइल। चलबिधरा के बपसी चलबिधरा के आँखि मारि के बोलला से रोकलें आ रमेसर काका से कहलें कि- "अजुसे हमरे लइका के आँखि मति देखइहऽ ना त तोहार आँखि निकारि लेब।"

एही बिचे समुझावन बाबा लाठी ठेघत आ गइनी आ आवते कहनी कि तोहनी के आँखि (नजरी) के पानी गिरि गइल बा। केहू के आँखी से पानी निकारत में तनिको लजात नइखऽ जा, ए तरे तऽ गाँव के इज्जत बाकी गाँव के आँखी से उतरि जाई। बाबा के बाति के असर भइल लोग आपन आँखि नीचे कइले अपने-अपने घरे गइल।

अब तऽ हमरा इहे बुझाता कि दुनिया के सगरे सुख अँखिये से बा लेकिन आँखी के सगरे बैपार बाउरे बा जइसे कि आँखि के आइल बाउर, आँखि के गइल बाउर, आँखि के ऊठल बाउर, आँखि के बइठल बाउर, आँखि के लागल बाउर, आँखि के लगावल बाउर, आँखि के चलल बाउर, आँखि के चलावल बाउर, आँखि उठावल बाउर, आँखि देखावल बाउर, आँखि के मिलल बाउर, आँखि के मिलावल बाउर। अब ई कुलि अनाप-शनाप लिखला से हम रउवाँ सब के आँखि के किरकिरी मति बनि जाईं भा काँटा जइसन करके मति लागीं एहीसे दसों नोह जोरि के क्षमा माँगत लिखल बन करऽ तानी। हमरो आँखि झपकऽतिया। बिहने जे पढ़वइया होई ऊ आँखि गड़ा-गड़ा पढ़ी, जे अँखिगर होई। एसे निहोरा बा कि जवन-नीमन बाउर ए लेख में लउके ओके हमरो सोझा उजागर करी। सब पढ़वइया सब के राम राम। भगवान सबके आँखि जांगर नीक रखले रहें।

◆◆◆

मदनमोहन पाण्डेय
कुशीनगर,उत्तरप्रदेश

तोहराँ कवनो गतरे लाज नइखे

ए मर्दे तूँ बड़ा निघरघट बाऽड़ऽ हो,
तोहराँ कवनो गतरे लाज नइखे॥

तूँ आवे लऽ, बतियावे लऽ,
अपने बाप लोग के देखावे लऽ कि
तूँ बड़ा भोला बाड़ऽ।
तोहार चाल देखि के का कहीं, दुनिया देऽखऽ ता,
हम तऽ बूऽझिलें, तूं बड़का भारी,
लोला बाड़ऽ॥

हम भोजपुरिया गँवार बानी त का हऽ,
तोहरा हुशियारी के हमराँ कवनो अकाज नइखे॥

बनूखि, बम आ गोला से,
प्रेम के पहाड़ा ना लिखाई।
पान खा के थुकला से,
द्वेष के गड़हा ना भराई॥

दिल के दूरी मेटावे के बा, त दिल के बाति सूनऽ।
गफलत में परल बाऽड़ऽ, तोहरां अबे अंदाज नइखे॥

साधू बाबा पर कुक्कुर ललकारऽ तारऽ,
ई बाति ठीक नइखे, लवटि के तोहरो के काटी।
हमार लूटी त ठीक बा हम सहि लेब,
बाकी लवटि के तोहरो से बाँटी॥

तूँ बूझऽ तारऽ अइसहीं गाजत रहबऽ,
तोहरा खातिर कवनो गांज नइखे॥

बहुत भइल, रहे द कैसेट बदलऽ,
आखिर कहियो बदलही के परी।

कुछु अमन के गीति गवनई होखे द,
का तोहरा लगे अइसन कवनो साज नइखे।
ए मर्दे तूँ बड़ा निघरघट बाडऽ हो,
तोहराँ कवनो गतरे लाज नइखे॥

◆ ◆ ◆

मदनमोहन पाण्डेय
कुशीनगर,उत्तरप्रदेश

पर्यावरन

नीम की डार पर
माई झुलुआ झुलेली
पीपर
छछात वासुदेव हउवन
उनुके
शीतल छाँह
असीस देला
पूरा गाँव के
बरगद की
पतइन की
थिरकन पर
झूमेला
गँवई मन
पेड़ बाहि ह
धरती के
उनके मति काटीं
नदी-
जीवनदायिनी हई,
पाप हरेवाली हई
उनके कूड़ादान
मत बनाईं
पहाड़न के
उघार मति करीं
हवा-
अल्हड़, अलमस्त, स्वछंद
प्राणवायु
बिखइला मत करीं
हरीतिमा जनि हरीं
ई सब प्रकृति के संतान ह
उनुका से
उनुके ममता मत छिनीं
आखिर
गंधयुक्त पृथ्वी,
रसयुक्त जल,
स्पर्शयुक्त वायु,
शब्दसहित आकाश
रउरी दुनिया के सुंदर
आ रउरा हर दिन के
मंगलमय बनावत रहेला।

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव

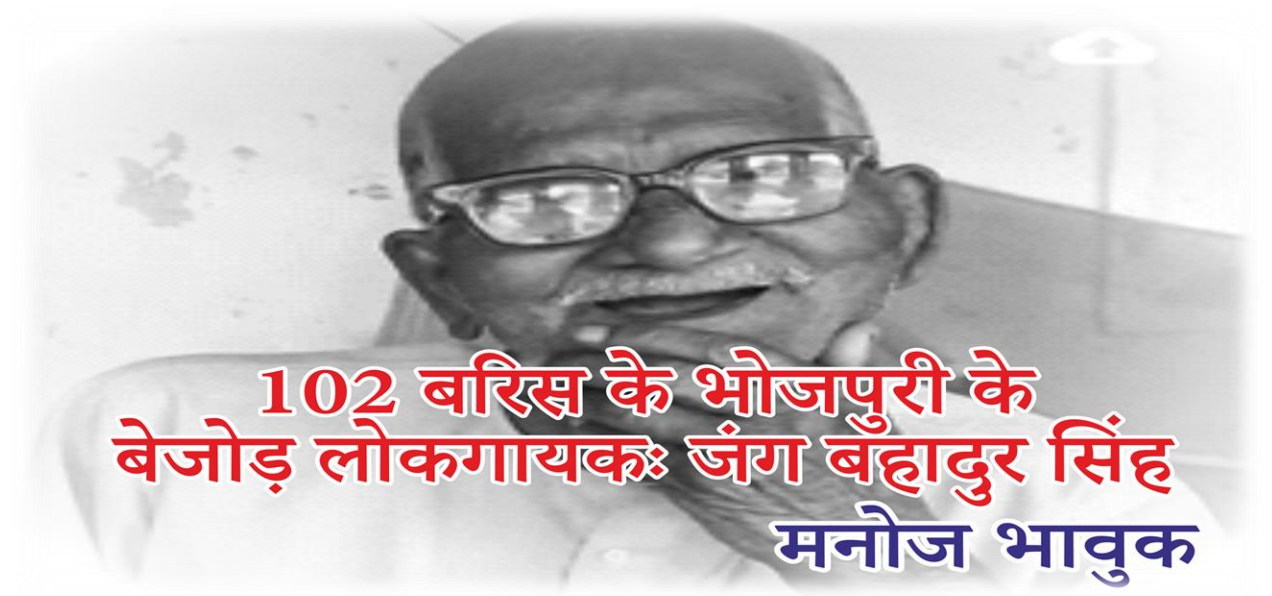

102 बरिस के भोजपुरी के बेजोड़ लोकगायकः जंग बहादुर सिंह

मनोज भावुक

अगर समय के कागज पर ना उतारल जाव त ऊ हवा हो जाला आ हवा के बात केहू पतियाला ना। ना लिखइला से, ना रिकार्ड भइला से बहुत सारा दिग्गज लोग के कहानी गुमनामी के गर्त में समा जाला। आज हमनी के हाथ में इतिहास उहे बा जवन कहीं गुफा-कन्दरा में भित्ति चित्र के रूप में उकेरल गइल, कहीं कलाकृति के रूप में माटी में धँसल मिलल, कहीं भोजपत्र, कपड़ा भा कागज भा देवाल पर लिखल पांडुलिपि के रूप में भेंटाइल भा मुँहामुही मुँहजुबानी एक जेनरेशन से दूसरा जेनरेशन होत मिर्च-मसाला मिलत कसहूँ बाँचल रह गइल। कहे के माने जवन लिखाई भा सहेजाई, उहे इतिहास बनी आ सदियन तक जीवित रही। जवना के कवनो रिकॉर्ड ना रखाई, ऊ पहिले के होखे चाहें वर्तमान के, कबो खतिहान ना बन पाई। जबले इंसान आ ओह दौर के लोग जियत बा तबले त ऊ स्मृति में रही बाकिर जदि ऊ किवदंती में, लोक-कथा में आगे ना बढ़ल त असहीं बुता जाई जइसे रेत पर बनल कवनो चिन्हासी एगो लहर के अइला के बाद मिट जाला।

भोजपुरी लोकगायकी के इतिहास में अइसन बहुत गायक भइलें जेकर ना त कवनो कैसेट रिकॉर्ड भइल, ना कवनो ऑडियो-वीडियो बा, ओह में से बहुत लोग मरियो-बिला गइल; जेकर केहू नामलेवा नइखे। दू- चार लोग जीवित बा त ओह लोग के आर्काइव करे के जरूरत बा। आज हम बात करत बानीं भोजपुरी के लोकगायक जंग बहादुर सिंह के जे साठ-सत्तर के दशक में झरिया, धनबाद, आसनसोल धइले कलकत्ता ले अपना गायकी से हलचल मचा देले रहलें। आयोजक लोग के पोस्टर पर इनकर उपस्थिति ओइसने रहे, जइसे जलेबी के साथे सजाव दही के छाल्ही।

कुश्ती के अखाड़ा के साथे सुर के दाँव पेंच में माहिर रहलें जंगबहादुर सिंह

सिवान के रहे वाला जंगबहादुर सिंह के जन्म 10 दिसंबर 1920 के भइल। 102 बरिस के अवस्था में भी टनकार आवाज रखेवाला जंगबहादुर बाबू के जवानी कुश्ती अउरी गायकी में गुजरल। जंगबहादुर सिंह भैरवी आ रामायण के ओ बेरा के बेजोड़ गायक रहलें। पहिले त खूब शारीरिक वर्जिश भइल आ कुश्ती में पहलवान के ऊ धोबिया पछाड़ खियवलें। बाद में जब लोकगीत गवनई के नशा चढ़ल त फेर आपन भारी अउरी ऊँचा स्केल वाला आवाज में एक से बड़ एक प्रसंग आधारित गायकी से लोग के मंत्रमुग्ध कइलें। जंगबहादुर सिंह के ई सवख अइसन रहे कि एगो गोड़ आसनसोल, सेनरैले साइकिल फैक्टरी में रहे त दूसरा गाँवे। गाँवे माने कौसड़ सिवान। ऊ आसनसोल में तब नौकरी करस। आज जेंगा गायक लोग यूट्यूब, डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफ़ॉर्म पर गा के भा लाखों लाख रुपया कॉन्सर्ट के लेके राजा अउरी सिलेब्रिटी स्टेटस पा लेता लोग, तब अइसन ना रहे। तब स्वांतः सुखाय गीत-गवनई होखे। केहू केहू ओकरा खातिर नेग में कुछ दे देव त ऊ बड़ कमाई मानल जाव। बाकिर ताली, वाहवाही से ही पेट भरे के पड़े।

जंगबहादुर बाबू के प्रसिद्धि बढ़ल त आसनसोल के आस-पास के एरिया झरिया, धनबाद, बोकारो में महफिल जमे लागल। बाकिर उनकर गायन प्रोफेशनल ना रहे आ ना ही ऊ कैसेटिया युग (कैसेट कंपनी के युग) रहे। एह से गायन से आमदनी के रूप में वाहवाही आ तालिए भर रहे।

नोकरी-चाकरी से तेरहे-बाइस। बाद में परिवार के बोझ, जिम्मेवारी के एहसास आ पइसा के जरूरत उनका के गायन से दूर करत गइल। अइसे त भोजपुरिया समाज के अधिकांश प्रतिभा के सारांशतः इहे दास्तान बा कि ऊ रोजी-रोटी यानि कि नोकरी-चाकरी के बलि-बेदी पर अपना प्रतिभा या शौक के आहुति दे देले बाड़न। बाकिर बाबू जंग बहादुर सिंह के साथे एगो आउर मजबूरी रहे। गला आ आँख के तकलीफ के कारण डाक्टर के मनाही। बाबू जंग बहादुर सिंह जब टाँसी लेस त माइक के बिना ही आसपास के चार गाँव में आवाज गूँज उठे। खास क के भैरवी गायन में त समा बान्ह देस। आजो, उम्र के एह ढलान पर भी उनकर आवाज आ राग-सुर-लय पर पकड़ देख के सहजे यकीन हो जाला।

जंगबहादुर बाबू के समकालीन कुछ लोक गायक आ व्यास लोग के नाम बा बच्चू मियाँ, बच्चन मिसिर, वीरेंदर सिंह (छपरा), वीरेंदर सिंह धुरान (बलिया), राम इकबाल जी (गाजीपुर), तिलेसर जी (आरा), रामजी सिंह व्यास (बलिया), गायत्री ठाकुर, श्रीनाथ सिंह आ नथुनी सिंह। अपना दौर के प्रसिद्ध अउरी हर एक के जुबान पर रहेवाला ई गायक लोग में से अधिकांश लोग स्वर्गवासी हो गइल बा अउरी जे जीवित बा ओकर भी उम्र सौ के लगे पहुँच रहल बा। ए में से कुछ लोग के गावल गीतन के रिकॉर्डिंग भइल बा, कुछ लोग के प्रोग्राम के वीडियोग्राफी के यूट्यूब पर आर्काइव भी कइल जाता। बाकिर जदी बिहार के कला अउरी संस्कृति विभाग अपना संसाधन के इस्तेमाल करके शोध करके, ढूंढ के एह सब के जुटावे जइसे असम, गुजरात जइसन राज्य में हो रहल बा त का बात रहित।

जंगबहादुर बाबू बतावेनीं कि जब उहाँ के तीस-चालीस बरिस के रहीं त ओह टाइम जब गाना गावे लागीं त लोग पर्ची लिख के भेजे कि खाली गावहीं के नइखे, कुछ पोज भी देखावे के बा। गावे में एतना आनंद मिले कि ओह में डूब जाईं। गावत में एक्शन में रहीं।

लोक गायक भरत शर्मा व्यास आ भारतीय हॉकी टीम के कोच हरेन्द्र सिंह भी जंगबहादुर बाबू के गायिकी के मुरीद रहीं।

भारतीय हॉकी टीम के कोच हरेन्द्र सिंह बतावेनीं कि "मै खुशनसीब लोगों में से हूँ कि मैंने बचपन में अपने गाँव बंगरा, छपरा में जंग बहादुर बाबू का चइता सुना है और उन्हें अपनी आँखों से देखा है। गाते समय झाल बजाने की उनकी कला का मुरीद हूँ मै।"

सुप्रसिद्ध भोजपुरी लोकगायक भरत शर्मा व्यास जी तब गायिकी के शुरुआते कइले रहनीं। उहाँ के ओह समय के याद करत भावुक होके कहेनीं कि "सबसे पहिले हम गायक जंग बहादुर बाबू के प्रणाम करत बानीं काहें कि हमनीं से सीनियर रहनीं आ ओह ज़माना के अपने आप में एगो उहाँ के नाम लिहल जात रहे गायिकी में। जब कलकत्ता से हम आईं कोलफील्ड में आ जब मिलीं उहाँ से त हमार आ उहाँ के गाना-बजाना होखे। ओह घरी उहाँ के अतना बढ़िया गाईं, खासकर के भैरवी कि का कहीं। .... आ सबसे ख़ुशी के बात ई बा कि पुरनका गायक लोग में सब केहू चल बसल आ जंग बहादुर बाबू सौ बरिस के उमिर में भी स्वस्थ बानीं।"

गायकी लाइन में कइसे अइनीं ? ...... एह सवाल पर जंगबहादुर बाबू एगो रोचक घटना के जिक्र करेनी "एक जगहा एगो व्यास पर दूगो व्यास भीड़ल रहलें। हमरा से ना देखल गइल त जे व्यास अकेले रहलें उनका ओर से हमहूँ कुछ कढ़ावे लगनीं। अपोजिट पार्टी के दुनों व्यास जी लो के बुरा लागल। ऊ लोग हमरे इलाका के रहे लोग। बाद में चैलेन्ज हो गइल कि ओह लोग के हरावे के बा। त अउरी रियाज में डूब गइनीं। गवनई में त कई बार अइसन भइल बा कि राम इकबाल जी, तिलेसर जी आ रामजी सिंह व्यास एक साइड से आ हम एक साइड से। .... कई बेर ! ओह लोग के देख के हमार हिम्मत आउर बढ़ जाव। .... आ जब तीन पर भारी पड़ीं आ लोग के ताली बाजे त पूछहीं के ना रहे।"

कथा-कहानी बतावत-बतावत जंग बहादुर बाबू गाना गावे लागत बानीं – "हमनी के हईं भोजपुरिया ए भाई जी / अखाड़ा में जाइले, मेहनत बनाइले, कान्हवा प मलि-मलि धुरिया ए भाई जी''

फेर अपना पहलवानी के दिन के बात मन पारे लागत बानीं- "हम शरीर के बड़ा छोट बाकिर लड़े के ख़ूब शौक रहे त कलकत्ता आ कोलफील्ड एरिया में लड़े लगनीं। लोग कहे कि हम बनारस के नन्हकू जी लेखा लड़ीं। तीन कुंतल के पहलवान से भी हम लड़ल बानीं। तब दू हफ्ता में तीन किलो

नोकरी-चाकरी से तेरहे-बाइस। बाद में परिवार के बोझ, जिम्मेवारी के एहसास आ पइसा के जरूरत उनका के गायन से दूर करत गइल। अइसे त भोजपुरिया समाज के अधिकांश प्रतिभा के सारांशतः इहे दास्तान बा कि ऊ रोजी-रोटी यानि कि नोकरी-चाकरी के बलि-बेदी पर अपना प्रतिभा या शौक के आहुति दे देले बाड़न। बाकिर बाबू जंग बहादुर सिंह के साथे एगो आउर मजबूरी रहे। गला आ आँख के तकलीफ के कारण डाक्टर के मनाही। बाबू जंग बहादुर सिंह जब टाँसी लेस त माइक के बिना ही आसपास के चार गाँव में आवाज गूँज उठे। खास क के भैरवी गायन में त समा बान्ह देस। आजो, उम्र के एह ढलान पर भी उनकर आवाज आ राग-सुर-लय पर पकड़ देख के सहजे यकीन हो जाला।

जंगबहादुर बाबू के समकालीन कुछ लोक गायक आ व्यास लोग के नाम बा बच्चू मियाँ, बच्चन मिसिर, वीरेंदर सिंह (छपरा), वीरेंदर सिंह धुरान (बलिया), राम इकबाल जी (गाजीपुर), तिलेसर जी (आरा), रामजी सिंह व्यास (बलिया), गायली ठाकुर, श्रीनाथ सिंह आ नथुनी सिंह। अपना दौर के प्रसिद्ध अउरी हर एक के जुबान पर रहेवाला ई गायक लोग में से अधिकांश लोग स्वर्गवासी हो गइल बा अउरी जे जीवित बा ओकर भी उम्र सौ के लगे पहुँच रहल बा। ए में से कुछ लोग के गावल गीतन के रिकॉर्डिंग भइल बा, कुछ लोग के प्रोग्राम के वीडियोग्राफी के यूट्यूब पर आर्काइव भी कइल जाता। बाकिर जदी बिहार के कला अउरी संस्कृति विभाग अपना संसाधन के इस्तेमाल करके शोध करके, ढूंढ के एह सब के जुटावे जइसे असम, गुजरात जइसन राज्य में हो रहल बा त का बात रहित।

जंगबहादुर बाबू बतावेनीं कि जब उहाँ के तीस-चालीस बरिस के रहीं त ओह टाइम जब गाना गावे लागीं त लोग पर्ची लिख के भेजे कि खाली गावहीं के नइखे, कुछ पोज भी देखावे के बा। गावे में एतना आनंद मिले कि ओह में डूब जाईं। गावत में एक्शन में रहीं।

लोक गायक भरत शर्मा व्यास आ भारतीय हॉकी टीम के कोच हरेन्द्र सिंह भी जंगबहादुर बाबू के गायिकी के मुरीद रहीं।

भारतीय हॉकी टीम के कोच हरेन्द्र सिंह बतावेनीं कि "मै खुशनसीब लोगों में से हूँ कि मैंने बचपन में अपने गाँव बंगरा, छपरा में जंग बहादुर बाबू का चइता सुना है और उन्हें अपनी आँखों से देखा है। गाते समय झाल बजाने की उनकी कला का मुरीद हूँ मै।"

सुप्रसिद्ध भोजपुरी लोकगायक भरत शर्मा व्यास जी तब गायिकी के शुरुआते कइले रहनीं। उहाँ के ओह समय के याद करत भावुक होके कहेनीं कि "सबसे पहिले हम गायक जंग बहादुर बाबू के प्रणाम करत बानीं काहें कि हमनीं से सीनियर रहनीं आ ओह ज़माना के अपने आप में एगो उहाँ के नाम लिहल जात रहे गायिकी में। जब कलकत्ता से हम आईं कोलफील्ड में आ जब मिलीं उहाँ से त हमार आ उहाँ के गाना-बजाना होखे। ओह घरी उहाँ के अतना बढ़िया गाईं, खासकर के भैरवी कि का कहीं। .... आ सबसे ख़ुशी के बात ई बा कि पुरनका गायक लोग में सब केहू चल बसल आ जंग बहादुर बाबू सौ बरिस के उमिर में भी स्वस्थ बानीं।"

गायकी लाइन में कइसे अइनीं ? ...... एह सवाल पर जंगबहादुर बाबू एगो रोचक घटना के जिक्र करेनी "एक जगहा एगो व्यास पर दूगो व्यास भींड़ल रहलें। हमरा से ना देखल गइल त जे व्यास अकेले रहलें उनका ओर से हमहूँ कुछ कढ़ावे लगनीं। अपोजिट पार्टी के दुनों व्यास जी लो के बुरा लागल। ऊ लोग हमरे इलाका के रहे लोग। बाद में चैलेन्ज हो गइल कि ओह लोग के हरावे के बा। त अउरी रियाज में डूब गइनीं। गवनई में त कई बार अइसन भइल बा कि राम इकबाल जी, तिलेसर जी आ रामजी सिंह व्यास एक साइड से आ हम एक साइड से। .... कई बेर ! ओह लोग के देख के हमार हिम्मत आउर बढ़ जाव। .... आ जब तीन पर भारी पड़ीं आ लोग के ताली बाजे त पूछहीं के ना रहे।"

कथा-कहानी बतावत-बतावत जंग बहादुर बाबू गाना गावे लागत बानीं – "हमनी के हईं भोजपुरिया ए भाई जी / अखाड़ा में जाइले, मेहनत बनाइले, कान्हवा प मलि-मलि धुरिया ए भाई जी"

फेर अपना पहलवानी के दिन के बात मन पारे लागत बानीं- "हम शरीर के बड़ा छोट बाकिर लड़े के ख़ूब शौक रहे त कलकत्ता आ कोलफील्ड एरिया में लड़े लगनीं। लोग कहे कि हम बनारस के नन्हकू जी लेखा लड़ीं। तीन कुंतल के पहलवान से भी हम लड़ल बानीं। तब दू हफ्ता में तीन किलो

बेदाम खाके रोज हजार गो दंड-बइठक मारीं। सामने वाला पहलवान बलवान रहलें बाकिर लड़े खातिर कायदा आ फूर्ती नू चाहीं। पहलवानिए प हमार नोकरी लागल रहे। कोलफील्ड एरिया में हमरा भाई मजदूर नेता रामदेव सिह के बॉस हमरा के कुश्ती चैलेंज खातिर भर्ती कइले रहलें बाकिर हमार छोट देह आ सामने वाला पहलवान के तीन कुंतल के देह देख के घबड़ाइल रहलें। उनका हमरा प भरोसा ना रहे। खैर, सामने वाला पहलवान के तीन-तीन आदमी जांघिया चढ़ावे। बंगलिया कहऽसन कि बाबा रे बाबा, ई देह पर गिरेगा तो छोटका पहलवान दब के मर जाएगा। बाकिर जब ओह तीन कुंटल वाला के चारो खाना चित्त क देनीं त यूपी-बिहार के लोग ख़ुशी से पागल। हमरा के पूर्वांचल के शेर घोषित क देलस। ओकरा बाद बंगाल में कई जगे हमार दंगल भइल। पार्क सर्कस में भी कई बेर कुश्ती भइल बा।"

पहलवानी छोड़ काहे देनीं ? .... के जबाब में जंग बहादुर बाबू बतवनीं कि, " ड्यूटी करत पहलवानी कइल मुश्किल हो गइल रहे। ... आ गायिकी में ज्यादा रस आवे लागल। देखनीं कि गायिकी में जिला-जिला के जिल्लावाही होता, दूगोला होता त एहू में दंगले बा। त एह दंगल में हमरा ज्यादा आनंद आवे लागल। रामायण आ देशभक्ति गीतन में हम डूबे लगनीं। बलिया वाला धुरान जी के साथे रामायण में कई बार हमार दूगोला भइल बा। रात-रात भर रामायण होखे। पब्लिक के प्यार आ डिमांड बढ़े लागल त मनवो बढ़े लागल। भोजपुरी के कई गो विधा निर्गुण, पुरबी, देशभक्ति आदि गाईं।"

जंग बहादुर बाबू फेर गुनगुनात बानीं, "हम हम करेलऽऽ विचार तोहार फेल बा / झमेल कवना काम के, जाए के अकेल बा"।

हम पूछनीं, "राउर त पढ़ाई-लिखाई भी कवनो ख़ास नइखे। एतना बड़ा-बड़ा गाना रउरा इयाद कइसे रहेला?"

एह से (गायिकी से) एतना ना प्रेम हो गइल रहे .... आ कुछ माई के कृपा भइल त बस सब होखे लागल। ..... अभियो कवनो कलाकार के, गायक के देखेनीं त मन बेचैन हो जाला।

एकरा बाद जंग बहादुर बाबू वीर अब्दुल हमीद आ सुभाष चन्द्र बोस जइसन शख्सियत पर गीत सुनवनीं। सीता हरण आ कौशल्या हरण पर गीत सुनवनीं।

हम पूछनीं- एह घरी के गायिकी पर का कहेम ?

जबाब मिलल- फुहर-पातर ना गावे के चाहीं। हमनीं के कबो ना गवनीं।

जंग बहादुर बाबू लोक गीत के समुन्दर बानीं। बहुत कंटेंट बा उहाँ के पास। सुनला से ओराई ना। लोक गीत के खजाना बा। समुन्दर में से बुझीं जे बस एक लोटा पानी निकलले बानीं। बस लोटा भर पानी बा ई बतकही।

अंत में एगो गजल सुनवनीं जवन ओह बेरा बड़ा लोकप्रिय रहे -

आईं-आईं हहरला में कुछु नइखे
ए जमाना से डरला में कुछु नइखे
आईं करे के बा तवन कर लीहल जाव
रोजे-रोजे सँपरला में कुछु नइखे
तोपले चीज के तोपले रहे दीं
एकरा के उघरला में कुछु नइखे
गाजी कविता ना हवे ठिठोली हवे
खाली दाँत के चिअरला में कुछु नइखे

एह बातचीत के दौरान उहाँ से बतियावत आ उहाँ के गीत सुनत हम ई महसूस कइनीं कि अगर समय पर इहाँ के गायिकी रिकॉर्ड भइल रहित त आज हिन्दुस्तानी गायिकी में जंग बहादुर सिह एगो गुमनाम नाम ना रहित।

◆ ◆ ◆

मनोज भावुक

(भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक, अचीवर्स जंक्शन के निदेशक, टीवी पत्रकार आ सुप्रसिद्ध कवि हईं।)

जीवन-मृत्यु

जीवन मरघट तक ले जाई।
मउगत मंगल मोद मनाई॥

पाँच तत्त्व के मानुख के तन।
तामे लोभ मोह के बंधन।
साँस आस बरियार झमेला।
अमर आत्म बस एक अकेला।
पीहर डेरा चार दिवस के-
पीघर बा असली अँगनाई॥

जीवन क्षणभंगुर भव भौतिक।
मौत जगत के सार अलौकिक।
मृत्यु सत्य के बोध करावे।
जीव झूठ अवरोध फँसावे।
दंभ दाप तम के घेरा में-
मनई ता जीवन छपटाई॥

हाय हाय में दिन ओराता।
माया कारन नैन लोराता।
भ्रात बहन अउ पितुवर माता।
स्वारथ के बस रिश्ता नाता।
धन दउलत कछु काम न आई
देह संग में ना कछु जाई॥

जी के गरदन कंठी माला।
मौत नाम सुनि के डरि जाला।
लोग कहेला मउगत सदगति।
तब जीवन में का भय भ्रममति।
काहे खातिर रोआ रोहट-
काल एक दिन जब ले जाई॥

◆◆◆

अमरेन्द्र कुमार सिह
सह-सम्पादक,सिरिजन

बलिदानी बैकुण्ठ शुक्ल

भगत सिह, सुखदेव, राजगुरु, अइसन बीर सपूतन के।
फाँसी के फंदा पहिरवलस, जे पापी साक्षी बन के।
ओकर चीर करेजा ओके, दिहलसि फल गद्दारी के।
गाथा आज सुनावत बानीं, ओही पूज्य कटारी के।

सन् उनइस सौ सात, मई के, बुध पनरह तारीख रहे ।
देश रहे परबस टूवर अस, बेबस कठिन कलेश सहे।
दुख के भकसावन अन्हियरिया में उजास कुछ लउके ना |
तिल- तिल मूवत स्वतन्त्रता के,आस-साँस कुछ लउके ना |

रहे जवानी जागत फिर से, हेराइल धन पावे के।
आजादी के बलिवेदी पर, हँसि-हँसि प्राण चढ़ावे के।
भारत माता के जय बोलत, केसरिया ध्वज लहरावत |
निकलत रहलन लोग सदन से, गीत वीररस के गावत।

क्रान्ति-यज्ञ में आहुति बनि के, कूदत रहलन नर-नारी।
ओही समय दिवाकर जइसन, उपजल एगो चिनगारी।
महावीर स्वामी के पावन, जन्मस्थली निराली में।
जनमल एगो बीर-बिहारी, पुन्य भूमि बैशाली में।

रामबिहारी शुक्ल पिता पर, कृपा भइल जगपालक के।
सोच- समुझ बैकुण्ठ धराइल, नाँव मनोहर बालक के।
नित्य बढ़ेले शुक्ल पक्ष में, जइसे जोत चनरमा के।
तेज बढ़े बैकुण्ठ शुक्ल के,वइसे संस्कार पा के।

बचपन से ऊ आगे रहलन, कुश्ती आ तैराकी में।
लागे ना मन विद्यालय के, पटरी, दुधिया, टॉकी में।
मन लागे संघर्ष-आगि में, जारि-जारि तन सँवरे में।
समय अउर गण्डक के उल्टा, धार चीर के पँवरे में।

चाचा श्री योगेन्द्र शुक्ल जी, क्रांतिवीर नेता रहलन।
एगो सक्रिय बागी-दल के, सनमानित मुखिया रहलन।
गाथा उनकर त्याग, वीरता, साहस, शौर्य अपार भरल ।
सुन किशोर बैकुण्ठ शुक्ल के, मन पर अमिट प्रभाव परल।

धीरे-धीरे राष्ट्रवाद के, बीया फूटल अँखुवाइल।
जीवन ब्यर्थ गुलामी के बा, मन में ई बिचार आइल।
दशा देश के देख बरल तब, आगी अस उनका तन में।
जइसे जेठ मास में लहके, दावानल कवनो बन में।

उनकर विद्रोही विचार सुन, चिन्तित भइलन बाबूजी।
ममता में बान्हे के बहुते, कोशिश कइलन बाबूजी।
बेड़ी बनी बियाह सोच के, बेटा के सादी कइलन।
तब्बो ऊ बैकुण्ठ बीर के, प्रण के ना तूरे पइलन।

छोड़ एक दिन परिजन, प्रियजन, प्रिया, नेह-नाता सबसे।
चलि दिहलन बैकुण्ठ त्यागि घर, चाचा के सहचर बन के।
करि के आपन जीवन अपना, धरती माई के नाँवे।
आजादी के अलख जगावस, घूम-घूम गाँवे-गाँवे।

जेल बन गइल पावन तीरथ, बरत-उपास बनल अनशन।
स्वतन्त्रता के जपमाला पर, 'जय-जय भारत' के सुमिरन।
लेके मन्त्र क्रान्तिकारिन अस, साधक सिद्ध उदासिन से।
बन-बन के बासी बन गइलन, हृदय बनल सन्यासिन के।

सन् उनइस सौ अट्ठाइस में, एगो घटना घटित भइल।
जेकर फलस्वरूप भारत के, देश, काल सब बदल गइल।
हत्यारा साण्डर्स मराइल, मिलल दण्ड ओ पापी के।
बीर भगत, सुरुदेव, राजगुरु, भइलन तारा आँखी के।

देश चन्द्रशेखर-सुभाष के, रस्ता पर दउरे लागल।
गाँधी जी के आवाहन पर, युवा उहाँई से जागल।
गोरन के डर लागे लागल, दिन-दिन बढ़त एकता से।
लउकल जे विद्रोह बढ़ी तऽ, डेरा उजरी इहवाँ के।

नया-नया कानून बना तब, लगलन अत्याचार करे।
जेसे आजादी-आन्दोलन, जल्दी से कमजोर परे।
दुगुना शोषण शुरु हो गइल, दीन-हीन मजदूरन के।
खूब लगान लदाए लागल, बनियन अउर किसानन पे।

ओ लोगन के कँहरल रोवल, राजमहल तक जाए ना।
नेता भइलन गूँग बहिर सब, उनके तनिक सुनाए ना।
खोले खातिर बन्द कान तब, युवा फेर आगे अइलन।
असेम्बली में बम फूटल आ, भगत सिह हाजिर भइलन |

चलल मुकदमा तीनों जन पर, पुलिस जोर सब अजमवलसि।
बाकिर बिन गवाह के कवनो, दोस सिद्ध ना कर पवलसि।
जब बीरन से जीत न पाइल, हारि गइल सब ओरी से।
सासन द्रोही खोजे लागल, जुगत लगा तब चोरी से।

सुफल हो गइल कूटनीति फिर, भारत खुद से हार गइल।
घोष फणीन्द्र नाँव के साथी, तनिके में गद्दार भइल।
ऊ गद्दार अदालत में जब, सरकारी गवाह बनलस।
भगत सिंह के फाँसी के तब, मुंसिफ हुकुम सुना दिहलस।

फिर आइल ऊहो दिन जहिया, चारों ओर अन्हार भइल।
पूरा देश शोक में डूबल, धरा लोर में डूब गइल।
तेइस मार्च इकत्तिस के जब, सूरुज पच्छिम में गइलन।
तब लाहौर जेल में एगो, अउरी सूर्य अस्त भइलन।

निर्धारित दिन से दिन पहिले, चढ़ल बीर फाँसी जहिया।
सत्य-अहिंसो के कीरति पर, अमिट दाग लागल तहिया।
तीन-तीन गो मोती टूटल, जब माई के माला से।
भारत के जनमानस धधकल, प्रबल क्रोध के ज्वाला से।

उतरल खून आँख में,धीरज, खुद धीरज के डोल उठल।
दिशा- दिशा उन्मादित होके, 'बदला - बदला' बोल उठल।
ओने नीच फणीन्द्र फिरंगिन, के दीहल दउलत पाके।
बनल बेतिया के बैपारी, बसल बिहारे में आ के।

भुला गइल ई धरती ऊ हऽ, जेवन सगरो भार धरी।
बाकिर गद्दारन के तन के, बोझा ना स्वीकार करी।
एक दिवस बिहार में पहुँचल, सन्देसा पंजाबिन के।
'खून क बदला खून लिहल' ई, अटल नियम ह बागिन के।

रउआ सब कहिया ले अइसे, बइठल- बइठल रोइब जा?
ए कलंक के धोइब जा जे, जिनगी भर अब ढोइब जा?
सुनते लहर खुशी के दउरल, सब बिहार के बीरन में।
'हम मारब - हम मारब' के तब, होड़ मचल रणधीरन में।

भइल बइठकी हाजीपुर में, जुटल क्रान्तिकारिन के दल।
उहवाँ श्री बैकुठ शुक्ल के, ई पुनीत दायित्व मिलल |
जइसे रामकाज के पा के, फरकल तन बजरंगी के।
ओइसे चलल बीर संग ले के, सिंह चन्द्रमा संगी के।

तइयारी में भेष बदल के, साधारण किसान बन के।
दूनो जन बेतिया पहुँचलन, छिप के पुलिस प्रसासन से।
नगर बेतिया में फणीन्द्र के, बड़ा मान-सम्मान रहल।
उहवाँ के मीना बजार में, ओकर बड़ी दुकान रहल।

रहे देशद्रोही परसिद्धी, पवले बहुते सत्ता में।
एसे पहुँचे में कठिनाई, भइल न तनिको रस्ता में।
बाहर रोक चन्द्रमा के जब,खुद दुकान भीतर गइलन।
उहाँ ठाट से गद्दी ऊपर, द्रोही के बइठल पइलन।

सेठ बनल गद्दार देख के, रोम-रोम में आगि लगलन।
तब बैकुण्ठ शुक्ल के स्वर में, हर हिन्दुस्तानी गरिजल।
"अरे दुष्ट गद्दार पातकी, नीच नारकी पामर रे!
बनले साहूकार बेंच के, महतारी के आँचर ते!"

अँइठल बाड़े बलिदानिन के, जिनगी के कीमत पा के।
जीयल बा धिक्कार तोर अब, रुधिर सनाइल अन खा के।
तकलस ऊ गद्दार चिहा के, बाकिर कुछ बूझित जबले।
धोती के फेंटा से निकलल, बिजुरी अस कटार तबले।

भइल करारा वार तमकि के,छाती फारत निकल गइल।
पाप करत के ना फाटल ऊ, हृदय बिदारत निकल गइल।
देके दण्ड देशद्रोही के, चलल बीर ललकार करत।
बन्दनीय भारत माता के, जस गावत जयकार करत।

बदरी जइसन गरजत तड़पत, करत घोर हुंकार चलल।
जेवन छाती अड़ल राह में, ओ छाती के फार चलल।
थर्राइल सरकार घोष के, अइसन निर्मम हत्या से।
भइल घोषणा "कीमत ले जा, हत्यारा के धरवा के।"

गिरफ्तार भइलन कुछ दिन में, अपने एगो गलती से।
सजा सुनावल गइल मौत के, श्री बैकुण्ठ शुकुल जी के।
करत इहे अफसोस कि सपना,ना पूरल आजादी के।
कहि के 'फिर आइबि ए माई', चुमलन फंदा फाँसी के।

त्यागी जब-जब राज बढ़ी, नीचता अउर गद्दारी के।
तब-तब आई याद राष्ट्र के, जवना परम पुजारी के।
जे लिहलन प्रतिशोध भगत अस, योद्धा युगावतारी के।
उनका साथे बिनवत बानी, उनका पूज्य कटारी के॥

◆ ◆ ◆

संजीव कुमार त्यागी
लट्ठूडीह,गाजीपुर

चकरका कोरवाला पियरी धोती, अढ़ाई गजिया गमछा, लिलार प चनन, गरदन में रुद्राक्ष के माला आ हाथ में फूल बेलपतर से सजल, गंगाजल से भरल, चमचमात चानी के लोटा ले के जब आनंदी बाबू गाँव के शिवाला के ओर अपना दल-बल के साथे 'जय भोलानाथ' के अलख जगावत चललन त लोग देखते राह छोडे लागल आ छोड़स ना त का करस। सँउसे गाँव में एगो दूगो घर बरा दिहीं त के उनका करजा से जँताइल ना रहे? सूद के सूद जोड़ के लोग के छाल छिल लेवेलन।

मंदिर के ओसारा में घुसे से पहिले पहिलका सीढ़ी के छू के सरधा से गोर लगलन। फेर बाँया हाथ में लोटा थाम के दहिना हाथ से सिकड़ से लटकत घंटा के खूब जोर से पीट के भोलानाथ भीरी आपन हाजिरी दर्ज करवलन।

अब ले त सब कुछ ठीक रहे बाकी जसहीं गरभ गृह में जलढारी करे चललन त उनकर नजर शिवजी प पहिले से चढ़ल फूल, धतूरा आ बेलपतर प पड़ल।एँड़ी के बोखार कपार प चढ़ गइल। सोचले रहन कि पहिला जलढारी करेम एकरा बादे केहु करी। बाकी आस प पानी फिर गइल। मन मसोस के रह गइलन। कसहूँ-कसहूँ जल ढरलन। जल त ढारत रहन बाकि मन कहूँ आउर रहे। मन ही मन सोचे लगलन 'ई कवन बीर एह गाँव में उमज गइल बा कि हमरा कतनो मना कइलो प पहिले जल ढार के चल जाता? अतना खेमाता ओकरा कइसे हो गइल?'

अब्बे एह सोच में उनकर मन अझुराइले रहे कि फक्कड़ बाबा जजमानन के संकल्प करावत धरा गइलन। बस का रहे असहीं भतुआ प छूरी तेज चलेला। आनंदी बाबू लगलन उनका के ओद-बाद करे। फक्कड़ बाबा त अपने इरखाह। लगलन ओसहीं ओसावे।

'हमरा के जवने -तवने बाभन बुझलऽ ह का? दोसरा प लाल पियर होखिहऽ। हम एहिजा जजमानन के पूजा करावे खातिर बइठल बानीं कि तोहरा खातिर लोग के जल चढ़ावे से मना करे खातिर? तहरा पहिले जल चढ़ावे खातिर हम लोग से मारा-मारी करीं ...? ना...? '

मारा -मारी ना करबऽ आ दछिनवा चपोत के चेटिअइबऽ?'

अतना सुनते बाबा के माथा गरम हो गइल। 'बुझाता कि तू दछिना में असरफी देवेलऽ ....आ लोग झिटिका देवेला....ना? हमरा खातिर जइसन तू जजमान ओइसने भूपेसर जजमान। काल्ह उनका से पहिले तूही आ जा आ पहिले जल ढार के चल जा। ई त सावन ह असहीं लोग साँझ तक ले भहरात रहेला।आज त सोमारे ह। जे कबो एन्ने उलटिओ के ना ताके उहो आज भगत बनल बा।'

आनंदी बाबू भूपेसर के नाम सुनते जर के फोरन हो गइलन। ई उहे भूपेसर हवें जिनका चलते आनंदी बाबू के कारोबार में कतना घाटा सहे के परल। लोगन के गाढ़-बिपत जहाँ भूपेसर खातिर सेवा आ पुन्न के मौका होला, उहें आनंदी बाबू खातिर अफदरा में पड़ल लोग के रजिस्टरी घर देखावे के मौका। केहू से खेत लिखइहें त केहू के गहना बन्हकी धरवइहें। सूद के बोझा अतना लाद दिहें कि लेबेवाला के सात पुश्त से ना दियाइ। एह से लोगन के बीच भूपेसर बाबू के इज्जत आ प्रतिष्ठा कहीं ज्यादा रहे। हलाँकि प्रतिष्ठा त आनंदियो बाबू के रहे बाकि भाव से ना भय से।

बाकि एगो बात रहे, भर सावन गाँव के लोग एकदम चैन के बँसुरी बजावत रहे। काहे कि धर बान्ह के ही सही ,भर सावन आनंदी बाबू एकदम जोगी बन जात रहन। आन दिन त लोग उनका के देखते राह काट देत रहन। कौन ठेकाना सूद खातिर कब केकरा के भरल समाज में इज्जत उतार देसु।
अच्छा,भर सावन ऊ साधु एह से हो जात रहन कि बनारस के पुरनका बिश्वनाथ जी के पंडाजी उनका के कहले रहन कि सबकुछ छोड़ के अगर भर सावन खाली भोला बाबा के भक्ति -भाव में लागल रहिहें त डूबलो धन उतराए लागी। एह से आनंदी बाबू एक महीना मांस-मछरी, दारु-सराब, सूद-छाड़ा से पीछा छोड़ा के एकदम देवता के देह धर लेत रहन। एह तरे जेकरा सूद देवे के रहत रहे उनका बेमंगले एक महीना के मोहलत मिल जात रहे।

बाकि आनंदी बाबू के मन भला कहाँ काबू में रहनेवाला? रह-रह ओन्ने चलिए जात रहे। मनहीं मन सोचसु कि अब तक ले कतना पइसा आ गइल रहित।बिना मंगले काहे के कवनो ससुरा देवे जाव। ऊ त जानते बारनसँ कि एक महीना हम साधु हो जाइला।अच्छा गइल माघ दिन उनतीस बाकी। खाली सवनवाँ उतर ना जाए लोग के छरपट छोड़ा देहब।'
एक-एक दिन गिनत रहन। देखते-देखते अंतिम सोमारी आ गइल। खूब बिधि-बिधान से पूजा-पाठ- दान-पुण कइलन। बाभन-बिसुन, भिक्षु- भिखार के दान दक्षिणा से उद्-बुध कर देलन।
एन्ने एक महीना कछ-मछ खइला का भइल रहे, उनका लागत रहे कि एक बरिस हो गइल बा। एही से एगो खसी किन के पहिलहीं से रखाइल रहे। बस कमरुआ चिक के बाट जोहात रहे। दू दिन पहिले से ही ओकरा के चेतावल रहे कि किरिन फुटे से पहिलहीं दुआर प चल आई। पेंड़ा ताकत- ताकत नौ बज गइल। एन्ने उनकर बेसब्री बढ़त जात रहे। दू चार गो अपना संघतियो के बोला ले ले रहन। सोचे लगलन कि अब तकले त बइठकी लाग गइल रहित। का बढ़िया भूजल मीट के साथे गिलास टकराइत? बाकि ई मुँहमरवना कमरुआ जवन ना करावे? अतना सोचते रहन कि चरखनवा लुंगी पेन्हले, गमछी से मुँह तोपले कमरुआ आ धमकल। ओकरा के देखते आनंदी बाबू अगिया बैताल हो गइलन। सटका ले के मारे के टूटलन।

'ससुरा तोरा के कब बोलावल गइल रहे? सब गुड़ गोबर कर दिहले। इहे बेरा ह आवे के?'

'आरे पूजा-पाठ करेवाला आदमी के मारपीट ना करे के चाहीं। एह गरीब के मारल आ मइला प ढेला बिगल दुनो बराबर' कहत साहेब काका बैल के सानी गोतल छोड़ के दउड़ल अइलन। मौके प आनंदी बाबू के लाठी धर लेलन ना त नीमने घटना घट जाइत।
बेचारा कमरु डर के मारे थर-थर काँपे लगन। सभे ई सोच के हरान रहे कि सावन उतरते आनंदी बाबू के हो का गइल? कतना बन्हिया त भर सावन रहन।काश! भोलाबाबा वाला भोलापन, दया, क्षमा आ करुणावाला गुन तनिको अपनइले रहतन त इनकर जल चढ़ावल सुफल हो जाइत। बाकि केकरा हिम्मत बा कि ई बात उनका से कहे? बरियारा के साथे सभे रहेला। अबरुआ के के पूछेला? तुरंत सभे कहे लागल,"जगतरा तोरा देर से ना नू आवल चहत रहे।एगो त एक महीना के बाद मीट-मछरी से भेंट होता आ ओहू में कुबेर क के सब मजा किरकिरा कर देले।आज ना रहतींसन त तोर छावा टूट गइल रहित।

आनंदी बाबू के रौद्र रुप देख के कमरु के त डर से चिरले खून ना। मुँह के थूक सुख गइल, बकार निकलल मुस्किल हो गइल। कसहूँ हिम्मत क के बोललें, 'का कहीं मलिकार, घर से त ठीके चलल रहीं।बाकि बीचे राहे भूपेसर मालिक छेंक लिहलें। कहलें कि पहिले हमार खसी काट एकरा बाद केहू के कटिहे।अब हम का करीं? आगे कुइयाँ, पीछे खाई। रउए बताईं, अबरुआ जात ठहरनीं, उनकर बात ना सुनतीं त ऊ हमरा के बिना मरले छोड़तन?'

भूपेसर से आनंदी बाबू के पहिलहीं से भँइसा के कांड चलत रहे। कमरुआ के बिलमावल एकदम आग में घीव डाले के काम कइलस। तुरंत आपन अमला-फइला के ललकरलन, 'चलऽ सँऽ रे, आज भूपेसरा के लच्छन उतार दियाव। एगो लइका ओकर दरोगा का हो गइल ऊ अपना के लाटे साहेब समझे लागल? हाथी से हथरस करता।'

'हँ मालिक, अब भूपेसर के का कहे के बा, उनकर लाठी आज-काल्ह जमुना में धोआता। अब भूपेसर उहे भूपेसर बाड़ें?' कह के सुदेसर आउर पीन मार देलन।

'अच्छा त जा तानीं जा नू। आज उनका पते चल जाई कि कवना घरे बयना देले बाड़न।'
अतना कह के आनंदी बाबू जसहीं लाठी ले के चलेवाला रहन कि उनकर छोटका भाई भूखन उनकर लाठी धर लिहलें।

'भइया पागल भइल बाड़ऽ, सांत ना रहबऽ? दस गो लोगन के घर में खाना प बोला के चलल लउर-लाठी करे?'

'त ओकर अतना मन बढ़ गइल बा कि ऊ हमरा आदमी के बिलमा दिही?'

'आरे त ए से कवन राउर पगड़ी हेठ हो गईल? इहे नू कि तनी देर भइल बा, ए से कुछ बिगड़ल नइखे।अपना से कमजोर केहू के ना बूझे के चाहीं।आ...जान बूझ लफड़ा में पड़ला के काम नइखे।'

भूखन अपना भाई से तनी मेंही पड़त रहन। ऊ जानत रहन कि अब ऊ जमाना ना रह गइल कि कोई केहू के दुआर प चढ़ के बेइज्जत कर दिही। बड़ा होशियारी से भूपेसर के खीस कमरुआ ओरे फेर दिहलन। अब्बर प सभे के एक दाव लह जाला।

'ई धीकल कमरुआ के ओह राह से आवले ना चाहत रहे। सीधे नंदलाल काका के खड़ी के पीछे-पीछे राहबान माँहे एहिजा चल आवल चाहत रहे। चलऽ अब जवन भइल तवन भइल।...आरे कमरुआ का देखतारे....ससुरा जल्दी से छिल-छाल करबे कि तोर कुछ बाकी बा?'

'ना.... ना...मालिक हम पाँच मिनिट में छिल-छाल के खसी राम के ठीक क देहम।....बाकि हम कह दे तानीं भूपेसर बाबू किहाँ मूड़ा आ छाल लेनीं हँ। एहिजो हम ई कुल्ह ले लेहब।'

'चुप ससुरा! पहिले आपन काम करऽ , असहूँ बड़ेरी प घाम आवे चाहता। बाग लागल ना मँगरा डेरा डाले लागल। भाग मनाव कि बचा देनीं ना त आज तोरे छाल छिला जाइत।'

'हँ मालिक बात ठीके कहतानीं।' अतना कह के कमरु अपना काम में लाग गइलन। मजूरी में जवन तय रहे ले के जल्दी से ओहिजा से दफा हो गइलन।

कुकर के जमाना बा। सबकुछ भन्न से बन गइल।आनंदी बाबू अपना लगुआ-भगुआ के साथे आसन मार बइठ गइलन। एन्ने गिलास मे गिलास टकराए लागल ओन्ने डेक प 'एक हजार में फुल मिले, पाँच सौ में हाफ हो 'गाना जोर-जोर से बाजे लागल। गीत के ताल आ अंग्रेजी बोतल के परभाव से बिभोर सभे के पाँव मोर जस थिरके लागल। केनहूँ से सनिचर मुसहर आवत रहन। दारु के निशा से मदहोश गीत के ताल प थिरकत आनंदी बाबू के देख के उनका से ना रहल गइल। अपना से मेंहिए सुत काटते कहलन, 'का आनंदी बाबू ! सावन उतर गइल का?'

◆ ◆ ◆

बिनोद सिंह गहरवार

सोर बहुते अंदर बा

पियास के कुछ बून बाटे
होंठन पर
आँखि में समुंदर बा
बहरी सगरो पसरल बा
घोर करिया सन्नाटा
सोर बहुते अंदर बा

◆ ◆ ◆

अगुताइल उमिर

एगो मउसम गइल
एगो आइल
एगो आगे तय बा
मन का भीतर
कुछ भींजल
कुछ सूख गइल
कुछ कठुआइल बा
मंजिल पहुँचे का जल्दी में
उमिर ई बहुते
अगुताइल बा

◆◆◆

जिनगी के कारोबार

नीन के खेत के हरवाही में
बटोराइल सपना के खनकत
दमकत सिक्का
अँजोरिया का चोख तेग से
गला रेताइल अन्हरिया के
सूरज उगल
दुनियादारी हाँक लगवलस
चारू दने बाजार सजल
सपना का पूँजी का जवरे
सारा दिन बाजार खंघरनी
हाथे लागल
कान्ह पर लादल
थकान के भारी बीहड़ बोझा
महरूमी अउरी नाकामी
घरे लवटनीं
नीन के खेत के हरवाही
फिरू सुरु भइल
फिरू बटोराइल
सपना के कुछ खनकत सिक्का
सुरुज उगल
देह झाड़ के फिरू निकलनीं
जिनगी के ई कारोबार बा
चलत रही

◆◆◆

गुलरेज शहजाद
मोतिहारी, बिहार

राजकिशोर मास्टर रहले। उनुका के गाँव भर के लोग रजकिसोर मास्टर साहेब कह के बोधत आ आदर देत रहे। प्रतिष्ठित आदमी खातिर एतना आदर बहुते काफी होला। राजकिशोर मास्टर साहेब कमीज आ धोती के बगबग आ हिरदय के साफ आदमी रहन।

एक बार हमरा बेहोशी के आलम आइल त ऊ सुनते मातर सबसे पहिले आ गइलन । हाथ के नश टोअलन आ घर के परिवार के सांत्वना देलन कि लगले ई ठीक हो जइहें। सेही साँच भइल। ऊ एतने जान के हाली देनी आ गइलन कि गाँव घर के लोग झार फूँक में जाले विश्वास करेला कहीं एह चक्कर में पर के समय बीता दिही आ ब्लडप्रेशर होई त होखे के का आ हो जाई का। ब्लडप्रेशर के इलाज धाँय से होखे के चाहीं, बासी अहित कर दिही। ओझाइए में त गाँव में दू चार गो लोग के लकवा छू दिहलस। समझदार आदमी केहू के सुबहाँ के कुआँ में गिरे से पहिले समय पर जुमके बचा देला।

नंदकिशोर मास्टर साहेब के आँख भा नाक के बधाई एगो बेटिए बाड़ी। संध्या। संध्या के बिआह हो गइल बा। मास्टर साहेब बेटी के शादी के भार से पार उतर चुकल बाड़न।
मास्टर साहेब के मँझिला भाई के बेटा नशा में चूर रहेला। अइसनो नशा ओकरा पर सवार रहेला कि इनिकर जवन संपत्ति बा तवन हमार होई। इनिका बेटी के कइसन। का हक बा ओकर। डंडा लेके चहेंट घालब। हाथ ना लागे देब, हम। ढोनहच दिन रात सुने के मिले मास्टर साहेब के। अरे तुकार तक। कान के बिख बरदास ना भइल त मास्टर साहेब कहलीं- ' बचवा आपन सोच तूँ बदल द आ ताक पर रख द। आँख देखइबऽ त दिरिस हाली देनी बदल जाई। अबहीं खात बाड़ऽ हमरे। हूँफऽ जन।' एतने में ऊ मास्टर साहेब पर हाथ छोड़ देलस। जे ई बलबेर्ही सुनल से अपना हिसाब से अलगे-अलगे दोसे लागल। बतावऽ ना भला आन के थान में दुधो पीअत बा आ घोंचो मारत बा। का केहू के केहू छाँह दिही। छाँह दिही इहे दिन देखे खातीर। एही से नू कहल बा कि

बिस्वास के बसेरा में साँप ना पाले के चाहीं। नाहीं त कब फन मार दिही, कुछ कहल ना जा सके।

हिरदय के साफ आदमी अपत के अंहकार साफ कर देलन। बेटी के मोबाइल कइलन। आ बिहाने से बेटी के बसेरा के आश्रय ले लिहलन। गांँव के लोग से साफ कह देलन कि संध्या हमार बेटी ना बलुक बेटा हिय। गाँव गंजेड़ी प्रवृत्ति के बेटा के सह देता त देत आ आघात रहे। जे जे मन बढ़ू बनइले बा से से के हम चिन्हत बानीं। जेकरा के मनी पर खेत ना देलीं हम, सेहू कम ना बहकवलस सिखवलस आ कान में मंतर देलस। जिनिगी के गाड़ी त धूरो राह चलेला आ पकियो राहे। हमार गाड़ी दूनों राही चल लिही। बहकावे ओला सोचे अपना के। घासलेट के तेल से बार ना सँवारल जाला।

गाँव के गली आ चौराहा पर अब गंजाइन बेयार गंध देत रहता। गाँव के बेटी आ बहिन नाक मूँद के पार होली। मिलता त सबका बस हवा बासी। कतना जाना के बल्ड प्रेशर सूंघ जाता ओझा के ओझाई के चक्कर में। आ मुरुगा के हाड़ में लागल हरदी चिढ़ावत बा दम तक। भोगऽ लोग गंजेड़ी के सह देला मजा। मास्टर साहेब के का बिगड़ल। शीशवानी के खेत मनी पर लगा देली संध्या फूआ।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

रामगढ़, झारखण्ड

दीया-बाती

डॉ. कमल उपाध्याय

बसदेवा – हमार बियाह भइला के कुछदिन बाद सब नाते रिश्तेदार अपना- अपना घरे लवटि गइल रहलें। घर में हमार बाबा, हम आ हमार नया - नया कनिया बनि के आइल मेहरारू बाँचि गइल रहनीं जा। घर - आंगन लोग के गइला से उदास, बाकी कनिया के अइला से गुलजार रहे। एकर सुखद अहसास हमरा बाबा के संगे - संगे हमरो होत रहे। बियाह भइले लगभग हफ्ता दिन हो गइल रहे। अब हमरा नोकरी पर भी लौटे के रहे।

मन असमंजस में रहे कि बियाह के बाद नोकरी पर अकेले जाईं, मेहरारू ले के जाईं कि दुनो जना के संगे ले ले चलीं। एही उहापोह में दुपहरिए से रहनीं। पत्नी से भी एह विषय पर विचार कइल हम उचित ना समझनीं एह से कि ऊ का जाने कइसन जवाब देस? पढ़ल लिखल बाड़ी। नीमन परिवार से बाड़ी। दिल्ली जइसन बड़ शहर में रहल बाड़ी। आधुनिक परिवेश में अब तक के दिन उनकर गुजरल बा। ऊ का जानस बाबा नाती के एह रिश्ता के कि बाबा हमके कइसे पालिपोसि के आज एह मुकाम पर पहुँचवलन। भावनात्मक रिश्ता हमरा आ बाबा में कवना स्तर तक बा। अगर पत्नी कुछ आग - पाछ, उँच - नीच बोल दिहें त उहो ख़राब लागी। ओइसे हफ्ता दिन के संग साथ से ई त बुझा गइल बा कि बुद्धि बेवहार आ संस्कार के ठीके बाड़ी।

खइला पियला के बाद राति खा बाबा के गोड़ दबावत जब हम अपना जाए के बारे में कहनीं आ व्यवस्था कइसे बनो एह बारे में बाबा से पुछनीं त बाबा कहलन कि कनिया के ले के तू लवट जा। ओहिजा आगे पीछे केहू ना रही से उनकर ध्यान रखिहऽ। दुलहिन के कवनो कमी, परेशानी मत होखे दिहऽ। दुलहिन के भी बोला द उनको से दू बात क लीं।

पत्नी से बाबा कहलन कि अब तहरा मरद के संगे बनारस रहे के बा। ओहिजा हम ना रहब से दुनो जना एक दूसरा के ख्याल रखिहऽ जा। बुद्धि विवेक के अनुसार निर्णय लिहऽ जा। एक दूसरा के सुनिहऽ जा। तुरंते एक दूसरा पर उद्वेलित मत होखिहऽ जा। तहन लोग के संग दीयाबाती लेखा रहे। बाती के बिना दीया के आ दीया के बिना बाती के कवनो मोल नइखे। आँधी रूपी समाज में तहन लोगन के दीया लेखा हरो घरी जरत रहे के बा। अपना रोशनी से खाली प्रकाश करे के ही बारे में सोचिहऽ जा, दीया अगर ठीक जगह पर रहेला आ जरेला त ऊ लोगन के जीवन में प्रकाश करेला। अगर कवनो कपड़ा भा जरेवाला चीज के संपर्क में आ जाला त आगि लाग जाला। कोशिश करिहऽ जा दियरखा पर जरेवाला दीया बने के। कबो जीवन में आगि लगावे वाला दीया मत बनिहऽ जा। आगि लगावेवाला कपड़ा के संपर्क में कबो मति अइहऽ जा। दुलहिन तहरा जाए से पहिले अतने हमरा तहरा से कहे के रहल हऽ। जा, अब अपना जाए के तइयारी करऽ।

आँखि के कोर अपना अँचरा से पोंछ्त मेहरारू कहली कि बिना हवा के दीया कइसे जरी? रउवा हमनीं के दीया रूपी जीवन के ऑक्सीजन बानीं। रउवा बिना हमनीं के थोड़हीं जाइब जा। रउओ चले के बा हमनीं के संगे। बाबा ना जाए

खातिर कहलन कि एहिजा ताला पड़ि जाई। खेती बारी बा, ई कुल छोड़ के गइल संभव नइखे। तहन लोग जा। हम एहिजे रहब। एह बुढ़ापा में अब कहाँ जाइबि? पत्नी कहली कवनो बात नइखे, खेती बारी खातिर एगो आदमी रखा जाई। महीना दू महीना पर गाँवे आ के देख सुन के दू चार दिन में वापिस हो लिहल जाई। जबले संभव होई एही व्यवस्था के चलावल जाई। जब संभव ना हो पाई फिनु समयानुसार कवनो उचित निर्णय लिहल जाई। बाबा आपन नातिनपतोह के बात काट न सकलन। जाए के हामी भर दिहलन।

बाबा के निर्णय बचपन से हमरा खातिर मान्य रहे। बचपने से कबो हम बाबा के बात ना कटले रहनीं। बस आदेश के पालन करीं। लेकिन आज बाबा के आ पत्नी के बात सुन के मन भर गइल। पत्नी के सोच पर भीतर से गर्व भी महसूस भइल। गाँव के घर में ओह अंतिम रात बिस्तर पर लेटल- लेटल सोचे लगनीं...

हमरा माई बाबूजी के असमय मृत्यु के बाद बाबा - आजी हमके पालल - पोसल लोग। अभी हम किशोरवय भइल रहनीं तभिये एकदिन आजी भी हमनीं के छोड़ि परलोक सिधार गइली। आजी के मुअला के बाद घर सुन हो गइल। हम आ बाबा मिलिजुलि के खाना बनाईं जा। घर दुआर के झारल - बाहरल, खेती - बारी, गरुन के लेहना - पानी होखे लागल। अइसहीं बाबा नाती के जीवन कटे लागल। कबो - कबो फुआ हमनीं किहाँ दू चार दिन खातिर बरिस डेढ़ बरिस में आवल जाइल करसु। ए कुल के बाद बाबा हमरा पढला - लिखला पर विशेष ध्यान देसु। साँझ होते लालटेन के सोझा हमके पढ़े बइठा देसु। जोर जोर से पढ़े के कहसु आ खुदे चुपचाप रसोई के तइयारी में जुट जासु। तरकारी धोवल-काटल, आटा सानल बाबा बहुत धीरे धीरे करसु। उनकर आँखि तरकारी प आ कान हमरा आवाज पर रहल करे। हमरा कवनो गलती पर बाबा तुरंत टोक देसु। दू चार बरिस बाद जब हम हाईस्कूल फर्स्ट डिविजन से पास भइनीं त बाबा के खुशी के ठेकान ना रहे। इयाद बा ओह घरी बाबा हमरा माई बाबूजी के फोटो के आगा हमके अँकवारी में ध के फफकि फफकि रोवलन। आजियो के मुवला पर बाबा हमार अतना न रोवले होइहें जतना हमरा पास भइला पर रोवलन।

हमरा लाख मना कइला के बाद भी इंटर के पढ़ाई खातिर बाबा हमके बनारस के यूपी कालेज भेज दिहलन। दू बरिस जबले हमार इंटर ना भईल, बाबा महीना में दू हाली जरुर हमसे भेंट करे आवसु। खाए पिए के सामान आ कुछ रुपया पइसा दे के चल जासु। बीएचयू से जब हमार पीएचडी भइल त बाबा हमरा बियाह खातिर बात कइल शुरू कइलन। तिलकहरू लोग से उनकर एगो निहोर रहे पतोह पढ़ल लिखल, समझदार, गुनी चाहीं जे घर परिवार, गाँव देहात के भी समझे। एही बीच हमार नियुक्ति भी बीएचयू में हो गइल। एह खबर से बाबा के खुशी के कवनो ठेकान ना रहे। जइसे जीवन के मय खुशी बाबा के मिल गइल होखे। बाबा पर उम्र के प्रभाव अब साफ़ नज़र आवे। कई हाली बाबा के हम बनारस आवे के कहीं बाकी बाबा तइयार न होखसु। घर, खेती, जन्मभूमि के बात कहल करसु।

इहे सोचत सोचत कब भोर हो गइल पते ना चलल...सबेरे दीया बाती अपना ऑक्सीजन के संगे बनारस के गाड़ी पर खुशी- खुशी बइठ गइनीं जा। गाड़ी अपना वेग से चले लागल...

◆◆◆

डॉ. कमल उपाध्याय
बलिया, उत्तर प्रदेश

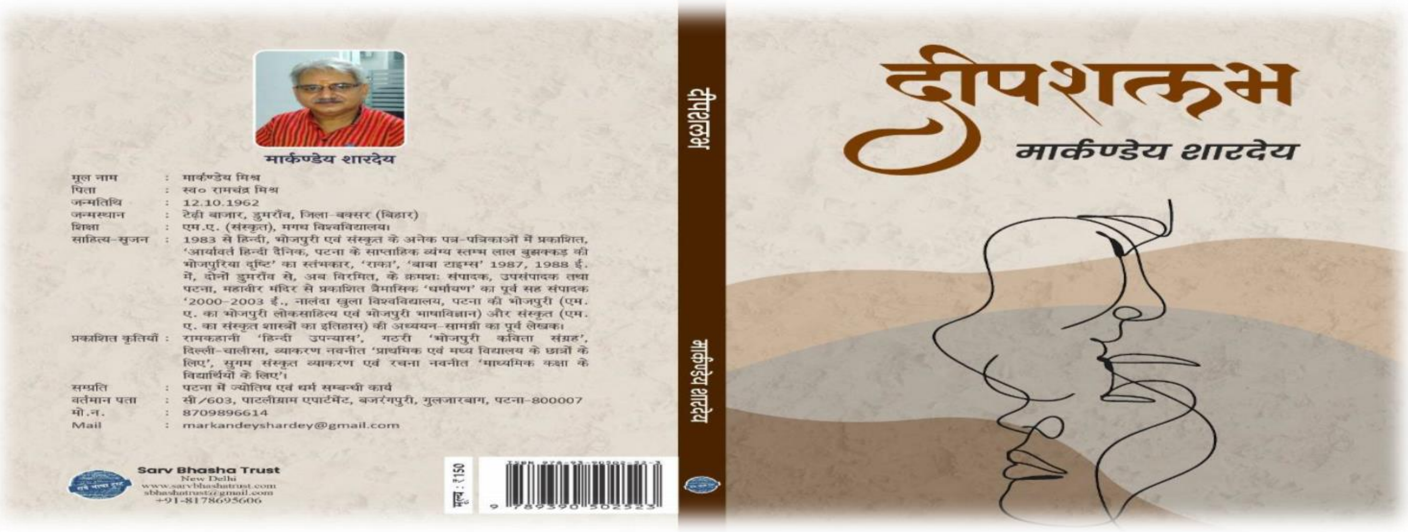

(पाठकगण! अपने सभ मार्कण्डेय शारदेय जी के भोजपुरी प्रबन्ध के क्रमशः चार सर्ग पढ़लीं।अबकी बार पाँचवाँ सर्ग प्रस्तुत बा। एमें मेहरुन्निसा से दू-दूगो व्यक्ति विवाहातुर लउकताड़ें। मेहरुन्निसा स्वयं ऊहापोह में बिया जे के हमरा खातिर नींक रही। एगो त खुदे बादशाह अकबर के बेटा सलीम बा। दुसरका महावीर आ बलिष्ठ सेनाधिकारी शेर अफगान। जहाँ सलीम मनचला बा, ओहिजे अफगान एकनिष्ठ। जहाँ एक ओर साम्राज्य बा त दोसरा ओर एकमात्र पूँजी वीरता। सलीम पिता से आपन विचारो रखता। एने कूटनीति में माहिर बादशाह मेहरुन्निसा के पिता गयासुबेग से गुप्त मन्त्रणा कर अफगान से बिवाह कराके बंगाल के प्रभारी बनाके शेर आ मेहरुन्निसा के बंगाल भेज देताड़ें। सलीम हाथ मलत रह जाताड़ें।अब एकर काव्यरूप देखल, पढ़ल जाउ।–सं.)

पाँचवाँ सर्ग

अजगुत तितली पकड़े खातिर। प्रेम बढ़ा फाँसे खातिर।
दू-दूगो आगे हाथ बढ़ल। दू-दूगो झूकल माथ बढ़ल।

एगो ओमें साम्राज्यवान।
एगो ओमें अति शक्तिमान।
एगो ओमें छल-छद्म युक्त।
एगो ओमें छल-छद्म मुक्त।

एगो ओमें अति स्वार्थ पूर। एगो ओमें निःस्वार्थ पूर।
दूनों कर बढ़त रहन आगे। तितली कटि कटि के जा भागे।

तितली अब भागल ना चाहे।
के बा सुयोग्य मन में थाहे।
तितली के मन में प्रश्न ढेर।
आके मचाइ देलें अन्हेर।

सम्राजी होखे के कांक्षा। होखे के वीरवधू वांछा।
दूनों आपस में लड़ पड़लें। दूनों प्रतिद्वन्द्वी ना हरलें।

साम्राज्य कबो होखे भारी।
बल के भी कबो-कबो पारी।
दूनों अपने में पूर रहन।
दूनों अपने में चूर रहन।

मुश्किल हो गइल चुनाव कइल। मुश्किल हो गइल दुराव कइल।
सहसा बगिया के पेड़-लता।कहलें सुनि लऽ हे मोहरता।

लखि-लखि कोमलता सुन्दरता।
हमनीं में जागल वत्सलता।
हमनीं के आपन हृदय-सुमन।
फुल्लित करिके कइलीं अरपन।

हमनीं के प्रेमाधार हऊ। हमनी के हृच्छृंगार हऊ।
तू दुनिया के अनमोल रतन। तहरा के चाहीं राजभवन।

भारत के भावी जनाधीश।
मुगलवंशवर यशःशीश।
प्यारा सलीम के वरण करऽ।
ई मन्तर गीरह बान्हि धरऽ।

ना त आगे तू पछतइबू। ना त जिनिगी भर छपिटइबू।
तितिली सुनि के उपदेश सुघर। कहलस, 'हाँ बाड़ें वर वरतर'।

तब तक सूरज कर में लेके।
आशीष बहुत मन से देके।
कहलन, 'हे बेटी! सुनऽ बात।
दिल में रखि के ई गुनऽ बात।

वीरत्व पुरुष के प्राण हटे। वीरत्व देश के मान हटे।
वीरत्व विश्व के संरक्षक। वीरत्व शोक-दुख-खल-भक्षक।

वीरत्व कवच ह नारिन के।
वीरत्व नाज महतारिन के।
एही में कुल संसार बसे।
एही में सिरिजनहार बसे।

रुपिया-पइसा सोनी-चानी। सब हवें बाढ़ के चल पानी।
रानी-पटरानी बनि जइबू। जीवनान्द बहुते पइबू।

बाकिर ऐश्वर्यावृत यौवन।
ना रहि पाई बेजान नियन।
ऊ काटि-कूटि के घेरा के।
ऊ छोड़ि-छाड़ि के डेरा के।

नित रस यथेष्ट पीयल चाही। नित स्वानुसार जीयल चाही।
ओकर ना प्रिय वैभव-विशाल। ओकर ना प्रिय ह रतन-माल।

बस,प्रेम प्रेम ऊ चिल्लाला।
प्रेमे पर जीये मर जाला।
यौवन मनिहारा विषधर के।
यौवन निष्करुण निशाचर के।

ना चाहीं कबो वरण कर लीं। ना चाहीं तन अर्पण कर दीं।
यौवन सुन्दरता चाहेला। यौवन मानवता चाहेला।

निःस्वार्थ प्रेम जे पवले बा।
हिरदय में वास बनवले बा।

थमलस जब हाथ निभा दीही। अइसन ना थाम भुला दीही।
दुष्यन्त-वरण मत कबो करऽ। शाकुन्तल दुख सहि के न सरऽ।

मुदरी पर प्रीति टिकल रहलसि।
असन नृपरीति बिकल रहलसि।
जेकर सनेह चिरचंचल बा।
नित नया देह के भूखल बा।

ओकरा केने का मोल रही। ओकर प्रबन्ध भूडोल रही।
हँ, हँ, धन परमावश्यक हऽ। धन जीवन के उत्कर्षक हऽ।

एसे बेटी! तू बात मान।
मत दऽ सलीम पऽ तनिक ध्यान।
ऊ राजा के सन्तान हटे।
ऊ मनबहका इन्सान हटे।

रखि ली पिजड़ा में फुसुला के । कुछ दिन दुलराई आ आके।
लउकी कवनों चिरईं दोसर। तब फिर जाई दिमाग ओकर।

तब फूटल आँखी ना ताकी।
तनिको दयालु बन ना झाँकी।
बाटे एकर इतिहास बहुत।
हाँ,चाल बिया ओकर अजगुत।

तहरा लायक बा सिर्फ शेर। जेमें बाड़ें गुण बहुत ढेर।
ऊ नामे के ना शेर हटे। ऊ ताकत के शमशेर हटे।

वीरत्व-मूर्ति आ धैर्यवान।
अतिहृदयवान गाम्भीर्यवान।
नीतिज्ञ-प्रवर विद्वान सरल।
जन-जन के प्रति बा प्यार भरल।

ऊ दुनिया में बेजोड़ मर्द। आफत में भी होखे न जर्द।
हर काम असम्भव के सम्भव। कर देबे के बाटे अनुभव।

तलवार हाथ में ले लेला।
सक्रोध दृष्टि से ताकेला।
तब महावीर भी हट जाला।
ना त तन कट-कट बँट जाला।

ओही के सँग होई बियाह। तहरो खुलि जाई कीर्ति-राह।
हँ, वीरवधू तू कहलइबू। सबकर सनेह हरदम पइबू।

ऊ बादशाह के हऽ वजीर।
युवजन में बा अनमोल हीर।
तहरा पऽ खुदे निछावर बा।
तहरा प्रति ओकर आदर बा।

गुंजा मत चुनऽ चुनऽ मुक्ता। मानऽ मन्त्रणा स्वहित-युक्ता'।
हामी भरली सुन उक्तिसार। कहली, 'हँऽ हँऽ उत्तम विचार'।

ओने सलीम बा आकर्षित।
सम्प्राप्ति हेतु अति व्यग्र व्यथित।
हर दाँव लगवलस ना लागल।
तब पिता पास आइल पागल।

कहलस, 'हे भारत के नरेश! इहँवा के जन के हृदय-देश!
विद्वत्ता के अतुलितागार! हे राजनीति-नौ कर्णधार!

भारत-भू के सच्चा सपूत!
मानवता खातिर देवदूत!
हे कलाकार रक्षक महान!
हे गुणिजन-पोषण-लग्न-प्राण!

अनमोल वस्तु के सम्पालक! उत्थान-यान के संचालक!
सौभाग्यवान कतना बानीं। हम कह न सकबि, ततना बानीं।

राउर सन्तान भइल बानीं।
बहुते दुलार पवले बानीं।
बेमँगले सब सुख मिल जाला।
दिल भाग सराहत खिल जाला।

मँगलीं कुछुओ ना आज तलक। माँगे अइलीं हो नतमस्तक।
जेपर परान बा मोर अड़ल। जेपर बा अति सनेह उमड़ल।

मामूली बा रउरा खातिर।
दृगतारा बा हमरा खातिर।
बस, हाँ अपने के कह देतीं।
जिनिगी के चाह मिटा लेतीं।

माँगत नइखीं हम राज-पाट। होखल नइखीं चाहत विराट।
सम्राट जान नइखीं माँगत। बस, पुत्र पिता से बा जाचत।

हे पिता! पुत्र दुख दूर करीं।
हमरा पऽ कृपा जरूर करीं'।
अकबर कहलें, 'बोल बेटा!
जानेलऽ हम न हईं टेटा।

हमरा पऽ सभकर बा सनेह। जन-जन के हिय में मोर गेह।
बन्हले बाड़ऽ काहें फेंटा। बतिया तू सोझ कहऽ बेटा'!

कहलन, 'धनरक्षक के धियरी।
धरती पर के साक्षात् परी।
ऊ अतुलनीय गुण-खान बिया।
सुन्दरता के प्रतिमान बिया।

हम वरण कइल चाहत बानीं। आशीष मात्र माँगल बानीं।
मेहर संग कर लेतीं बियाह। जीवन-पउधा पाइत न धाह' ।

सुनि गुनि के कहलें बादशाह।
'हम देबि बाद में खुद सलाह।
ई कवन बड़ा बा कठिन काम।
बड़ले बाड़ऽ नयनाभिराम।

दूनो घर त अपने बाटे। एक दोसरा के आँटे।
हँऽ, बाड़ें ऊ हमरे अधीन। मत समुझसु खुद के कबो हीन।

बेटावाला हमहीं बानीं।
बेटीवाला भी होतानीं।
आबरू चढ़ल दूनो सिर पर।
हम समझ-बूझ होखबि तत्पर।

बेटा! अब जा, चिन्ता छोड़ऽ। चिन्ता से मत नाता जोड़ऽ'।
ऊ चलि देलें करि अभिवादन। जनलें हो गइल काज पूरन।

एने सोचे लगलन अकबर।
' करतब का बा हमरा ऊपर।
कइसे हम चाल चलीं नयमय।
दुःसाध्य बुझाता ई अतिशय'।

सिर खपा-खपा सोचे लगलन। तब तक नीमन उपाय पवलन।
कहलन, 'ईहे करणीय काज। एसे बच जाई मोर लाज।

रहि जाई मुँहवा के लाली।
केहू ना पीट सकी ताली।
ऊहो पाके होई निहाल।
झुकी कबो ना उठल भाल।

सभ जन महानता के बखान। कर-कर हो जइहें मोदवान।
हमरो नयज्ञता सफल रही। सभकर उत्फुल्ल सुकमल रही।

तब तक अचके गयासु अइलन।
यथा प्रथा प्रणमन कइलन।
ले गइलन अकबर रहःस्थान।
उगिले लगलन मन के उफान।

उनुको हिरदय के रहे चाह। मिल गइल चाह अनुरूप राह।
कहलन, 'अपने के दास हईं। दासन में एगो खास हईं।

राउर किरिपा के बोझ-भार।
ना सकबि जतन कर सौ उतार।

बेटी रउरे हऽ महाराज! पूछल न बुझाता ठीक काज'।
अकबर प्रसन्न अति हो गइलें। दूनो जाना बाहर अइलें।

मेहर के शादी शेर संग।
सुनि फइलल सगरो रसतरंग।

फहराइल नृप के कीर्तिकेतु। जे रहे एक व्याजीय हेतु।
शादी कर बला दूर कइलें। बेटा के आस चूर कइलें।

फिर कृपा-दृष्टि रख महाराज।
दे शेर शेर के बंगताज।
बंगाल भेज देलें झटपट।
जेसे होखे ना कुछ खट-पट।

(क्रमशः)

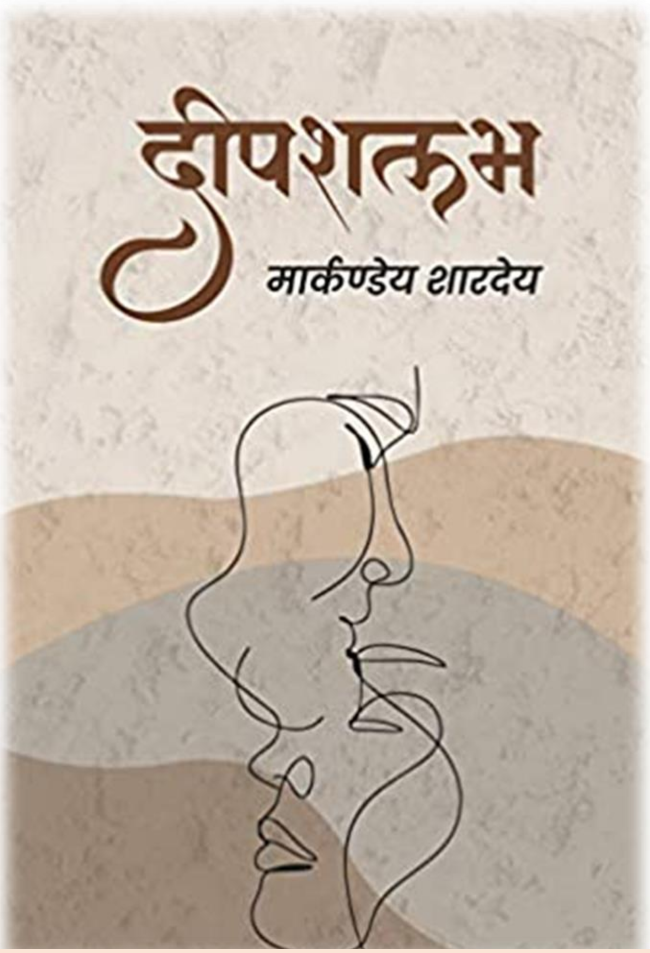

मार्कण्डेय शारदेय

गइल भँइसिया पानी में

अब टिटकारल छोड़ऽ घुरहू
गइल भँइसिया पानी में।

जब गरमी उदबेगेले
कुछ लउके ना दाएँ-बाएँ
भरी चुनचुनी अंग अंग
तब केहूँ लागी छपिटाए

कहिया ले साँसत में रखबऽ
जान बतावऽ ए जानी
अब कवनो ना ट्विस्ट बचल
जिनिगी का नरक कहानी में।

भूखे अँतड़ी दरद करे
तब छपटी काटे बइठेलऽ
भूसी तनिका छींटेलऽ आ
लाठी लेके अइँठेलऽ

अब पुचकरले अब सुहरवले
कतना तोहके दूध मिली
अब बिसुखलको सिघिआई
तोहरा के भरल दलानी में।

◆ ◆ ◆

अब नीमन होई

अब नीमन होई
एही असरा में
दिन कट जाला।

ककड़ी कड़वा लागे
खीरा तींत करेला मुँह के
बबुआ के पेपर नीमन
ना भइला से मन कुँहके
बाकिर अगिला का उमेदि में
दुख के बादल छँटि जाला।

गइया अचके दूध घटवलसि
हपता भइल बियाइल
फीस भरे में लइका के,
पेटो पर आफत आइल
होनहार के कोमल पल्लो
मन तबहूँ रट-रट जाला।

◆ ◆ ◆

भजपूरी काहें लिखवावत बानी भाई ?

हिंदी लीखे में पानी छूटेला हमरा
भजपूरी काहें लिखवावत बानी भाई ?

पग पग पर गूगल के सरन लिहींला
कवनो भाषा से अनुवाद करींला
भलहीं पेपर के कोश्चन बूझे ना केहू
समझा-समझा के लिखवावत बानी भाई ।

बचने ना लिगो पर आफति आई
हाथी आ दहियो के ईजति जाई
गदहा के सिघिए हो जाई भी आ ही ओ
अस इक्सरसाहज करवावत बानी भाई ।

रउरा लागत बा लइका पढ़िहे सन
पढ़िके इंजिनियर डी एम बनिहें सन
बुधुओ के लइका भीरी फारेन भेजवाइबि
मजगर सपना मन अँखुआवत बानी भाई ।

◆ ◆ ◆

रामरक्षा मिश्र विमल
पटना

काफी बा

भुखाइल मनई के दू गो रोटिए काफी बा
भागत भुतवा के लंगोटिए काफी बा

ओलवो ना काटी गर उसीन के जमीरा गारीं
फेर से रोपे खातिर टोंटिए काफी बा

हरियरी के जमात में आठों पहर परानवायु
देवेवाला पिपरा के बिरिछिए काफी बा

जगमग इंजोर चाहीं बत्ती-दर-बत्ती बारीं
अन्हरिया हटावे ला ढिबरिए काफी बा

सियासी मश्गला में गरीबियो मेटावे ला
तरीका बा गरिबवन के नरेटिए काफी बा

जनता के सरकावेलें सरकार कहावेलें
उमेद के अंजा के कटोरिए काफी बा

अपना बूत्ता पर भरोसा करीं "नक्कू“ जी
देसवा का बिकास खतिरा हिम्मतिए काफी बा

◆ ◆ ◆

नक्कू मझव्वी
बाणेर , पुणे

बदरा काहें नाहीं मानेलऽ

बदरा काहें नाहीं मानेलऽ हमार कहना।
मोर पानी बिनु तरसे दुआर अंगना।

बहे पुरुआ झँकोरी, डेरवावे ले निगोड़ी,
कब्बो तड़केले बिजुरी गिरावेले बड़ेरी ।
तोर रहिया निहारेला उदास कंगना।
बदरा ! काहें नाहीं----

कब्बो करे घेरा घेरी, कब्बो अँखिया तरेरी,
कब्बो आइके सिवनवाँ प काटि लेलऽ डोरी।
नाहीं पुरवेलऽ अचिको हमार मंगना।
बदरा काहें नाहीं---

कहीं खेत ना जोताई, कहीं बीया डाँड़ जाई,
जो ना भरबऽ सरेहिया तऽ धान ना रोपाई।
काहें अदरा में भदरा करेलऽ गनना।
बदरा काहें नाहीं----

जो ना ओरी तर अइबऽ, आके पानी ना गिरइबऽ,
अपनी चिरई चुरुंग के तू कइसे के जियइबऽ?
साँच कहतानी सगरो बिकाई गहना।
बदरा काहें नाहीं मानेल हमार कहना?

◆ ◆ ◆

इंद्र कुमार दीक्षित
पूर्व मन्त्री, नागरी
प्रचारिणी सभा, देवरिया

दूर बाटे किनारा

दूर बाटे किनारा लहर बा बहुत
चार दिन जिदगी आ सफर बा बहुत

हर कदम पर सदा साँच के साथ दीं
बेईमानन के भलहीं क़दर बा बहुत

खोज अमरित न पावल केहू आज ले
हर जगहि का कहीं अब जहर बा बहुत

गर खुशी जे मिले तऽ सदी कम लगे
गम के साथे तऽ एको पहर बा बहुत

जे जे सिधवा रहे ऊ ठगाइल इहाँ
खोल अखबार देखऽ खबर बा बहुत

आज ले ना केहू मीत भेंटल कहीं
गाँव बाटे बहुत आ शहर बा बहुत

धूल 'आकाश' सबके जे बूझे इहाँ
मौत से ऊ लगे बेख़बर बा बहुत

◆ ◆ ◆

बेटी के बिदाई

नजर में रहे ऊ नगर छूट जाता,
ई कइसन मिलन बा कि घर छूट जाता।

जहाँ डेग पहिला ई आपन उठवनीं
कि बाबूजी अँगुरी धरा के घुमवनीं
ऊ बारी बगइचा डगर छूट जाता-
ई कइसन मिलन बा कि घर छूट जाता।

सखी सब के टोली दिवाली आ होली
कि भाई बहिन संग हँसी आ ठिठोली
बितावल गइल हर पहर छूट जाता-
ई कइसन मिलन बा कि घर छूट जाता।

जुडाइल करीं रोज हम जिदगी में
कि माई के ममता के जवने नदी में
ओ उफनत नदी के लहर छूट जाता-
ई कइसन मिलन बा कि घर छूट जाता।

इहे सोच के आज आवे रोवाई
इ गँउवाँ नगर अब से हितई कहाई
बसे जान इहवें मगर छूट जाता-
ई कइसन मिलन बा कि घर छूट जाता।

◆ ◆ ◆

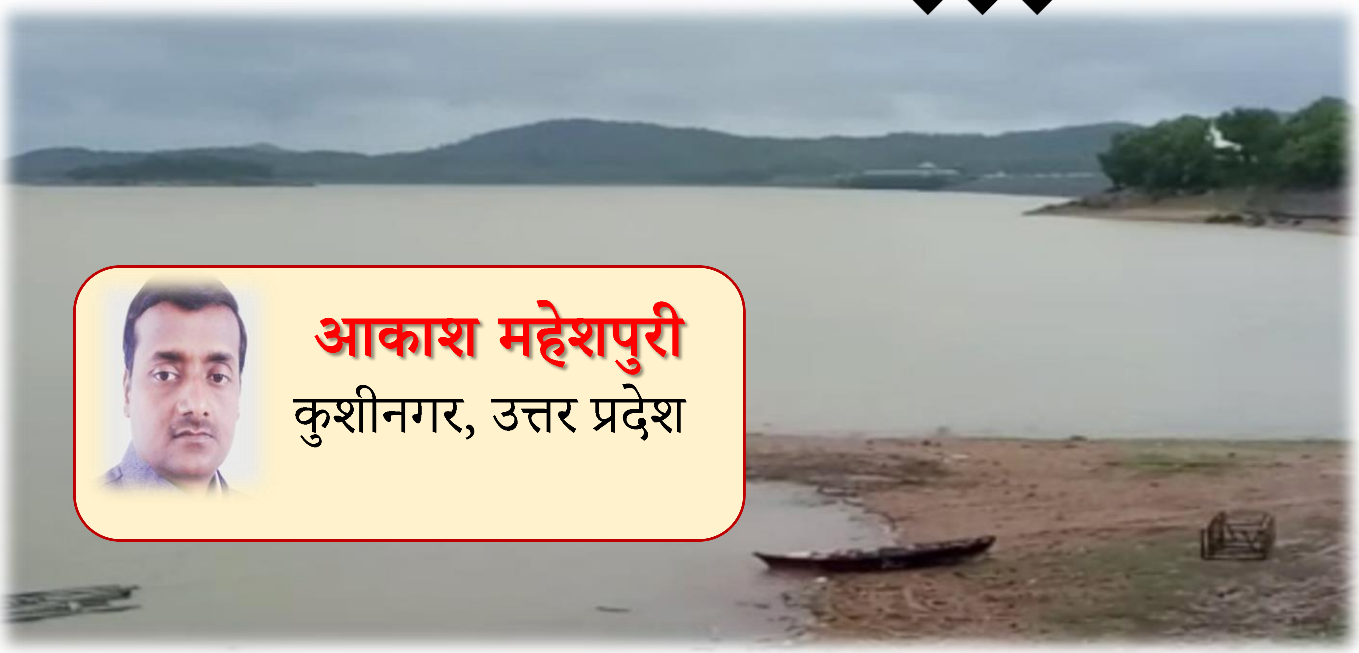

आकाश महेशपुरी
कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

निर्गुन

पिजरा खुलते चिरई उड़ि गइली असमनवाँ,
मोहाइल काहें अबले बाड़ तू?

निरजन वन में रहे खतोना बाज झपट्टा मारे;
चारा-दाना-पानी खातिर घूमे दर-दर मारे।
आपन जान बँचावे खातिर अइली तोहरे पसवा,
मोहाइल काहें अबले बाड़ तू?

उड़ि के कान्हे पर आ बइठलि तोहरे माया जागल;
ध के ले के अइलऽ गाँवे घरे भागल-भागल।
देखि देखि के हइमस खायिल गाँव-जवार के लोगवा,
मोहाइल काहें अबले बाड़ तू?

पललऽ-पोसलऽ, नीर पियवलऽ, पिजरा में बइठवलऽ;
दाना-चारा लायक ओकरे जूने-जूनि खियवलऽ।
बेमार देखते दवा करवलऽ जा के अस्पतलवा,
मोहाइल काहें अबले बाड़ तू?

ऊ त वन के चिरई रहऽलि पोस तोहार न मनलसि;
अउरी ना त फूटही आँखिन, तोहके दिखि ना पवलसि।
फुदुके- छटके- कूदे ऊ सहलावत देखि के हथवा,
मोहाइल काहें अबले बाड़ तू?

एक दिना संजोग से पिजरा खुलते चिरई भागलि;
आरे- पासे बिचरति रहे हाथ न तोहरे लागलि।
उड़ि-उड़ि ए डारी ओ डारी होखे समनवाँ,
मोहाइल काहें अबले बाड़ तू?

बहुत पोल्हवलऽ बहुत बोलवलऽ, एक्को नाहीं सुनलसि;
दूसरे पेंड़न के डारी पर खोंता अपन बनवलसि।
अब ना लवटी नेवछावर करबऽ तू केतनो जनवाँ,
मोहाइल काहें अबले बाड़ तू?

मोह-माया तू केतना करबऽ अब्बो चेत तू कृष्ना;
सौदागर भी इहे कइलें मेंटल ना उनके तृष्ना।
आवे वाला जाला एकदिन दुनियाँ के समनवाँ,
मोहाइल काहें अबले बाड़ तू?

◆ ◆ ◆

सौदागर सिंह
देवरिया(उ.प्र.)

कीमत

हमरा ई बुझात बा
कि हम
रउआ के जानऽतानीं।

हमरा ईहो बुझात बा
कि रउआ
हमरा के चिन्हऽतानीं।

हम जनमला का
पहिलके साल में
रउआ के
जान गइनीं
जब हमरा मुँह में
अन्न के
पहिलका कवर आइल।

आ ऊ अनाज
रउए ऊपजावल रहे।

तब से अबहीं ले
राउर अनाज
हमरा खून के
हिस्सा बन गइल बा
आ खून में
दऊड़ रहल बा।

हमरा ई लागऽता
कि हमरे खातिर रउआ
अनाज ऊपजावत रहलीं
आ हम खात रहनीं।

हमरा लागऽता कि
हमनी के रिश्ता
बहुत पुरान बा।
हम भोगेवाला हईं
राउर नाम किसान बा।

हमरा ई लागऽता
कि राउर गुणगान
हम ना कर पाइब।
राउर करजा
ना सधा पाइब।

बाकिर सरकार
कह रहल बिया
कि राउर कीमत
ऊ चुका दिहलसि ह।
रउरा अनाज के
सही दाम
लगा दिहलसि ह।
हमरा ई बुझात बा
कि सरकार
रउआ के
नइखे चिन्हत।
बाकिर रउआ
हमरा के चिन्हत बानीं।

◆ ◆ ◆

कौशल मुहब्बतपुरी
मुजफ्फरपुर, बिहार

तनिक घुँघुटा उठा के देखऽ ना

तनिक घुँघुटा उठा के देखऽ ना।
नज़र हमसे मिला के देखऽ ना।

जान हाजिर बा एक इशारा पर,
तू कबो आज़मा के देखऽ ना।

राह केतनो कठिन बा कट जाई
डेग आगे बढ़ा के देखऽ ना।

कुछ अन्हरिया जरूर कम होई,
एगो दियना जरा के देखऽ ना।

लोग पहुँचा ले पहुँच जाला जी,
तनी अंगुरी धरा के देखऽ ना।

सँउप देहब ई जिदगी 'संजय',
हमके आपन बना के देखऽ ना।

◆ ◆ ◆

ई तो मौसम के मार हऽ

आँख से आँख लड़ गइल होई।
जान आफ़त में पड़ गइल होई।

ई जवन लोर बह रहल बाटे,
नेह -नदिया उमड़ गइल होई।

केहू असहीं कहाँ खफा होला,
बात कवनो बिगड़ गइल होई।

सामने साँच के कहाँ ठहरी,
झूठ जड़ से उखड़ गइल होई।

झूठ के झूठ - साँच तोपे में,
साँच साँसत में पड़ गइल होई।

ई तो मौसम के मार हऽ 'संजय',
पात पतझड़ में झड़ गइल होई।

संजय मिश्र 'संजय'
कार्यकारी सम्पादक
सिरिजन

हम तऽ किसान के बेटउवाँ

रउवा शहरी बाबू हई,
हम तऽ किसान के बेटउवाँ।

खेते में हरवा जोत के,
ओहमें बियवा बिछाइला।
खूने से सीचिके अपने,
ओमें फसलिया उगाइला॥
दुःखवा भूलाई के अपने,
दिन राति खुशिये मनाइला।
लूटेला लूटेरा आइके,
फसलिया तो सगरी गउवाँ॥
रउआ शहरी बाबू हई,
हम तऽ किसान के बेटउवाँ॥

कबहूँ पड़े इहवाँ पाला,
कबहूँ पत्थर बरिस जाला।
कबहूँ तो बाढ़ आ जाला,
कबहूँ बर्षा बाद जाला॥
तबहूँ आसरा ना जाला,
मन जोशे से मचल जाला।
कतनो आफत बिपत आई,
हम तो बदलब ना सुभउवाँ॥
रउरा शहरी बाबू हई,
हम त किसान के बेटउवाँ॥

देवता केहूँ के रहेले,
कवनो मन्दिरे पहाड़े पे।
देवता हमनी के रहेले,
पोखरा नदी सिवाने पे॥
बनावल टेढ़ बा घर एके,
लागल बानी सजावे पे।
रोजे इहवाँ लागल बानी,
तबो न दूर भइल अभउवाँ॥
रउआ शहरी बाबू हई ,
हम त किसान के बेटउवाँ॥

चले व्यापारो हमरे से,
चले संसारो हमरे से।
बने इमारतो हमरे से,
बूझल भूखवो हमरे से॥
खेतिया जे शाप ना कहल,
खेतियाँ जे पाप ना कहल।
दुःखवा सह के जे बचावे,

जग में देशवा के नउवाँ॥
रउवा शहरी बाबू हई,
हम त किसान के बेटउवाँ॥

◆ ◆ ◆

राम पुकार सिंह "पुकार" गाजीपुरी
रिसड़ा, हुगली, पश्चिम बंगाल

आषाढ़, एगो चिन्तन

लागल अषाढ़ बाकिर गरमी बेहाल बा।
बदरा के दूर तक ना कवनो पता हाल बा।
खेतवा के माटी जिसे पत्थर बुझात बाटे,
धनवाँ के बीया कइसे पड़ी अजब हाल बा।

'आषाढ़ का एक दिन' 'मोहन' रचावत होइहें।
'कालिदास' के 'मल्लिका' सपना में आवत होइहें।
मौसम के आँच में सब कल्पना भुला गइल,
ना जाने कब बरखा से धरती निहाल होइहें।

जंगल कटत जाई जब दूषित बयार होई।
ताल पोखर पाट के जब शहरी दयार होई।
प्रकृति से छेड़छाड़ कपारे पड़ल बा अब,
'एसी' के कल्चर से जब 'वार्मिंग' अपार होई।

वाहन प्रदूषण से जब हवा के बिगाड़ल जाई।
प्लास्टिक के कचरा से जब धरती पसारल जाई।
पर्यावरण भइल बा बदतर हमनीं के आदत से,
मौसम बनी ना जबतक आदत सुधारल जाई।

अबहूँ से चेतीं हमनीं भइल बा ना अब्बो देरी।
आदत करीं परिवर्तन प्रकृति से नाता जोरीं।
खेत खलिहान देखे मोटरसाइकिल से ना,
पेट्रोल जराईं कम्मे साइकिल से नाता जोरीं।

पेड़ पौधा रोपीं भरसक करीं अउर ओकर रक्षा।
पा◌ॅलिथिन से नाता तोड़ीं झोला के राखीं इच्छा।
पाटल इनार पोखर फिर से जियावे के बा,
नदी नाला साफ रक्खीं गंगा मैया के बा इच्छा।

अबहीं से संकल्प लेके खुद से जब करल जाई।
मौसम में बहार आई प्रकृति में निखार छाई।
फिर से समय से सावन मेघा मल्हार गइहें,
ऋतुचक्र में निश्चित ही समय के सुधार आई।

◆ ◆ ◆

संजय कुमार राव

कजरी

हमरे जइसन मिलल भउजइया हो कि
ननदो के भागि जागल सखिया ॥

दिन चढ़ला पर रोज उठेली कँहरते।
पँजरे माई के बइठें खुद के सम्हरते ॥
दतुवन थम्हावें उनके भइया हो कि
ननदो के भागि जागल सखिया ॥

इहे कार-धार जदि ससुरा में करिहें।
भीरि परी जहिया तहिया नाक खूब गरिहें।
मिली जा ना गोतिन अठुरहिया हो कि
ननदो के भागि जाल सखिया।

उनके अर्हाईं नाहीं खुदे सब करेनीं।
मुँह न फुलावें तनिको एतने से डरेनीं।
तवनो प बुझेली मुदइया हो कि
ननदो के भागि जागल सखिया ॥

◆ ◆ ◆

चढत असढ़वा

चढत असढ़वा ना बरसे बदरिया
झुराई गइले ना
खेत गिरल बेहनिया झुराई गइलें ना।

पिया परदेसिया ससुर अकसरुआ
चलऽ हो देवरू ना
करे खेत पटवनिया चलऽ हो देवरू ना।

देवरू अलगरजी चलावें आपन मरजी
सुनेलें बाति ना
टारि जालें अर्हवनिया सुनेलें बाति ना।

मेघ से अरज बाटे बरसे कि खेत पाटे
आगे बढ़े ना
बढ़े आगे के किसनिया कि आगे बढ़े ना।

◆ ◆ ◆

माया शर्मा
प्रबन्ध सम्पादक
सिरिजन

नशा

नशा पानी छोड़ीं सइयाँ, करी मेहरबानी किसानी करीं।
जिनगी में काटबि रउरे चानी, किसानी करीं।

हर बैल जुअठा संग खेत जब जाइबि।
ले के नहारी घड़िला पानी पहचाइबि।
घास भूसा लाइ के खिआइबि सानी पानी,
मेहरबानी करीं।

नशवा के कइले से करेजवा लेसाई।
लोटा थरिया बीकि गइल खेतवो बिकाई॥
हथवा पसारि जनि करी नादानी,
मेहरबानी करीं।

नया नया बीज लेके खेतवा बोआई।
लहरत फसिलिया देखि मन हरसाई।
होखे न पाई पइसा कौड़ी के गिरानी,
मेहरबानी करीं।

मानि जाईं कहना गिरहतिया कराईं।
भरती ना खोजीं किसान क्रेडिट बनवाईं।
करीं किसानी नाहीं आई परसानी,
मेहरबानी करीं।

करीं सुधार अगिला पीढ़ी सुधर जाई।
जइसन बोआई देखीं ओइसने कटाई॥
मधुसूदन कहें करीं खेत निगरानी,
मेहरबानी करीं।

◆ ◆ ◆

माई

माई के अँचरा के जे के मिलल छाँव
केहू ना लगा पाई ओकरा पर दाँव

बाबू के देखते माई खुश हो गइली
जीवन के रहिया पर माई जुड़इली
गोतिन परोसिन से मिले ठाँव ठाँव
माई के अँचरा

माई खिआवे गिनि गिनि मामा
कवरवा।
लागे न नजर खातिर लगावे कजरवा।
सासु ससुर के चूमेली पाँव।
माई के अंचरा

जेकरा न भइल कबो माई से भेंट हो।
जीवन में कबहूँ ना भरल पेट हो।
ना सूझे रहिया न सूझेला गाव।
माई के अँचरा

माई के पँउवाँ मे सगरी तीरथ बा।
जे नाहीं माने माई के जीवन बीरथ बा॥
श्रवन जंग में आके क गइलें नाँव।
माई के अँचरा

लागे घाव लइका पीरा माई के होला।
ओरहन सुनि बोले लइका हमार
भोला॥
मधुसूदन स्वर्ग सुख माई के पाँव।
माई के अँचरा

◆ ◆ ◆

मधुसूदन पाण्डेय
लक्ष्मी गंज कुशीनगर

खुले में शौच के बंद करीं

कुछऊ उनसे बात करीं त,
बिखिन भरल जवाब रहल,
बीस कोन के मुँह बनावस,
भइया के पेट खराब रहल।

सूरुज के जब चाप चढ़ल
गर्मी से सभे बेहाल रहल,
पेट में केतना आग रहल,
ना पूछीं कइसन हाल रहल।

कबहूँ भीतर, कबहु बाहर,
दउर- दउर दिन रात कटल।
बेरि-बेरि कि केतना बेर,
का कहीं ना हिसाब रहल।

उठ जाए ऊ तड़के तड़के,
रह जाए कुछ छीटें पड़ के,
गरज तड़प के बादल बरसे,
तड़क भड़क के छूँछे भड़के।

पेटसफा और एलोवीरा,
करें उपाय ना कौनो जीरा।
रामदेव और बालम खीरा,
बन जाए बस पेट ई हीरा।

हजमोला ना हजम करे अब,
कौनो असर ना ओकर होला।
लपट उठे एह पेट मे अइसन,
बनि के बमके बम के गोला।

एक रात के बात सुनीं,
बस तीन पहर ही बीतल बा।
अधकचरे में नींद खुलल बा,
पेट में अइठन उठल बा।

खोजलें घर में लोटा लाठी,
लोटा मिलल न लउके लाठी।
अन्हारे धुन्हारे गइलें पिछुवारे
देखलें बोतल खोंसल टाटी।

तेजी में ऊ लाएट छोड़लें
जइसे तइसे पानी भरलें,
झट पाँएट के ढीला कइलें,
झप देना तब आगे बढ़लें,

अटकल साँस गले में कब्बे,
स्पीड भइल तब अस्सी नब्बे।
लउके राहि ना देखें जब्बे।
पेट कहे कि अब्बे तब्बे।

दुइ गो कुक्कर आहट पाके,
एन्ने ओने लगलसन झाँके
अबरा-झबरा तरनइले सन,
शेरुवा भोंकलस फुरना के।

सुनि के कुकुरन के भोंपा,
दउरल मनई के झोंपा,
लाठी लेके झगरू कहलें,
अइलस डाकू दउर सोखा।

दुइ लबदा जब देह पे गिरल,
घाव लागल करिआँव में,
लइकाचोर ई धरकोसवा ह,
भइल तमासा गाँव में,

आहि रे दादा आहि रे माई,
हमहीं हईं हो झगरू भाई,
जनि हमके मारऽ हो सोखा,
अनझिटके में भइल धोखा।

अजीब तहनीं के लीला बा,
भाई पेटवे ह तनि ढीला बा,
हई देखऽ हाथ मे लोटा बा,
अउ हाथ गोड़ सब गीला बा।

कहत रहनीं हँ कहिया से,
भइया का बात बुझाई ना,
डोल-डाल के गरज रहे त,
खुले में शौच के जाई ना,

आप सभी से का बतलाईं,
केतना दरद ना गिनती बा,
एक्के गो उपाय करीं बस,
हाथ जोड़ के विनती बा,

घर में शौचालय बनवाईं,
ना तनिको पाखण्ड करीं।
इज्जत आपन बचा के राखीं,
खुले में शौच के बन्द करीं।

◆ ◆ ◆

सुजीत पाण्डेय
कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

मंगरुवो के प्यार हो गइल

पढ़े-लिखे ना तनिको आवे।
कुक्कुर जइसन दिनभर धावे।
माई-बाप के बात न माने,
लफुवन के सरदार हो गइल।

रूखी कट जुल्फी राखेला।
तलब तिरंगा नित फाँकेला।
लाज सरम सब घोरि पी गइल,
खरहा बढ़ि के स्यार हो गइल।

पुरुखन के सब अनधन तापे।
काग-राग में गीत अलापे।
हाव-भाव के गजबे बाना,
जइसे बड़ फनकार हो गइल।

झूठमूठ में सुतल रहेला।
हरदम फुन में घुसल रहेला।
सुग्गा मैना ओकर दुसमन,
उरुवन के पटिदार हो गइल।

ही-ही ही-ही हँसत रहेला।
टोन सभे पर कसत रहेला।
दुनिया भर के बुरबक समुझे,
खुद बड़का हुशियार हो गइल।

माई बाप के छोह भुलाइल।
जिनगी के ऊ टोह भुलाइल।
गलत सलत संगत में पड़ि के,
वासना के शिकार हो गइल।
मंगरुवो के प्यार हो गइल।
मंगरुवो के प्यार हो गइल॥

◆ ◆ ◆

विमल कुमार
जमुआँव, बिहार

जरूरत बा

कबो हमरा जरूरत बा कबो तहरा जरूरत बा,
सभे ई जान ले बतिया इहाँ सभका जरूरत बा।

पड़ोसी से मिलीं जा के तनी सा हाल उनकर लीं,
अरे अतने त शिष्टाचार जिनगी का जरूरत बा।

कबो आँधी कबो तूफान हउवे चक्र जीवन के,
इहे अब सार जिनगी के बनावे का जरूरत बा।

दया-माया अउर कुछ प्रेम के अब बीज बोवे के,
भला कवनो महूरत के कहाँ केकरा जरूरत बा।

खुशी से काट लीं जीवन जवन हमनीं मिलल बाटे,
इहे संदेश 'गीता' के सुनावे का जरूरत बा।

◆ ◆ ◆

गीता चौबे
"गूँज"
राँची झारखंड

आदमी

अपने अपना के बिला देला आदमी
माटी में माटी मिला देला आदमी

आँटे के दिन पर, कहा के आपन सगा
जर के भीतर से हिला देला आदमी

गैरो के चिन्हलीं मिला के दिल सवचलीं
आँसू अपने तऽ पिआ देला आदमी

रोचक गाथा बा कहानी पढ़ के चलीं
जस आ अपजस के गिला देला आदमी

राही होई ऊ कवन समुझी ना कबो
रोआँ डँहका के जिया देला आदमी।

◆ ◆ ◆

चललऽ

दम प अपना जहाँ लड़े चललऽ
दोस दूजा के का मढ़े चललऽ

रोसनी बार के अबो तिकतऽ
घाट सुनहट प अब हँसे चललऽ

आदमी बोल ना सकल झूठा
आँख कोमल तहाँ गड़े चललऽ

घर त केहू के बसल बसल बाटे
आग बारे शमन करे चललऽ

चान अंगना अबो निकल आइत
बाकि सपना लहू करे चललऽ

जान जाई सभे इलाका के
वोट खातिर पएर परे चललऽ ।

विद्या शंकर विद्यार्थी
रामगढ़, झारखण्ड

छदमी बनल बा छाँह

केहू के रौंदत चले अइसन इहाँ के चाल भइल,
कहीं का बात जमाना के अजब हाल भइल।

लउकत नजर के सोझा मुँह मोड़ के चलीं,
जनलो प हर दरद के संग छोड़ के चलीं,
केहू त बता देवे कि काहे के अइसन चाल भइल।

आपन बा आजु उहे जे कुछऊ त दे रहल बा,
मानेला सभे साँच उन्हकर जवन कहल बा,
कदम-कदम प चलल त अब मोहाल भइल।

जहवाँ चलीं गली में छदमी के छाँह लउकेला,
बस्तर बदन के अपने डेरावत साथ धउगेला,
ठेकल साँच के आँच त उनका बडी मलाल भइल।

सासत में सुसुकत साँस लागे उखड़ रहल बा,
आदमी ना केहू बाँचल देवेन्दर के ई कहल बा,
हीरा रतन बा सँइचल त काहे सभे कंगाल भइल।

◆ ◆ ◆

देवेन्द्र कुमार राय
जमुआँव

नेह के डोर

नेह के डोर अइसन बन्हाइल रहे।
डाह नेहिया से हरदम डेराइल रहे।

माई लइकन के दे सुख के मोती, भले
उनके साड़ी में पेवना सटाइल रहे।

मन ई तड़पे ला साथी-सँघाती बिना-
उनसे मिलला बदे ई भुखाइल रहे।

घुन जिनगी में लागी ते चाली ए के-
केतनो आखा लगा के अखाइल रहे।

माई मांगेली बरदान भगवान से-
बेटा-बेटी से अँचरा फुलाइल रहे।

बाटे बेइमान जग में उहे आदमी-
माल खा के जे भीतरे गमाइल रहे।

छल, कपट छोड़ पाई ऊ "कृष्णा" कहाँ-
जेकरा हियरा में स्वारथ समाइल रहे।

◆ ◆ ◆

कृष्णा श्रीवास्तव
हाटा, कुशीनगर,उत्तर प्रदेश

उतरि जाई पानी

आन के जियान क के काटऽ जनि चानी
सुतरि जाई जहिया उतरि जाई पानी

चाभत रहे दही रोज चभकल बिलरिया
लबदा से भेंट भइल छटकल गतरिया
आ गइल इयाद ओ बिलरिया का नानी
सुतरि जाई जहिया उतरि जाई पानी

चुअला से तरकुल जो माथा कुँचइहें
फिर - फिर सियार नाहीं ताड़े तर जइहें
बिसरी ना तरकुल के हँइचल निशानी
सुतरि जाई जहिया उतरि जाई पानी

दुसरा में चोरी से जालि जनि फेंकऽ
अवधू हो अपने पोखरिया तूँ छेंकऽ
गिरो जनि तहरे मछरिया पर घानी
सुतरि जाई जहिया उतरि जाई पानी

◆ ◆ ◆

अवध किशोर 'अवधू'
कुशीनगर उत्तर प्रदेश

जियान करऽता

बीड़ी पी पी के हमरो बलमुआ, जिनिगिया जियान करऽता।
राति-राति भर खाँसेला रोजो, बइठले बिहान करऽता।

केतनो मनाईं, ना मानेला बाति के।
करेनीं जो माना त बोलेला डाँटि के।
नाहीं सूते, ना सुतहीं ई देता, बड़ी परेशान करऽता।

कबो कबो चिल्लम में भरि लेता गाँजा।
हो गइल सपना बा जिनगी के माजा।
ओकर जान भइल बाटे भांग गोला, ओही के बखान करऽता।

माने न बाति जिनगी भइली दुखदाई।
कोंहरेला कऽहेला आहि दादा माई।
दुख केकरा से आपन सुनाईं कि केतना हरान करऽता।

भाई हो जिनगी में दुख बाटे भारी।
लागे बलमुआ हो जाई जुआड़ी।
डूबि धसि के इनारे भा पोखरा में देबे के जान करऽता।

◆ ◆ ◆

सन्तोष कुमार विश्वकर्मा
"सूर्य"
तुर्कपट्टी, बंजरिया,
देवरिया,उत्तर प्रदे

भीड़ बहुते बा

भीड़ बहुते बा पर बेगाना बा |
शहर के अइसन ताना-बाना बा ||

सड़क बा, रेल के पटरी बा ,बस बा, गाड़ी बा |
दउड़त खाली बा, कौनो ठौर ना ठेकाना बा ||

कुछ लेहला के, कुछ देहला के, इहे रिश्ता बा |
बाकी कहला के खातिर बहुते कुल बहाना बा||

नज़र चौकस बा , ई देखीं नोचि लीहें सन |
जेतना पियवइया नइखन ओतना त मैखाना बा ||

बंदूख केहु के बा अउर हउवे कान्ह केहू के |
ई बुझल मुश्किल बा कि केकरा पर निशाना बा ||

"बावरा" मन ई सोचे ए से नींक गँउए बा |
खाना पीना बा सबसे, सबसे आना जाना बा ||

◆ ◆ ◆

आर के भट्ट "बावरा"
कुशीनगर उत्तर प्रदेश

मिर्जापुरी कजरी

सीमवा पर बढ़ल बा तनाव हो.....
सवनवाँ में ना अइलें बलमू..
सेजिया से भइल बा दुराव हो....
सवनवाँ में ना अइलें बलमू....

सुनिले सिवनवाँ पर होता बमबारी
अइहें ना घरे जब ले दुसमन ना हारी...
भारत के करऽतारें नाव हो...
सवनवाँ में ना अइलें बलमू....

रिमझिम रिमझिम मेघ बरसेला...
लागेला सीतल हवा देह सिहरेला....
हियरा में होला बहकाव हो...
सवनवाँ में ना अइलें बलमू.....

पियवा के प्रीत में बेआकुल बा मनवाँ
चढ़ली उमिर मोर आकुल बा तनवाँ
स्याम पिया आ जइतें गाँव हो...
सवनवाँ में ना अइलें बलमू....

◆ ◆ ◆

श्याम श्रवन
पश्चिम चंपारण
(बेतिया)

रिस्ता नाता नकली बाटे

मेला लागल तीन पाँच के
माल बिकाता झूठ साँच के ॥

सब केहू हुसियार भइल बा
पोथा पोथी बाँच बाँच के ॥

अपने करनी हाथ जरवनी
नइखे कवनो दोस आँच के ॥

पत्थर कहलस आँख झुकवले
हमहीं दिहनी पीर काँच के ॥

मछरी मर गइली पानी में
आइल बा परिणाम जाँच के ॥

रिस्ता नाता नकली बाटे
काम चला लीं घींच घाँच के ॥

◆ ◆ ◆

सुरेश गुप्त
बेतिया

नशामुक्ति

छोड़ऽ गाँजा बीड़ी, कइल सुधार पिया,
जिनगी से प्यार पिया ना ॥

लेलऽ चरस अफीम, फेरु खोजेल हकीम।
इत ऽ मउगत महीन, छेड़ऽ मुक्ति के मुहीम।
दारू तड़िये से भइलऽ तू भार पिया।
जिनगी से प्यार पिया ना ॥

नाश दउलत के होला, काहे बनत बाड़ऽ भोला।
तोहरा भावे नाही छोला, रोजे लीलऽ भांग गोला।
काहे जियते तू करेल अन्हार पिया।
जिनगी से प्यार पिया ना ॥

रोजे पियेल सिगार, बेचि मेहरी के हार।
रहलऽ हिरवे के हार, काहे भइलऽ तू खार।
अपने तनवा से कइलऽ दुलार पिया।
जिनगी से प्यार पिया ना ॥

छोड़ऽ दारू सिगरेट, ना तऽ करी ई आखेट।
लीही जिनगी लपेट, नाम जाई तोहर मेट।
हमरि बतिया पे कइलऽ विचार पिया।
जिनगी से प्यार पिया ना ॥ ◆ ◆ ◆

संजीव शुक्ल
सचिन
मुसहरवा (मंशानगर) पश्चिमी
चम्पारण,बिहार

बाबूजी

बरगद के छाँह तले
हम बइठे ना जानिले
बाबूजी हमार बानीं
बरगद जस ही मानिले

घाम छाँह सहत रहनीं
दुखवा आ सुखवा के
तनिको लपट नाहीं त
आवे देनीं कबो मुखवा पे
जिनगी के मुट्ठीभर बिरवा
रोपत बस त रहिले
बाबूजी हमार बानीं
बरगद जस ही मानिले

नरम नरम मुट्ठिया में
रुखड़ल सभ दूब बा
कभी हाथ खाली त
भरल कभी खूब बा
अपना बाबूजी के संगे
जिनगी हम खोजिले
बाबूजी हमार बानीं
बरगद जस ही मानिले

अपना ही खून खातिर
अब अपना के बेंचतानीं
केहू के कवनो कमी ना रहे
बइठल अब इहे सोचतानीं
नाती पोता से घर भरल बा
तबहूँ त अकेले रहिले
बाबूजी हमार बानीं
बरगद जस ही मानिले

जिनगी के अंत तक त
बाबूजी हमार जवरे रहेम
सही हो भा गलती कउनो
बाबूजी त हमरा के कहेम
जिनगी में छाँह मिलल
बाबूजी सब त सहिले
बाबूजी हमार बानीं
बरगद जस ही मानिले

◆ ◆ ◆

डॉ. मधुबाला सिन्हा
मोतिहारी,चंपारण

रोजो इंतजार में ना

विरहिन रोवत बाड़ी पिया जी के प्यार में
रोजो इंतजार में ना

मनवा लागे ना अकेल
धक्-धक् इंजन करे फेल
सबकुछ लागत बाटे इहवाँ बेकार में
रोजो इंतजार में ना

जल्दी आपन घरे अइतीं
आके जियरा मोर जुड़इतीं
बारहों बिजन बनइती रउरी प्यार में
रोजो इंतजार में ना

रउरे सोना, मोना, धन
लागित खूबे हमरो मन
सजना सेजिया सजइती भिनुसार मे
रोजो इंतजार में ना

कटे रोज कलेश में रतिया
रउआ मानत नइखी बतिया
ओरहन देले बानीं गणेश के संसार मे
रोजो इंतजार में ना

विरहिन रोवतारी पिया जी के प्यार में
रोजो इंतजार में ना

◆ ◆ ◆

गणेश नाथ तिवारी "विनायक"
सह- सम्पादक,सिरिजन

मंजिल मिले आसानी से

मज़बूत इरादा जो होखे त मंजिल मिले आसानी से,
सहनशक्ति जे धैर्य रखें जन उभरे ऊ परेशानी से।

निराश ना कबो होखे के, ना करे के गलानी,
मुद्दा पर रहीं अटल, ना करे के आनाकानी।
बोल त लोग बोलबे करे, सुनले बानी कानी,
तीर ना जौन काम करे, कबो कर जाला ऊ बानी।
एकर मतलब ई ना भइल, पल्ला परल बा ज्ञानी से..
सहनशक्ति जे धैर्य रखें जन उभरे ऊ परेशानी से।

जब बेर, बेर गिर उठ के चहुँपे सफलता के रहिया,
आँख फार के ओके देखे अजबे लोग तहिया।
कानाफूसी करे लोग सब आपसे में बटोराई,
जे मेहनत करी आगे जाई रोक केहू ना पाई।
बढ़ेवाला बढ़बे करे डरे ना आँधी पानी से..
सहनशक्ति जे धैर्य रखें जन उभरे ऊ परेशानी से।

◆ ◆ ◆

दीपक तिवारी
श्रीकरपुर,सिवान

हमसे फरका रहि के

हमसे फरका रहि के खुद के ना भुलवाई रउआ
कुछ कहीं, सुनीं, बोलीं आ बतिआईं रउआ।

रउआ हरदम काहें हमरा सपना में ही आवेनीं
कबो- कबो त सोझा से नज़र में आईं रउआ।

रउआ के हम आपन मानीं, कहवाँ कुछ मांगिला
हमके पल भर देखीं इचिका सा मुसुकाईं रउआ।

दुनिया भर के मौसम बा राउर मौसम अलगे बा
बूँनी, बादर, बयार बनि के हमरा पर छा जाईं रउआ।

मन के सोचल सपना कब तक ले सपना रहेला
आपन कुल्हि सपना ई तनिका समझाईं रउआ।

खुशबू-खुशबू बनि के बनल रहीं सब अपनन में
जइसे तुलसी गमके आंगन में गमक जाईं रउआ।

दुःख होला बस न समझला के फेर अउरी का
सोचीं, समझीं, दुःख में अतना न अझुराईं रउआ।

प्रेम के आगे-पीछे दुनिया, प्रेम सभका बीच में बा
प्रेम के देखीं, प्रेम से सीखीं, प्रेम के पा जाईं रउआ।

◆ ◆ ◆

दीपक सिंह
(कोलकाता)

जवना संबंध के जवन सम्बोधन होखे के चाहीं उहे रहे के चाहीं ना त बोलेवाला सहज रहेला, सुनेवाला कन्फुजिया जाला।

सिवान के शास्त्री नगर मुहल्ला में रहनीं त हमरा सामने दू भाई के परिवार रहत रहे।ओमें छोटका भाई के लड़िका अपना बड़का बाबूजी के बड़का बाबूजी कहऽसन मगर अपना बाबूजी के चाचा कहऽसन। काहे कि बड़का भाई के बेटा-बेटी उनकरा के चाचा कहत रहें, जवन कहहूँ के चाहीं, उहे सुनके छोटका भाई के आपन बेटा-बेटी भी चाचा कहे लागल। हमनीं के सुन के कन्फुजिया जाईं सन पर ऊ लोग सहज भाव से चाचा कहे।

मरते दम तक ऊ चच्चे रह गइलें, बाबूजी कहियो ना भइलें।

हमरो घर में एगो अलग सम्बोधन बा। हमनीं के दीदी के जिया कहेनीं सन। बड़ी जिया छोटी जिया। अम्मा से पूछनीं त बतवली कि मुजफ्फरपुर में जब रहनीं सन त मकान मालिक किहाँ दीदी के जिया बोलल जाव, उहे सुनके हमनियों के जिया बोले लगनीं सन।

ई सब त लड़िकाईं के बात ह। बड़ भइनीं सन। शादी-बिआह भइल। भाभी अइली त एगो अलगे प्रचलन शुरू भइल। भाभी के चार भाई बाड़ें। उनका बड़ भाई के लड़िका भइल त सब भाई लोग के मन में पापा कहावे के अरमान जागल। मंटू भइया के लड़िका रहे, ऊ त पापा फिक्स रहलें। उनकरा बादवाला पिकू जी 'पापू' हो गइलें। रंजन जी रंजन पापा आ सबसे छोट संजू जी छोटे पापा हो गइलें। एक लाइन से सभे पापा आ पापू हो गइल। गनीमत रहे कोई पापी ना भइल।

अब इहे प्रचलन भाभी हमरो घर में शुरू कइली। उनके चार भाई बाड़ें त हमनीं पाँच भाई बानीं। के कम? एगो बेसिए।

हमरा बेटा के जनम भइल त सब भाईलोग लाइन से पापा हो गइल। भइया-बड़का पापा। हम-पापा। हमरा बादवाला के घर के नाम ह लालबाबू, ऊ लाल पापा हो गइलें। चार नम्बर भाई के सभे नेताजी कहेला, ऊ ता पापा हो गइलें। सबसे छोट दीपू, ऊ दी पापा हो गइलें।

बेटा साल भर के रहे त लालबाबू रोज सबेरे ओकरा के घुमावे ले जासु। ई नियम हो गइल रहे। रोज सबेरे बाबू के गोदी टांग लेस आ घूमे निकल जास। अब एक दिन ऊ घरे ना रहलें। बाबू सबेरे सबेरे बेचैन हो गइलें घूमे खातिर। पत्नी हमरा के जगवली। 'ले जाइए घुमा ले आइये। लालबाबू रोज इसको घुमाते थे इसीलिए बेचैन हो रहा है।' मन मार के उठनीं। बाबू के टंगनीं आ सड़क पर निकल गइनीं। सामने से एक जना चलल आवत रहलें। मोड़ पर उनकर चाय के दूकान रहे। बाबू उनकरा के देख के हुलसलें। ऊ बाबू के पुचकरलें। हम चायवाला से पूछनीं ,'बाबू के चिन्हऽ तारऽ का?'

'हँ! रोज दुनू बाप-बेटा हमरा दुकान पर आवेला लोग।बाबू रोज बिस्कुट खालें आ इनकर पापा चाय पिएलें।' ....हम का बोलतीं। बाबू के मुँह से पापा-पापा सुन के ऊ सहिये समझले रहलें। फेर हम घुमावे ना ले गइनीं। ओहीजा से लौट अइनीं।

बाबू बड़ भइलें, स्कूल जाए लगलें। एकदिन पानी तेज बरसत रहे त दीपू गइलें स्कूल से ले आवे। मैडम कहली,'उद्धव! तुम्हारे चाचा आये हैं।' उद्धव कहलें, 'वे मेरे चाचा नही हैं दी, पापा हैं।' मैडम के समझ में ना आइल। पुछली,'यह आपको क्या कहता है?' दीपू का बतवते। हँस के रह गइलें। मैडम चिन्हत रहली एहीसे ले आवे दिहली। ना त बाबू दीपू के सब पापागिरी निकाल देतें।

उद्धव जब नउवाँ- दसवाँ में पढ़त रहलें त कोका कोला के एगो ऐड आइल। पाँच रुपया में कोका कोला। 'लगान'वाला दढ़ियाल्ला से आमिर खान अपने पंजा दिखा के पुछस- 'यह कितना है?' ऊ घबड़ा के बोले- पाँच। फेर आमिर खान डाँट के पुछस-'कितने बाप हैं तेरे?' ऊ हकला के बोले- पाँच... नहीं..नहीं..एक।' उद्धव के दोस्त सब के एगो मसाला मिल गइल। पंजा देखा के पूछऽसन,'कितने बाप हैं तेरे?' उद्धव का बोलित? हँस के रह जाव।

सबसे मजेदार किस्सा राकेश के साथे भइल।राकेश, हमार भगिना। बड़की दी के लड़िका। बड़की दी के सास अपना बेटा लोग के माई त रहबे कइल, अपना पोता-पोती के भी माईए रहली। केहू उनकरा के दादी, ईया ना कहे। सब पोता-पोती माई कहऽसन। उहे हाल हमरा अम्मा के बा। हमनीं के अम्मा त हइए हई,

अपना सब नाती-पोता के भी अम्मा! केहू ओकरा के नानी दादी ना कहे।

एकबार अपना दादी आ नानी के ले के राकेश सोनपुर मेला गइलें। कातिक पूर्णिमा के स्नान करा के लौटत रहलें। ट्रेन में खचाखच भीड़। कइसहूँ अपना नानी दादी के बइठा दिहलें। तले ओही भीड़ में सिवान के एगो परिचित बुजुर्ग आदमी भेंटा गइलें। राकेश उनकरो खातिर जगह बनवलें। ऊ बइठ गइलें त देखलेः कि राकेश के साथे दू गो बुजुर्ग महिला बा लोग। पुछलें, 'के लोग बा तहरा साथे?'

राकेश सहज भाव से कहलें, 'माई आ अम्मा बाड़ी।'

बुजुर्ग आदमी के दिमाग चकरा गइल। ई लड़िका हमरा से मज़ाक करता का? कटकटइले मन से पुछलें, 'ए बाबू! माइयो बाड़ी आ अम्मो बाड़ी त मम्मी के कहाँ छोड़ देले बाड़ऽ?'

राकेश ओही सहज भाव से कहलें, 'मम्मी घरे बाड़ी।'

बुजुर्ग आदमी पूरा कन्फुजिया गइलें। 'ए बाबू! तनी हमरा के फरिया के समझावऽ।'

एही से कहनीं हँ जवना संबंध के जवन सम्बोधन होखे के चाहीः उहे रहे के चाहीं, ना त बोलेवाला सहज रहेला सुनेवाला कन्फुजिया जाला।

◆ ◆ ◆

मनोज कुमार वर्मा

सीवान (बिहार)

भुलात कहाउति

अपना भोजपुरी के विशेष समृद्धि ओकरी लचीला स्वभाव से बा। जवन कि सब भाषाई शब्दन के अपने रंग में ढारि लेले। एह में लिखल पढ़ल भलहीं अबले सीमित बा बाकिर अब सब भोजपुरिया के कोशिश रंग लियावता कि किताब पर किताब हर विधा में लिखा रहलि बा। ए से, पहिले भलहीं लोग अनपढ़ रहे बाकिर बोलचाल में तनिको दब ना रहे। तबे त केतने-केतने दंँतकथवा, कहानी सुने-गुने के मिलेला।एकरी आम बोलचाल में मुहावरा/लोकोक्ति जवना के लोग किस्सा भा खिस्सा कहेला, सुने के मिलेला।जवना से बाति अउरी फरछियाह आ रसगर हो जाले। एकर परयोग बूढ़ पुरनियाँ अजुओ करेला बाकिर आजु के नवकी पीढ़ी ए से अब कोसन दूर बा। काहें कि जे सोझ भोजपुरी ना बोल पाई ऊ किस्सा कहानी का कही? जवने के असर ई बा कि ऊ किस्सा-कहानी हमनीं के बीच से अलोप भइल जाता। ए से, अब हमनीं के ई बड़हन जिम्मेदारी बा कि भरसक कोशिश क के ओ के जोगावल जा। जियवले रहल जा। एही सब के ध्यान में राखत हम ऊ भुलल बिसरल कहाउति/किस्सा अरथ बतावत रउरी सब की सोझे ले आवत बानीं।

अब अगिला भाग पढ़ीं .....

१-बिलारी के भागी सिकहर टूटल- (जवन सोचत रह तवन तुरन्त पूरा हो जा।)
२-साँच के आंँच कहांँ- (सच्चा के कवनो बाति डर ना रहेला।)
३-सँपवो मरि जा लठियो ना टूटे- (काम हो जाव आ घाटा न लागे)
४-मुंँह में दही जमावल- (समय पर ना बोलल)
५-आगे नाथ न पीछे पगहा- (आजाद रहल, बेफिक्रि रहल)
६-दू नाइ के सवारी- (केहू एक के साथे ना रहि के दुसरहूँ के साथे रहल ठीक ना होला)
७-पढ़े फारसी बेंचे तेल, ई देख कुदरत के खेल- (अपनी योग्यता के उल्टा काम कइल।)
८-मूस मोटा के लोढ़ा होइहें- (क्षमता से बेसी ना बढ़ल, जेतना जे के बढ़े के बा ओतने बढ़ी।)
९-मंगनी के चंगनी बिलरिया माँगे आधा- (भिखारी से भीख मांँगल, मंगले सामान में से मांगल।)
१०-राम मिलावें जोड़ी एगो आन्हर एगो कोढी- (केहू तरे तालमेल बइठावल, दू गो पयगर के अइसन साथ कि आपस में कमी के पूरा क लें।)
११-करम गति टारे ना टरी- (करनी के फल मिलबे करी।)
१२-लाजे बहुरिया कोवा न खा कमरी ले पिछुवारे जा-(जवन काम सामने करे के तवन छिपा के कइल।)

◆ ◆ ◆

माया शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक- सिरिजन

पंचदेवरी, गोपालगंज

बिहार

आदमियत खोजाता

आदमी में आदमियत खोजाता
कहीं भेंटाता आ कहीं जोहाता

जब मिलता कुछू ना भेंटाता
मन मसोस के सभे रह जाता

मानुष तन अधम हो जाता
सकल समाज आहत हो जाता

मानव मन में भइल दुराव
मिले ना कहीं मन के भाव

चिता चढ़ल स्वभाव बिलाइल
सोचले ना रहनीं कबहूँ हो भाई

मन भी मोटा तन भी मोटा
मानव मन में कहाँ समाता

चिता खइलस चेतना गइल
अबहियों हमरा कहाँ बुझाता

रिस्ता सगरी बहिए गइल
भइले सब साधन के बाढ़ि

मानुष भइले मानवता से हीन
"बृज" बचा लीं करीं दूर विकार।

◆ ◆ ◆

बृजमोहन उपाध्याय "बृज"
सारण, बिहार

हमनी के शरीर में अनेक प्रकार के साधारण आ असाधारण अंग बा। असाधारण अंग के मर्म स्थान कहल जाला। ई कुल बहुत नाजुक आ उपयोगी भइला के साथ साथ एह सब अंगन का भितरा गुप्त आध्यात्मिक शक्ति के महत्वपूर्ण केंद्र भी ह। इहे ऊ केन्द्र ह जहवाँ ऊ बीज सुरक्षित रहेला जेकर उत्कर्ष हो जा त मानुष ज्ञान के उत्तम शिखर पर चहुँप जाई। एह कर्मस्थल में मेरुदंड के सबसे बड़का स्थान बा। चक्र के जागृत करे खातिर सबसे पहिले मानुष के अपना इड़ा, पिगला आ सुषुम्ना नाड़ी पर आपन पकड़ मजबूत करे के पड़ी। ई तीनू नाड़ी मस्तिष्क का मध्य केन्द्र से प्रारंभ हो के गुदा ले चहुँपेले। सुषुम्ना नाड़ी का भितरा एगो त्रिवर्ग होखेला, जवना में अत्यंत सूक्ष्म 3गो धारा बहेला जेकरा के वज्रा,चित्रणी आ ब्रह्म नाड़ी कहल जाला। ब्रह्म नाड़ी मस्तिष्क का केंद्र में चहुँप के अनगिनत भाग में चहुँओर बँटा जाला एही से एह जगहा के सहस्रदल कमल कहल जाला। ब्रह्म नाड़ी मेरुदंड का सबसे निचला भाग लगे करिया वर्ण के षटकोण वाला परमाणु से लपेटा के बँधा जाला, एही बंधन के कुण्डलिनी कहल जाला। कुण्डलिनी एक तरह से सूक्ष्म शक्ति के तिजोरी ह, जेकरा पर छः गो ताला (षट्चक्र) लागल रहेला। जेकरा भी एह छऊ ताला के चाभी मिल जाई ऊ कुण्डलिनी रूपी तिजोरी में राखल धन हासिल कर लिही।

चक्र के प्रकार

मूलाधार चक्र
स्वाधिष्ठान चक्र
मणिपुर चक्र
अनाहत चक्र
विशुद्धि चक्र
आज्ञा चक्र
सहस्रार चक्र

मूलाधार चक्र

ई चक्र गुदा द्वार (मल द्वार) आ मूत्र स्थान (लिग) के बीचोंबीच स्थित रहेला। एकर आकृति चार पंखुड़ीवाला कमल जइसन होला। एकर जागृत वर्ण लं ह। इहे सत्वगुण के क्रमिक विकास स्थल का साथे साथे कामवासना के भी मूल स्थान ह। एगो आदर्श योगी, जिनगी भर कामवासना से मुक्त होखे के जतन करेला, जबकि भोगी ता उम्र कामवासना में ही लिप्त रहेला।

स्वाधिष्ठान चक्र

एह चक्र के स्थान पेडू अर्थात मेरुदंड का अंतिम छोर ह। एकर आकृति छः पंखुड़ी वाला कमल जइसन होला। एकर जागृत वर्ण वं ह। ई चक्र भय, घृणा, क्रोध, हिसा आदि कुल नकारात्मक क्रिया के स्थान ह। साधारण मनुष्य एही कुल झंझट में फँस के नारकीय जीवन व्यतीत करेला, बाकी ज्ञानी पुरुष एह कुल से संघर्ष कर के एह कुल के प्रेम, अभय, क्षमा, अहिसा में बदल देवेला आ वास्तविक जीवन के आनंद प्राप्त करेला।

मणिपुर चक्र

एह चक्र के स्थान नाभी के ठीक पीछा मेरुदंड में ह।एकर आकृति दस पंखुड़ी वाला पियरका कमल जइसन होला। एकर जागृत वर्ण रंग ह।

ई प्रमुखतः पाचन संस्थान के नियंत्रण केंद्र ह। गर्भ में सबसे पहिले बीज रूप में इहे केन्द्र प्रकट होखेला। यौगिक क्रिया के मूलकेंद्र नाभी ही ह। निद्रा, भूख, प्यास, लज्जा, क्रांति, महत्वाकांक्षा आदि एकर वृत्ति ह। ई चक्र आचार आ व्यवहार के नियमित करेला जेह से मानुष में श्रद्धा आ विवेक के जन्म होखेला।

अनाहत चक्र

एह चक्र के स्थान मानुष के हृदय प्रदेश ह। एकर आकृति बारह पंखुड़ीवाला कमल जइसन होला। एकर जागृत वर्ण यं ह। ई शरीर में कांति आ तेज के प्रतिनिधित्व करेला आ साथ में एकरा के वायु तत्व के केंद्र भी मानल जाला। एकरे से शरीर में रक्त प्रवाह, प्रकोष्ठ शुद्धि, स्नायु संचालन आदि क्रिया होखेला आ अनाहत नाद ऐही स्थान से गुंजरित हो के रोम रोम में व्याप्त हो जाला। एह चक्र के जागृत भइला से अंतरदृष्टि के विकास हो जाला आ दोसरा के मन के भावना के जाने के असीम आ अलौकिक शक्ति प्राप्त हो जाला।

विशुद्धि चक्र

एह चक्र के स्थान कण्ठ प्रदेश ह। ई चक्र प्राण चक्र के प्रतिनिधित्व करेला। एकर जागृत वर्ण हं ह। एही चक्र के माध्यम से शब्द के उत्पत्ति होखेला। एह चक्र का जागृत भइला से सब भेदभाव मिटिक के सब समस्या, दुख, द्वंद्व आ विरोधाभास समाप्त हो जाला।

आज्ञा चक्र

एह चक्र के स्थान दुनू भौं (eyebrow) का बीच अर्थात भ्रूमध्य मानल गइल बा। एकरा के दू दल वाला कमल के फूल जइसन बतावल बा। एकर जागृत वर्ण उं ह। एह चक्र के जागरण से योगी ब्रह्म शरीर (कॉस्मिक बॉडी) में प्रवेश करेला आ अहंकार के नाश हो जायेला। प्रभुसत्ता के बोध होखेला। आज्ञा चक्र के जागृत भइला के वास्तविक ध्येय ह शिवनेत्र (Third Eye) के खुलल अर्थात दिव्य दृष्टि के प्राप्त भइल।

सहस्रार चक्र

कुछ लोग सहस्रदल के भी चक्र मानेला। एकर स्थान सिर का मध्य में होखेला। एकर आकृति हजार पंखुड़ी वाला कमल जइसन होला। एकर जागृत वर्ण ॐ ह। ब्रह्म ज्ञानी एकरे द्वारा निर्वाण प्राप्त करेले।

चक्र वेधन

ध्यान एगो अइसन साधन ह जे से बिखरल आ बहुमुखी शक्ति एक स्थान पर एकत्रित हो के एक कार्य में लाग जाला। षट्चक्र के वेधन करे खातिर साधक के अनेक ग्रंथ में अनेक मार्ग मिल जाई। एह सब मार्ग से उद्देश्य के पूर्ति हो जाई बाकी एगो शर्त ई बा कि ओकरा के पूर्ण विश्वास, श्रद्धा, निष्ठा आ लगन के साथ उचित निर्देशन में करे के चाहीं। ◆ ◆ ◆

योगगुरु शशिप्रकाश तिवारी

भटकेसरी, सारण, बिहार

1.एगो वकील साहेब हड़बड़ाइले कोर्ट में घुसलें आ जज साहेब से कहलें- 'हमार पत्नी गर्भवती होखेवाली बाड़ी एह वजह से हम आज अपना मुवकिल के मोकदमा के पैरवी नइखीं कर सकत। एकरा सुनवाई खातिर दोसर तारीख दिहल जाव।' जज साहेब भौंचक रह गइलन। त सरकारी वकील कहलन, 'योर ऑनर! हमार फाजिल दोस्त के कहे के मतलब ई बा कि उनकरा पत्नी का बच्चा होखेवाला बा। गलती से कहा गइल ह कि पत्नी गर्भवती होखे वाली बाड़ी।'जज साहेब आर्डर कइनीं,' अब पत्नी गर्भवती होखेवाली होखस भा बच्चा देवेवाली। दुनू हालत में वकील साहेब का उनका पास रहल जरूरी बा। एह वजह से ए मोकदमा के सुनवाई में दोसर तारीख दिहल जा रहल बा।'

2.एगो बाप अपना बेटा के अंग्रेजी पढ़ावत रहन। शब्द रहे-ASSASSINATION
बाप- 'देखs एकर स्पेलिग इयाद रखल बहुते आसान बा।'
एगो गदहा-ASS
ओकरा पाछे दोसर गदहा-ASS
ओकरा पाछे हम-I
ओकरा पाछे सउँसे देश-NATION"

3.मास्टर साहेब-'लॉकडाउन आ लॉकअप में का फरक बा?'
सन्ता-'जी मास्साब! लॉकअप का भीतर कुटाई होला आ लॉकडाउन में बाहर निकलला पर आ कुटाई करेवाला लोग एक्के कम्पनी के होला।'

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

नवकी कलम

आज रोटी के पहिला नेवाला खाते माई के इयादि आ गइल। दूर के रिस्तेदारी में गइल रही। थरिया में रोटी के आकार से, आ अलग स्वाद महसूस के भाभी (दूर के रिस्ता) से पूछनी कि "ई रोटी के बनावल ह?"

"काहे का भइल, ठीक नइखे लागत का रउवा? रहे दीं मत खाईं, हम दोसर बना देत बानी।" -भाभी कहली।

"ना-ना भाभी, असल में रोटी खा के माई के इयादि आ गइल। अइसन रोटी त माई बनावत रही।"

"अच्छा, त ई बात बा। ई रोटी हमार ममेरी बहिन विभा बनवेले बाड़ी।

"हमरा त बिस्वासे नइखे होत। हमरा त कुछ देर खातिर अइसन लागल ह कि माई थरिया में जेवना जमा के कुछो अउर लियावे गइल होखस।"

"विभा के कॉलेज में कुछ काम बा त हम चाहत बानी कि रउवा साथे चल जइतीं।" -भाभी कहली।

"ठीक बा तैयार होखे के कही दीं।"

कुछ देर बाद होठ पे लाली, माथ प बिदी, आँख में काजल, हाथ में चूड़ी, पैर में पाजेब आ जूती पहिनले 20 से 25 साल के इगो खुबसूरत लड़की सामने ठाड़ रहली। देखते हमरा त लागल कि आजु के दिन हमरा खातिर होस हवाश खो देबे वाला दिन बा। बडी मुश्किल से अपना के सम्हरनीं

"आज कॉलेज का पूरा शहरे घुमा देम बाकिर अइसन रोटी आज साँझ के फेरु मिली नु?" सवाल भाभी से रहे बाकिर जबाब जेकरा से चाहत रहे उहे कहलस- "जरूर अभी साँझ त होखे दीं।"

बुलेट के पिछिला सीट पर जइसहीं विभा बैठली, बिना गीयर के लागल कि हम उछल गइनी।

"का भइल जी?" विभा पुछली।

"कुछ ना ठीक से बैठ गइल बानी नु?"

" ह "

"त चलीं?"

"चलीं।"

अभी कुछे दूर गइल अदमी कि धीरे-धीरे झींसी पड़े लागल।" कही रुकल जाव का ?" हम पूछनी।

"अतना बारिस नइखे होखत कि रउवा गल जाइब, चुपचाप गाड़ी चलाईं।"

हमरा यकीन ना होते रहे कि बुलेट के पिछली शीट पर बइठल लड़की अइसे बात करी कि लागे की बरिसहन के जान-पहिचान होखे। हवा के झोका के साथे-साथे पानी के बून जब उनकर बाल के बिखरावत रहे त ऊ आँखि के बंद आ आसमान के ओर मुँह क के अँगुली से ठीक करत रहली। लागे जइसे एह खूबसूरत पल के अपना आगोश में भरे के कोशिस करत होखस।

ई सब नजारा हम बुलेट के बगल वाला सीसा से देखत रहीं। पता ना कब ई बात हमरा मन में घर क गइल कि हमरा बुलेट के पिछिला शीट के ई हरदम के हकदार बन जास। हम दिन भर का कइनी, हमरा कुछो इयाद ना रहे। हर जगह विभे-विभे दिखाई देस।

साँझ के जब भाभी पुछली कि शहर कइसन रहल? त खाली विभा बोलत रहली। हम टकटकी लगा के उनके के निहारत रहनी।

"भाभी का बताईं? ई शहर देखत रहली आ हम इनका के।" विभा लज्जा के भाग गइली उहवाँ से।

आज शादी के दु बरिस हो गइल। हम दुनो के प्यार के निशानी के रूप में एगो गुड़िया आइल बाड़ी, जे भर दिन घर में शोर मचवले रहे ली । तनी सा नजर हटल की समान बर्बाद । विभा के भर दिन बेटी के संभाले में बीत जाता। हमरा पर कवनो ध्याने नइखे। अब रोटी अकसर जरल, टेंढ-मेंढ़ भा कचगरे रहि जाला। अब त पुनम के चाँद ना, खाली रोटी के दागे दिखेला। अब रोटी वइसन नइखे बन पावत जवना के खा के हम दीवाना हो गइल रहीं।

"विभा आज फेर से रोटी तू कच्चा बना देहलू। रोज-रोज ई कचगर रोटी खा के हमार तबियत खराब हो जाई।"

"वाह! काल्ह तक ले त रोटी बहुँत बढ़िया रहे, खाते माई के इयाद आ जात रहे ? अब का हो गइल बा एमे ? रोज-रोज एके जइसन बनावल त संभव बा ना। हम मशीन थोड़े हईं? खाली जब रोटिये खाये के रहे ता ई एगो मलामत काहे के देहनी हमरा के ? हम बच्चा के सम्हारीं कि रोटी? शादी से पहिले त रउवा हमरा हाथ से जहर भी खाये के तइयार रहनी ? अब त हई रोटियो नइखे घोटात। का हो गइल अगर बेटी के संभाले में दु-चार दिन रोटी जरल खा लेहनी त?" विभा खीस में कहली ।

"साच कहत बाड़ू अब त ई रोटी जहर से कम नइखे लागत।" हम का जननी कि तहरा से शादी करी के हमरा दुचार गो रोटी भी ढंग से खाये के ना मिली ? मति मरा गइल रहे हमार।"

अब ई लड़ाई झगड़ा लगभग रोज दिन के हिसा बन गइल रहे। ना अब दिन भर के थाकल हारल विभा से रोटी बने ना हम अब अभी ले अइसन खाये के आदी हो पइनीं ।

एक दिन हमार कुछ खास इयार दोस्त घरे आइल रहलनि। साँझ के खात बेरि उहे जरल रोटी! गुस्सा में विभा से फेरु लड़ाई हो गइल। हम घर से बिना खइले चल गइनीं। घर में बस रहि गइल बा त बेसुध विभा, रोवत बेटी आ थोड़-बहुत जरल रोटी ।

◆◆◆

अभियंता सौरभ कुमार
जिला-सिवान,बिहार

माई के महिमा क गीत

माई के दुलार-प्यार, कविता कहानी ह ।
सचहुँ के मारे नेह, अमृत निशानी ह ॥
जबले ना घरे जाई, खोजे खिसिया के ।
हे माई खिसि तोहार, गंगा जी के पानी ह ॥

सउसे उमिरिया बीतल, अभी बीती हो ।
माई जेकर खुश उहे, रन सगरो जीती हो ॥
माइये त घर अंगना, माइये दलानी ह ।
माई के दुलार-प्यार, कविता कहानी ह ॥

बाबू के दुःख नाही, होवें कवनो चूक से ।
एही क ध्यान मान, कइली माई सुख से ॥
माई से बड़ कहाँ, कुछऊ सुहानी ह ।
माई के दुलार-प्यार, कविता कहानी ह ॥

माई बस कहत में, डर सब भागि जाला ।
मारे जो केतनो उ, नेह मनमां जागि जाला ॥
माई की रहते ही, सगरो फुटानी ह ।
माई के दुलार-प्यार, कविता कहानी ह ॥

ममता के मूरत ही, माई के सूरत ह ।
माई जब बोलावे त, के नाहीआ सुनत ह ॥
अइसन अभागा ना, कतहूँ बेमानी ह ।
माई के दुलार-प्यार, कविता कहानी ह ॥

केकरो गर दुःख गर, केकरो बुझा जाला ।
भावे अनत-सुख-मह, सबके लुभा जाला ॥
अचरा में तोपि ढापि, कइसन रूपानी ह ।
माई के दुलार-प्यार, कविता कहानी ह ॥

बुकुवा लगावे जब, बबुआ बिजुकि जाला ।
आइल भकउआ कहे, बबुआ सपकि जाला ॥
केतने गो गुन माई के, केतने बखानी ह ।
माई के दुलार-प्यार, कविता कहानी ह ॥

तोर नेह दुलार माई, लोरी भुलाला ना ।
केकर-केकर कवर कहि, खियावल लुभाला ना ॥
घुघुआ माना तोहरो, खेलावल का भुलानी ह ।
माई के दुलार-प्यार, कविता कहानी ह ॥

माई तोसे पियार एतना, रे-रे कहत डर नाही ।
केतनो कोहनाई बाकी, बाची तोसे गर नाही ॥
मणि के दोष कइसन, लिखले बचकानी ह ।
माई के दुलार-प्यार , कविता कहानी ह ॥

◆ ◆ ◆

रघुबंशमणि दूबे
टीकर , देवरिया

अनमोलक थाती

चारि जना एकदिन मिलि जइहन;
गढ़िहन काठ कय एगो डोली।
जोरि चिता में आगि लगइहन,
जइसै जरत हव गाँव में होली।

लकड़ी अस जरि जइहन हडिया
केस जरी जइसे सूखल घसिया।
जरे जबहि कंचन के काया।
स्वजन कुटुंबी तजिहनि माया।

जिनगी के अनमोलक थाती,
ई तन माटी मिलिहें साथी!

◆ ◆ ◆

सुहानी राय

भोजपुरी जनि रउरा बिसराईं

हिन्दी इंगलिस खूब पढाईं, लइकन के अंगरेजज बनाईं।
बाकी एगो बात सुनीं, भोजपुरी जनि रउरा बिसराईं।

चउमिन बरगर रोज चबाईं, होटल में डिनर करवाईं,
लाल के अपना लिट्टी चोखा माँड़ भात के स्वाद बताईं।

टेबल लैम्प से करीं पढ़ाई, बेदांतू से कोचिंग करवाईं
जरा के ढिबरी नाम कइल जे ओ लोगन के गाथा गाईं।

घूमीं देश विदेश अकेले भा इयार के साथे जाईं
लेकिन जब अपना घर आईं मात पिता के पाँव दबाईं।

सभे रही खुश अपना में ना कब्बो कवनो दुख आई
बाकी एगो बात सुनीं भोजपुरी जनि रउरा बिसराईं।

◆ ◆ ◆

बृजेश शुक्ला (नेउरा)
गाँव-एकौना,जिला-देवरिया

ई कहानी सारण जिला के अंतर्गत बाढ़ से आतंकित रहेवाला इलाकन में एगो गाँव बसंतपुर के ह। कहानी के रूपरेखा बिहार में साल दर साल आवेवाला वीभत्स आपदा (बाढ़) से तहस-नहस भइल आम जीवन पर आधारित बा.....।

अब्बे जवन मौसम चल रहल बा बिहार प्रदेश कहीं चाहें अउरो प्रदेश, ओ आसाढी मौसम में खेती ख़ातिर मजदूर किसान घर में आराम कइल छोड़ चँवर में कड़क धूप आ तूफानी बरसात में तपत-भींगत खेतन में लागल रहेलन। बिहार प्रदेश के ग्रामीण इलाका में रउआ अगर केहू के घर अतिथि बन चल गइनीं त उनका घर में नया बहुरिया के छोड़ बाकी केहू दूसर बेकति नाहीं मिलिहें। सभे अपना-अपना खेतन में जी-जान लगा भिड़ल होई। अगर आपके कवनो बड़ी जरूरी काम होखे त फेर मन बना लिहीं पेंट घुटना तक मोड़ के, जूता-चप्पल निकाल रख देईं आ ख़ाली पैर खेत के मेंड़न पर चले के। अउर हँ ध्यान रहे कि पाँव के बैलेंस ना बिगड़े नाहीं त सारा देह कींचड़वाला पानी में सनल मिली...।

गंडक नदी से दुइ कोस की दूरी पर एक दूसरा से अर्धगोला के भाँती बसल चार गाँव बसंतपुर, डुमरी, रघुवापुर आ लालबेगी। ई चारों गाँव आपस में तीन ओर से जुड़ल बा त एक ओर से चारों गाँव के किसानी खातिर लगभग पाँच कोस में फइलल चँवर (खेती लायक भूमि) के खुला मैदान बा।
फसल के समय में खेतन के ओर निकलला पर बड़ा सुहावन नज़ारा देखे के मिलेला। सब गाँववासी अपना-अपना खेतन में हल-बैल भा ट्रैक्टर ले के भोजपुरी धुन लगा धक-धकवले रहेलें।
बैलन के गर्दन में टुन्न-टुन्न क के बाजत मधुर घण्टी बड़ी नींक लागेला। मन खिंचाइल चल आवेला ख़ुद ही खेतन के मेड़ ले। जी करेला घंटन बइठ के सुनत रहतीं ई सब स्वर एक साथ....।
सुमधुर त नाहीं कहल जाई परन्तु बड़ा ही आकर्षक आवाज़ आवेला चहुँओर से। अब त विलुप्त होखे पर आइल लेकिन इहाँ आजुवो जे बुढ़िया मजदूर बाड़ी ऊ दुइ गुट में बँट के धान के बिचड़ा रोपत कजरी आ रोपनी के गीत बड़ा ही लयबद्ध गावेली।
अच्छा ए गीत में जाने कवन विशेषता बा जवन हमके आज ले मालूम ना चलल कि अगर मजदूर लोग गाना कढ़ावल शुरू करेला तले दुसरी ओर से इंद्रदेव आपन रथ साज के चलेलें हकासल पियासल। शायद उनका भी जल्दी रहेला अइसन मनोहर गीत सुनेके...., एक साथ झुंड में उठल संगीत के राग सुन मन हरखित हो जाला अउर नाचे के आतुर हो उठेला गँवई लोकगीत पर।

सामने खेत में बैलन के पगहा लेहले, ऊपर माथे पर तांडव करत सूर्य के उमस में, मन डुबा खेत जोतत अकलू के देख हाथ में छाता अउर कान्ह पर गमछा रखले आवत शिवाकांत सिह कहलें- "का हो अकलू! अबकी खाली हलवे चली? बाबाधाम (बैद्यनाथ धाम, देवघर) चले के विचार ना ह का ..?
कबो सभे बइठ के राय-विचार बनाव जा, काहे से ई आषाढ़ बीते पर आइल बाकी अबकी जल सावन के पहिले हफ्ता चढ़ी कि नाहीं..? तहन लोग के त कवनो साने-गुमान नइखे मिलत जे चलबऽ जा कि नाही?"

अकलू- 'का बाबाधाम जाइल जाई बाबूसाहेब! लागत त बा अबकी बाबा के मरजिए नइखे हमनीं के हाथ से जल पिएके...।'

शिवाकांत- 'अइसन काहे कहत हउवऽ हो मरदवा..?'

अकलू अबकी बैलन के रोक दिहलें- 'का खराब कहत हई.? आषाढ़ बीते के आइल औरि ढंग से कबो पानी ना भइल कि खेती के पियास खत्म होखे..!

इनरदेव कबहूँ ढंग से गरज- बरस कइबहीं ना कइलें जे मन में तनिक आस रहित..। ए खरीदल पानी से कबहूँ घरती के झझावत मिटे वाला बा..?'

कान्हे के गमछा उतार मुँह पर से पसीना हटा के सुखल कंठ के तर करे खातिर खखार के गला साफ़ कइलें-' खरीद-खरीद के पानी डालत-डालत त लागत ह कि घर-दुवार बेंच देबे के होई...।'

एक बेर ऊपर आसमान के ओर देखत फिर से सुखल कंठ के हलक से नीचे गटक.."अबकी लागते नइखे जे बरसात होई, जवन रोपनी भइल उहे सुखाइल जाता। पम्पसेट के पानी से कवनो असरे नइखे पड़त। ए घरती के झँझाइले नइखे जात...।' रउवा सभे त मालिक बानीं, कुछ नाहीं होई तबो खाए-लिए होइए जाई बाकी हमनीं के त छोट मजदूर किसान हईं। जब फ़सले ना होई त का बटाईदार (जमींदार) के देहब अउर काथी से अपना परिवार के गुजारा चलाइब..?

अकलू के सब बात ध्यान से सुनला के बाद शिवाकांत गम्भीरता से साँस ले के कहलें - "हूँ, बात त तू ठीके कहत हउवऽ हो पर चिता जिन करऽ.. जब भगवान मुँह-पेट बना के भेजले बाड़ें त उपायों उहे करिहें। हमर मन कहत बा सावन में बाबा अइसन बरखा बरिसइहें कि ई सारा चँवर पानी-पानी हो जाई..।'

' हूँ, अब त सब उनके आस पर बा, सगरी उनके हाथ में बा...!'

अकलू अबकी गमछा माथा में बाँध बायाँवाला बैल के पिछवाड़े पर जोर से डंडा जमवलें अउर फिनु से अपना काम में रम गइलें।

शिवाकांत अब उहाँ से चलि दिहलें आ रस्ता में लोग से कुछ कहत-सुनत गाँव के ओर ओझल हो गइलें।

घन्टा भर हल चलवला के बाद पसीना से तराबर भइल अकलू बैलन के किनारे खड़ा क के अपने खेत के मेंड़ पर बइठ के गमछा से मुँह पर के पसीना हटवलें।

सामने थोरे दूरी पर दूसरा खेत में धान के बिचड़ा हलावत अपने बेटा (वीरेश नाम बा, उमर पंद्रह से सोलह के आस-पास) से -"ए वीरेश... रे वीरेश.. आरे सुनत नाहीं हवे का रे..?'

वीरेश -'हँ बाबूजी, का कहत हवऽ.. अरे अब काहें नाही बोलत हउवऽ हो, ख़ाली चिल्लाए के जानेलऽ...?

थोरे देर रुक के फेर से - 'तोहार माई कहाँ गइल रे..? पानी-वानी ले आइल हउवऽ जा..? बड़ी जोर के पियास लागल बा। आज धूप बड़ी तेज़ ह, मिरचाई खा तेज़ लागत बा। छोड़ द सन, तोहनियो सब साँझि में रोपिहऽ जा..।'

वीरेश- 'आरे आइल बा पानी, उहाँ महुवारी में रखले बिया अम्मा..। (एक दिशा की ओर अंगुरी से इशारा करके) जा के पी आवऽ अउर तू कुछ देर आरामो क आवऽ छाँव में। हमनीं के रोपनी करत हईं जा। पूरा रोपला के बादे निकलब जा कानो (कीचड़) में से..!'

तनिक देर शांत रहला के बाद दुइ खेत दूर घामे में मेड़ पर खेलत आठ दस साल के बेटी रिकी से "रे रिकी, तनिक तू चल जा बेटी..!' प्यार से चिरौरी कइलें...

रिकी तुनक के ज़बाब दिहली -'हम नाहीं जाइब, तू खुदे जा के पिया दऽ। हम खेलत बानीं..।'

बेचारा के पियास से अधमरा भइल संतानन के जबाब सुन मयूसी से चेहरा लटक गइल लेकिन कुछ देर बाद दूसर कवनो उपाय ना निकलल देख एक बेर फेर जोर लगा के अंतिम प्रयास कइलें- 'ए रवि.. बेटा रवि, तनिक तू जा के ला द बेटा, बड़ी जोर से पियास लागल ह, इहाँ से उठे के मन नाहीं करत ह .....।' (रवि अकलू के दुसरा बेटा, उमिर लगभग बाहर साल) अपना भाई के साथ धान के रोपनी में व्यस्त बा फिर भी गुस्सा में खेलत रिकिया के आँख दिखा के चिल्लाइल- 'रे रिकी, तोहके सुनात नाहीं ह? बाबूजी पानी मांगत हउवन...? उहें से घुड़की लगवलें..।

भाई के घुड़की के डर से रिकी आपन खेलल छोड़ अनमनी मन से पाँव पटक चल दिहलसि पानी लेवे बगीचा के ओर...।

साझ के कुछ देर बाद सड़क के किनारे बिजली के खंभा पर जगह-जगह पीला रोशनी बिखर रहल बा.. गाँव के सभे किसान मजदूर दिन भर के हार-थक के, केहू अपना दुवार पर त केहू अपना आंगन में खटिया पर लेटल दिन भर के थकान मिटावे में लागल बा।

अकलुओ अपना परिवार के संग आंगन में बइठल भोजन करत रहलें अउर उनके बीबी मिट्टी के चूल्हा पर गरम-गरम रोटी सेंक के रिकी के हाथे बाप अउर भाइयन के थाली में भेजा देत बाड़ी..।

अकलू रोटी के टुकड़ा मुँह में डाल के वीरेश के ओर देखलें- 'केतना बोझा के रोपनी भइल ह आज.. अउर रवि तू केतना रोपल ह...?
बाप के अचानक पुछला पर वीरेश कुछ सकुचा के कहलें 'हम तीन बोझा रोपले बानीं अउर रवि दुइ गो...।'
तब अकलू अपना बीबी के ओर देख के 'अउर तू रिकी के माई..?'
'हम कहाँ आज रोपनी क पवले बानीं, कइसे कइसे दू गो रोपाइल ह। तबियते ठीक ना रहल त घरे आ गइली हँ...।'
अकलू कुछ हिसाब क के - 'त कुल्ह मिला के सात बोझा.. माने पाँच सौ साठ रुपया के काम भइल ह...?'
'ना बाबूजी अस्सी अउर.. आठ बोझा..रोपाइल.. ह...!' बीच में रवि बोल उठलें बाकी बगल में बइठल भाई के आँख ओर देख डर से सकुचा के कहलें।
'मतलब?' तनी गुस्सा से अकलू दुनू के ओर देख लगलें।
डेराते डेरात रवि कहलें -'का ह नू बाबूजी आवत रहीं जा घरे त हम दुनू भाई मिल के मास्टर साहेब के खेत में एक बोझा रोपले हईं जा..।'
अकलू अब वीरेश के घुरलें। लेकिन ऊ मूड़ी नवा चुपचाप रोटी तूरे लगलें।
- 'अच्छा ठीक बा बाकि चोरी अउर झूठ ना बोले के चाहीं अबके बाद! पइसा के जरूरत होला त कह के ले लिहऽ लोग। कमाई त तहरे लोग के नू ह...।'
अकलू जियादा गुस्सा कइल छोड़ समझदारी से प्रेमपूर्वक समझावे के कोशिश कइलें।
- 'वीरेश काल्ह केहू के रोपनी ना होई, काल्ह आपन रोपे के बा अउर तू सुबेरे उठ के शाहूजी के दूकान से खाद उठा लिहऽ..।'
रवि-'उनके पहिले के भी पइसा बाकी ह, हम गइल रहलीं बाज़ार त तगादा कइले रहलन..।'
-'त ठीक बा पाँच सौ रुपया ले जा के अब्बे दे दिहऽ अउर कहिहऽ जे पुरानावाला हिसाब काट लेबि आ नया बना देईं..।'
वीरेश खाना खात में ही सहमति से आपन सर हिला दिहलें।
तबले रिकी अपना महतारी के परेशान कइल शुरू कर दिहलसि। ओकर माई खीझ के मारेला उठली लेकिन ऊ भाग के अपना बाबूजी के पीछे छिप गइलि।
'एक्के डाँट काहें ना लगावत हईं वीरेश के पापा! दस साल के भइलि, दिन भर बस खेलत बिया, पढाइयो लिखाई नइखे करति मन से....। भाइयन के साथ कुछ कामो त करे के सिखित..! एके बचपना अबे नइखे जात। कुछ बरिस बाद एक्के बियाह हो जाइ त केंगा ससुरा में काम-धंधा करी..?'
बाकी रिकी अपनी शरारत में मगन बाप के कंधा से झूल माई के जीभ चिढावे लागलि...।
अकलू खाना खइला के बाद -'हमके त कुछ बुझाते नइखे कि अबकी का होई? काहे से तनिको बरसात के आसार नइखे दिखत। ऊपर आसमान साफ़ निबद्दर बा...। पहिले से कर्ज चढ़ले बा। अबकी लागता सगरी ओर से डुबा दिही। घर ना बेंचे के परि जाउ..? '
अउर आपन माथा पकड़ खाट पर बइठ गइलें।
बाहर सडक से होके गुजरत ट्रैक्टर से बड़ी तेज़ आवाज में एगो भोजपुरी गाना मीठा परन्तु विपदा भरल बाजत रहे-
"ए विधाता हो समइया ई कहवाँ ले के जाई..
डेगे- डेगे काँट भरल चलीं कइसे रहिया..
सुखवा छोड़ा लिहले बा हमरा से बहियाँ..,
अइसे में जिंदगी कइसे कटले कटाई...
ए विधाता हो समइया ई कहवाँ ले के जाई......?
वीरेश बाहर बाजत गीत के सुन कबो अपना बाप के ओर त कबो महतारी के मुँह के ओर निहारे लागल रहलें..।

बारिश के इंतजार करत-करत आधा सावन बीत गइल बाकी कबहूँ जम के पानी ना भइल। जेकरा चलते पहिले के रोपल धान के बिचड़ा खेते में सुख के घास हो गइल..।
अब त धरती से एतना तपन बाहर निकले लागल कि शरीर जरि उठे.. लू के जइसन भाप फेंकत धरती पर कहियो थोरहूँ पानी डलला से अउर आग दहके लागे...
खेत में पड़ल दरारो अब वइसहीं मुँह बा के ताकत बा कि कब पानी रूपी प्रेमी आ के ओकरा मुँह में समा दरार के बन्द क के दूरी के पाट देई..।
अकलू साँझ के बेरा खाट पर लेटल ऊपर असमान ओर देख के मन ही मन कुछ विचरण करत रहलें। तबले रिकियो बाप के सम्मुख आ के खाट पर लेट बाप के मुँह निहारे लागलि। शायद ऊ कुछ कहे चाहत रहलि लेकिन बाप के कहीं अउर खोवल देख चुप रहि बस देखते रहि गइलि..।
अकलू असमान में ही देखत- 'का रिकी, कुछ कहत हउवे..? भइया मरले हउवें का तोहके...?'
अउर ओकर सिर उठा अपनी बाँहि पर रख लिहलन।
कुछ देर चुप रहला के बाद सकुचात रिकी- 'अच्छा बाबूजी एगो बात पूछीं..?'
'हाँ पूछु?'
- 'जब इंदर भगवान बरखा ना बरिसइहें त धान तनिको ना होई..?' अपना सूझबूझ से सवाल कइलसि।

-'काथी से होई बेटा..? हमनीं गरीबन के सग़री आस त ई बारिशे बा अउर सग़री थाती ई फ़सल.., धान होई लेकिन धनवान, बड़का लोग के..!'
-'कइसे बाबूजी.., का भगवान बस एही लोग के खेत में बरखा करइहें..?'
-'ना रे पगली, बारिश मुँह देख के थोडी होला। ऊ त जब होई सबका खेत में एक बराबर होई। धनवान लोग के पास साधन बा, पइसा बा। ओ लोग के खेती ना खराब होई..।'
-'अच्छा बाबूजी, ई इंदर भगवान के कान ना होला का..? काहें कि माई कहेले भगवान के बड़-बड़ कान बा। ऊ सबकर बात सुनेलन..त इंदर भगवान त कुछ सुनते नइखन..?' रिकी मायूस हो के नादानी से आपन पक्ष रखलसि...।
-'भाक बुड़बक, उनहूँ का कान बा। सुनेलें। लेकिन उनका त सबके बात सुने के बा नू। काहें कि ऊ देवतो लोग के राजा हउवन..! जब हमनीं के बारी आई त बरसात जरूर होई..।'
-'लेकिन बाबूजी रेखा त कहेले कि इंदर भगवान के हाथी आपन सूँढ़ में पानी भरि के बरखा बरसावेली, का ई सही बात बा..? भगवान के भी हाथी होवेली..?'
'हँ रे.. तोर सखी रेखा सही कहेले। इंदर भगवान के बादल रूपी हाथी समुंदर से पानी भर के लावेली आ बरसात करेली धरती पर..।'
रिकी अपना बाप के सीना से चिपक बतियावत ऊंघे लागलि।
अकलू -' रिकी.., ए रिकी, सुतत हवे का रे..? जो देख त तोर माई का खाना पकावत बिया, जो पहिले खा ले। तब सुतिहे..जा त बेटी..।'
बाहर से घूम के आवत वीरेश -'बाबूजी, आज बहुत गरमी बा अउर ब्रह्म बाबा तर लोग कहत रहले हँ कि आज बारिश मान के ना बा जरूर होई अउर बड़ी जोर के होई..। बाबूसाहेब त कहत रहलीं हँ कि आज टीवी पर समाचारो आवत रहे कि मॉनसून आ गइल बा..।'
चरपाई से उठत अकलू -'हमके भी उहे लागत ह बेटा। काहें कि हर साल की अपेक्षा मानसून अबकी तनी लेट से आवत बा त बारिशों ख़ूब होई..। जाके माई के देखबऽ खाना पकावत बिया कि नाहीं..? कह दऽ जे जल्दी पका ले नाहीं त कब आँन्ही- झौंकि उठ जाई त फेर खाना भी ना पाकी.. तब तक तनिक हम आवत हईं टोला पर से घूम-ख़बर लेके.. अउर रवि से कह दिहऽ जे बैलन के बथान में बान्हल दी..।'
आज बारह दिन भइल मूसलाधार बारिश होत। सारा पोखर, तालाब, नदी अउर कुँआ भर के बहे लागल बा।
ए बारह दिन में कबहूँ घड़ी भर ले अइसन ना भइल जे पानी के रफ़्तार में कमी पड़ल होवे। पूरा उत्तर- पूर्व बिहार में पहिले सूर्यदेव के प्रखर तेज़ से सुखाड़ भइल अउर अब इंद्रदेव के बौछार से त्राहिमाम कर रहल बा।
गंडक नदी के कटाव भी जोरसोर से चालू बा। नदी के आसपास के गाँववासी भयभीत बाड़ें कि कब नदी के रुख उनका गाँव के ओर होई आ सब कुछ तिनका के भाँति नदी में विलीन हो जाई।

अब्बे घण्टा भर पहिले बारिश खुलल बा बाकि पूर्णतः नाहीं; बूंदा- बूंदी चल ही रहल बा।
वसंतपुर के लोग आपन छाता लेइ के घुटना भर पानी में तैर के जरूरत के सामान इक्कठा करे में लागल बा।
शिवाकांत सिह, रामनाथ पंडा आ भिखारी साहू जइसन गाँव के धनी लोग बाहर निकल अपना-अपना बड़ाई के डेंग हाँक गाँववालन के कुशल क्षेम पूछे में लागल बा। अकलू अपना घर के दरवाज़ा पर रखल चरपाई पर बइठल आवे-जाएवालन के बातन के सुनत आ सामने फूस के घर में बाँधल बैलन के दशा देख चिता में पड़ल बाड़ें कि अगर असहीं अउर चार-पाँच दिन बारिश भइल त जानवर पशु भूख से मरे लगिहें..।
बाकी अबो एगो आस बा जे गाँव के लोग जरूर कवनो निदान निकाली अउर सबकर माल-गोरु त अभी असहीं बा।
"मनुष्य ए धरती के सबसे स्वार्थपरस्त प्राणी ह। अगर कही इंसान के ख़ुद निजी घाटा, क्षति होखे त इंसान के बड़ा दुःख होला ओकरा लागेला कि ई सारा दुःख सिर्फ ओकरे खातिर बा.. पर उहे कष्ट चाहे क्षति सामूहिक रूप से होखे त इंसान ओ समय आपन दुःख के सबका ऊपर बराबर समझ कुछ धीरज रख ख़ुद के अधीर होखे से बचा के रखेला..।
ए बखत अकलू के भी उहे दशा बा। अकलू चारपाई पर बइठ सबके भावभंगिमा के अवलोकन करे में लागल बाड़ें अउर उनके बीबी, बेटी आंगन में भरल बारिश के पानी के बाहर निकाले में लागल हई। तब ले वीरेश कहीं से भागत आ के अकलू के चारपाई पर बइठ गइलें।
- 'का भइल वीरेश, कहाँ से भागत आवत हउवऽ.? उनके लंबा-लंबा सांस लेत देख के अकलू पुछलें।
-'बाबूजी गइल रहलीं हँ ब्रह्म बाबा के स्थान तक। उहाँ से देखनीं हँ कि सारा चँवरा पानिए पानी भइल बा।
लोग कहत रहले हँ कि गंडक नदी के बान्हो कमज़ोर होखे लागल बा। अब अउर दू- चार दिन अइसहीं पानी भइल त हमनियो के ओर बाढ़ आ जाई। सगरी डूब जाई।'
बाप-बेटा में बातचीत चलते रहे कि फिनु से तेज बारिश शुरू हो गइल।

सभे बारिशें में अपना- अपना गंतव्य के ओर भागे लागल।

फिनु बारिश के होत आज चउथा दिन ह लेकिन अब्बो बादर काला विकराल रूप धारण क के घनघोर गर्जन-तड़पन के साथ बरस रहल बा।सूर्यदेव के दर्शन भइले पंद्रह दिन से ऊपर भइल बा। लागत ह कि करिया- करिया मेघ रूपी राक्षसन के डर से उहो कहीं गुफा में छिप गइल हउवन..।

बिहार प्रदेश सरकार राज्य में ए क्षेत्र के अतिविशिष्ट आपदा ग्रस्त घोषित कर चुकल बा.. बाढ़ में घिरल लोगन के बचाव कार्य भी चालू बा। चहुँओर घरन में पानी घुस चुकल बा। लोग घर छोड़ छत के आसियाना बना लेहले बा लेकिन पानी के बौछार में कमी नाइखे होत।

अकलू- 'रिकी के माई, हमके त महाप्रलय के आसार लागत ह। काहें कि आधी रात में कउआ चिल्लात हवें जा अउर आसमान में बदरियो अब्बे निशाचर के भाँति आपन माया फइलावत जात हवे। हमके त गोरुवन के चिंता भइल ह। सारा इलाका के जानवर मर जइहें पानी में दाना-चारा बिन..! अउर अब ले कवनो राय-विचार ना भइल जे गोरुअन के राखै के कहाँ जुगाड़ होखे..?'

गर्दन बाहर निकाल ऊपर आसमान के देखे लगलें।

बारिश में भींगत वीरेश गाँव ओर से आइल-'बाबूजी सभे गाय-बैलन के ब्रह्म बाबा के ऊँचा पर ले के जात बा, सबके राय से इहे प्लान बनल ह कि गाँव के कुछ लोग रह के पहरा दिहें मालन के।'

अकलू -'तू लोग अब घरे पर बइठऽ। हम आवत हईं बैलन के उहाँ पहुँचा के..।'

वीरेश - 'ना बाबुजी, तू बइठऽ। हम अउर रवि जात बानीं सन। तोहसे अकेले बैल ना जा पइहें पानी में..।'

-'बबुआ, रुक जा लोग। कुछ खा-पी लऽ लोग, कहीं आवे में देर हो जाई..!' ओकनीं के बात सुन माई झटकले रसोई घर से बाहर आ कहली..।

दूनो खाना खा के चल दिहलें बैलन के ले के ऊँच स्थान ओर। बाकि बैल पानी में आगहीं ना बढ़े। डेरा सन चहुँओर पानी देख के। कइसहूँ खींचत अउर ठेलत पहुँचाए दिहल लोग स्थान तक। उहाँ एक जगह बाँध दुनू भाई रह गइलें रखवारी खातिर अउर लोगन के साथ में...।

लइकन के अभी गइले घण्टो भर ना भइल कि गाँव में हल्ला हो उठल जे सभे सुरक्षित जगह पर चल जाव भा पक्का मकान के ऊपर चढ़ जाव काहें कि गंगा मइया के बाँध टूट चुकल बा पानी बड़ी वेग से बढ़त बा एनने ओर।

अकलू असमंजस में पड़ल रहलें कि ऊ कहाँ जासु परिवार ले के.? काहें कि उनकर घर त सीमेंट के छप्पर ह, जे के कवनो ठीक नाहीं कब पानी के बहाव पर गिर जाए..।

तबे बाहर से आवाज आइल - 'काका अपना परिवार ले के चलि चलऽ हमरा छत पर। बाबूजी बुलावा भेजले हँ। अकलू, उनके बीबी आ बेटी साथ में कुछ बिछावन लेके भींगते निकल पडलें आपन घर छोड़ दूसरा के आशियाना में आपन जान बचावे।

आधा रात बीतला के बाद जब लोग पीपल के डाल नीचे खुद के छुपा उंघे लागल तबे अचानक पानी के शोर बढ़ गइल। उहाँ बाँधल जानवर भी डर से लगलें शोर मचावे आ उछले। सब लोग के नींद खुल गइल भयंकर बहाव के गर्जना सुन के। अकलू के बैल किनारे ही रहले अचानक से पानी के बहाव के कारण ऊँचा के मिट्टी कट के छपाक से गिरे लागल पानी में।

अउर संजोग से जब एक बैल डर से उछाल लिहलस त ओकर पैर ज़मीन पर ना पड़ के पानी में पड़ गइल। बहाव एतना तेज़ रहल कि बैल के पाँव ही ना टिके जमीन पर। ई देख के रवि दौड़लें। सोचलें कि रस्सी खोल खींच लिहीं लेकिन रस्सी खुलते बैल के साथ रवि भी बहाव में बह चलल..।

वीरेश देख के दौड़ल परन्तु लोग पकड़ लिहल। सुबह हो गइल, भाई के साथ भइल घटना पर रोवत-रोवत।

सुबह खड़ा हो के सभे देखे के कोशिश कइल जे कहीं दिख जाव लेकिन सिवाय पानी के बहाव के कुछ ना दिखल। अकलू अउर परिवार चिंतित रहे जे लइका अकेले कइसे होइहें ब्रह्म बाबा के पेड़ नीचे...? उनकर बीबी बइठ के ख़ाली ब्रह्म बाबा के गोहरावें, चिरौरी करें, आँसू बहावें।

दुइ दिन बाद बारिश खुलल। तब ले अकलू के घर के पिछला हिस्सा ढह चुकल रहे। तीसरा दिन बहावो में कमी भइल पाँचवाँ दिन बहाव पूरा तरह बन्द रहे। पानियो शाम ले कुछ कम भइल परन्तु वसंतपुर गाँव समूचा उजड़ चुकल रहे। सबसे अधिक केहू के क्षति पहुचावल त अकलू के।

अकलू छत से उतर सीधा ब्रह्म स्थान के ओर चललें लेकिन रास्ते में खबर सुन दहाड़ मार पाँकी में रोवत दौड़त सीधा ब्रह्म स्थान ओर गइलें जहाँ अधमरा हालत में वीरेश पड़ल रहे। लोग के सहायता से ओ के उठा के बाबूसाहेब के घर ले आइल गइल। थोरहीं देर में ख़बर पूरा गाँव का बग़ल के गाँवन में फइल गइल रहे। रवि के माई छाती पिट के रोवें।

सभे रोदन सुन शिथिल होखे लागल। तब गाँव के सारा लोग मिल के राय कइल कि आजुए खोजे के काम होई। कहीं बच के किनारे लागल होई।

सब केहू मिल के खोज करे निकल पड़ल। गाँव के चारू ओर लोग निकलल लगभग तीन घण्टा के खोज के बाद हल्ला भइल गाँव से कुछ किलोमीटर की दूरी पर..., सभे ओ तरफ़ भागल सामने के नज़ारा देख सब केहू अचंभित और दम्भ रह गइल बैल पानी में पड़ल रहे अउर बगल में एगो छोट जामुन के डाल से रवि फँस के अचेत भइल रहलें। बुज़ुर्ग लोग नाड़ टटोल देखल त अबे साँस चलत रहे।

बुढऊ बाबा नाड़ी टटोलते कहलन- "जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोइ..!"

अकलू के औरत अपने लाल के सीना से लगा अउर विलाप करे लागल आ रोवते कहली- ई जामुन के पेड़ एकरे जन्मदिन पर एक्के बाबूजी लगवले रहलें जब ई साल भर के भइल रहे..., अउर बगल में मरल पड़ल बैल के शरीर पर हाथ फेर-फेर रोवे लगली।

अब बाढ़ के पानी गाँव से पूर्णत: हट चुकल बा। फिनु से सभे मिलिजुल के गाँव के पुनः स्थापित करे में लागल बा।

अब्बे दू दिन पहिले अकलू दिखल रहलें पगडंडी ओर साथ नया बैल के जोड़ी ले के ताकि फेर से अगिला साल गंगा मइया के उफान में आपन सम्पति तर्पण क सके अउर एक बार फिर जोर से जयकारा लगा सके..... "गंगा मइया की जय!"

◆ ◆ ◆

नन्दीश्वर द्विवेदी
"राजन"
गोपालगंज (बिहार)

ए बदरी

सुखि गइलें पोखरा आ जर गइलें टपरी, ए बदरी ।
कउना बात पे कोहाइ गइलू ए बदरी ।
देखा पेड़वा झुराई गइलें ए बदरी !

बनरा के पेट पीठ एक भइलें घानी ।
कहा काहें होत बाटे राम मनमानी ।
गोरुअन के बेटवा क पेटवा ह खपरी, ए बदरी !

सँझवा बिहनवा में कमवा न सपरी ।
होते दुपहरिया भुजाई जालीं मछरी ।
नदिया में अगिया लगाई देलु जबरी, ए बदरी !

करकेला मनवा मसकी जाला देहियां ।
रोवलो न जाला की मसान भइल अंखिया।
लोरवा बहाईं ना सहाई आंख कजरी, ए बदरी !

सियरा हथिनिया आ बघवा के बात बा ।
तोहके बोलावे ला ई बनवा छोहात बा ।
मेघवा बोलावें त अमाँय जालु गगरी, ए बदरी !

बोला काहें भकुआय गइलू ए बदरी !
देखा पेड़वा झुराई गइलें ए बदरी !

◆ ◆ ◆

धीरेन्द्र पांचाल

दू गो ग़ज़ल

लगे जब घाम त ऊ छाँव हमरा याद आ जाला।
शहर के भीड़ में भी गाँव हमरा याद आ जाला।

चलीं जब भी लगावे गोड़ में मोजा आ जूता त,
ऊ माँटी में सनाइल पाँव हमरा याद आ जाला।

मोहब्बत आ वफादारी के जब भी बात होखेला,
एगो मिसरी के जइसन नाव हमरा याद आ जाला।

मिले जब दर्द केहू से त माई याद आवेली,
लोराइल आँख में ऊ भाव हमरा याद आ जाला।

कुरेदऽ जन तू बचपन के बहुत तकलीफ़ होखेला,
जवानी में अगर ई घाव हमरा याद आ जाला।

◆ ◆ ◆

राह दरिया से भी निकल आई।
प्रेम के बोल जब बोलल जाई।

जब भी कुछ काम नीक करम तऽ,
पहिले ओह काम पे हँसल जाई।

मीत होके भी गर करब धोखा,
मीत के अर्थ ही बदल जाई।

ए जवानी पे जनि घमंड करीं,
उम्र के साथ ईहो ढल जाई।

उनकी बोली से मधु चुवत बाटे,
बात करबऽ त दिल फिसल जाई।

जल में रहि के मगर से बैर भइल,
जाने कइसे 'अनुज' जियल जाई। ◆ ◆ ◆

उमाशंकर दूबे 'अनुज'
जिला - बक्सर (बिहार)

डहकत इंसान से का मतलब?

डहकत इंसान से का मतलब?
डूबत ईमान से का मतलब?

आज सबके सँसरी टंगाइल
बबुआ नादान से का मतलब?

रातो दिन चिउटी ना छोड़े
मरत बेजुबां से का मतलब?

पत्थर आ तलवार उठावेले
दहके हिन्दुस्तां से का मतलब?

आतंकी कहीं क़ाफ़िर बोल
अगिला अन्ज़ां से का मतलब?

मज़हब के आड़े लड़ावे साधु
गीता - कुरआन से का मतलब?

◆◆◆

शैलेन्द्र कुमार 'साधु'
जलालपुर, सारण बिहार

'अरे भारती तू कब अइलू सासाराम ?" अपने ही गाड़ी ले के आ गइलू, रबिया ड्राइवर कहाँ बा? चाचा निकाल देनीं का ओकरा के?'

'ना सरोज ओकर पत्नी के बच्चा होखे के बा न, ऊ अस्पताल में भर्ती बाड़ी| हम सोचनीं कि हमीं भोरे- भोरे सब्जी आ दूध लेके आ जाईं आ गाड़ी चलइले बिना त आ गइनीं।' भारती हँसके सरोज से कहली|

भारती के सासाराम अइले दस दिन से ऊपर हो गइल बा |

सासाराम भारती के मायका ह आ बड़ी दिन पर आइल बाड़ी, बहुत साल काम के सिलसिला में विदेश रहली | ई गोरख चाचा के तीसरी बेटी हई|

अब्बे भारती बाजार से सब्जी, दूध ले के घर से आवते बाड़ी कि रास्ता में उनका गेंदा भइया मिल गइलें |

"अरे भारती हमरो के घरे ले ले चलऽ | मामा से मिले के बा, ऊ का बा न कि नगरपालिका के चुनाव होखे के बा ओही सिलसिला में मामा से बतिआवे के रहे "| "आइ भइया", ई बोल के भारती कार के दरवाजा खोल देहली |

गेंदा आ भारती घर पे पहुँचलें त गोरख चाचा आ चाची ऊठ गइल रहे लोग आ चाय पियत रहे लोग |

"आवऽ भारती चाय पियऽ, ई गेंदा कहाँ मिल गइलन हँ?" गोरख चाचा पूछलें |

"रास्ता में पापा , पापा ऊ ताड़ के कोआ मंगवावऽ ना सालों से नइखीं खइले", भारती हँसके बोलली |

भारती के बचपन एही घर में बीतल बा | पाँच कमरा' के बड़ा बंगला, गोरख चाचा बड़ी मन से ई बंगलि बनवइले रहन | बंगला के आगे बहुत बड़ा पोर्टिको बनल बा, जेकरा में चार - चार कार एक साथ खड़ा हो जाई बंगला के पीछे बहुत बड़ा बगीचा बा जेकरा में ताड़ के पेड़ से लेके आम अमरूद बेर अउर कई तरह के सब्जी लगावल रहे| अब त तनी कम हो गइल बा| गोरख चाचा एतना ध्यान न दे पावेलन लेकिन बगीचा अभी भी हरा भरा बा |

भारती के अइसन लागता जइसे ऊ अपन बचपना जी रहल बाड़ी |

जब घर के छत प गइली त घरौंदा देख के आँख में आँसू आ गइल| कइसे छोटी उनकरा से लड़त रही |

गोरख चाचा घरौंदा सीमेंट के बनवा देले रहन | ई हर साल मिट्टी से बनावे से अच्छा बा कि सीमेंट के हो जाए | जब घरौंदा सीमेंट के बनके तैयार भइल त छोटी लड़े लगली कि दीदी ई बड़का कमरा हमार ह, ए में हमार गुड़िया रही | शांत स्वभाव वाली भारती बस हाँ में मूड़ी हिला देत रही | आज छोटी अपना गृहस्थी में व्यस्त बाड़ी आ भारती अपना गृहस्थी में |

बचपन के घरौंदा के खेल गृहस्थ जीवन में एगो अनुभव के काम करेला |

"पापा, कहाँ जा तारऽ?",

भारती गोरख चाचा के कहीं जात देखली त टोकली|

"अरे, भारती हम गेंदा के चुनाव प्रचार में जा तानी" |

"हँ, लेकिन जइबऽ कईसे? रबिया त अभी तक आइल नइखे आ बाहर कड़ाके के धूप बा जइसे सूरुज भगवान सब जलावे खातिर बइठल बाड़न"|

"हम टेम्पू ले लेब" ।

"अरे लूह मार दी ", अच्छा रुकऽ, हम चलीं तोहरा साथे?"

"तू?"

“हँ पापा, हमूँ गेंदा भइया के भाषण सुन लेब “| दूनो बाप बेटी हँसे लगलें |

भारती जल्दी- जल्दी तइयार होखे लगली | सफेद साड़ी आ ओकर किनारा एकदम कथई रंगवाला पहिन लिहली | ब्लाउज एकदम बंद गलावाला | जब काला चश्मा लगा के कार चलावत पहुँचली चुनाव प्रचार स्थल पर त एकाएक पूरा भीड़ पलट के भारती के देखे लागल | गेंदा, गोरख चाचा अउ भारती के देख के खुश हो गइलन | धन्यवाद चाचा आवे के आ भारती तहरो के | सोचले ना रहीं कि तू अइबू “|

“अरे भइया ऊ रबिया के जगह हम पापा के ड्राइवराइन बनके आइल बानी।“

गेंदा जोर से ठहाका मार के हँसे लगलन।

“अच्छा चलऽ तहरा के सबसे आगेवाला सीट दिवाईं”।

भारती जब भीड़ के चीरते आगे सीट पर बइठे जाए लगली त गाँववाला अइसे मोहित हो के देखत रहन सँ जइसे कवनो फ़िलिम के हीरोइन देख ले ले बाड़न सँ|

"अरे भारती, तुहूँ आ गइलू?”

“अरे सरोज तू एही जा?”

“हँ, हमार बड़का भइया ददन ही त विपक्षी दल में बाड़न“, देखिहऽ कइसे बुलंद आवाज में भाषण देलन “| सरोजवा एकदम खुश हो के गर्व के साथ भारती के बतावत रहे |

दूनों पक्ष के भाषणबाजी शुरू भइल | पक्ष- विपक्ष के वादा आ दावा दुनू गाँववालन के लुभावे में कवनो कसर ना छोड़ल चाहत रहे|

“अच्छा त भइया लोग काल्ह फिर मिलल जाई एही जगह प “| फुल्लन भाषण के अंतिम चरण के विराम देत बोललन |

”ऊ त ठीक बा भइया लेकिन हई जवन दीदी आइल बाड़ी, ई काल्हो अइहन नू?”| भीड़ में से एगो आवाज़ आइल |

“हँ हो चाचा, दीदी काल्हो अइहन आ उनकर भाषण लागत त काल्ह होई “| ओही भीड़ में से दूसरा आदमी पहला आदमी के जवाब देत रहे|

“अरे नाना चाचा ई भारती बहिन हई , बैंगलोर से आइल बाड़ी | बस अइसहीं आ गइली ह” |

शाम के हारल, थाकल जब बाप बेटी घर पहुँचल लोग त चाची मछरी आ भात बना के रखले रही आ साथ में आम| भारती खाना खा के सुते चल गइली |

सुबह -सुबह भारती के पति के फ़ोन आ गइल कि अब तू वापस आ जा| भारती सोचली कि सच में दस दिन से ऊपर हो गइल, अब वापस चले के चाहीं| ओहिजो हमार जरूरत बा| भारती के लरिका स्कूल के तरफ से कश्मीर घूमे गइल बा अब उहो वापस आ जाई |

भारती अब्बे फ़ोन रखली कि सामने गेंदा भइया आ रबिया साथे -साथे बरामदा में खड़ा बा लोग |

“अरे गेंदा भइया, एतना भोरे- भोरे? आ रबिया तुहूँ आ गइलऽ “, साथे दुनो लोग आइलऽ ह लोग का?” |

“ना दीदी इत्तेफ़ाक से हमनीं के दूनो लोग साथे आ गइनीं जा”| रबिया कहलस |

“जाए दे रबी आ गइलें त तनी पापा के आराम हो जाई”|

“पापा, देखऽ गेंदा भइया आइल बाड़न”| भारती बरामदे से चिल्ला के बोलली|

गोरख चाचा आ गेंदा भइया आपस में बात करे लागल लोग | एही बीच भारती चाय आ कचौड़ी ले अइली |

“ई लऽ भइया चाय का साथे कचौड़ी खा| नाश्ता नाहिए कइलें होब?”|

तीनो लोग मिलके कचौड़ी खाए लागल |

“भारती हम का कहत रहीं कि काल्ह तू भाषण में गइल रहलू त गाँववालन के बड़ा अच्छा लागल’ कि उनका गाँव के विकास में शहर के लोग भी जुड़त बा | खासकर महिला वर्ग, आजो चलऽ ना? तहरा चले से भीड़ भी इकट्ठा हो जाई आ गाँववालन के मनोबलो बढ़ जाई “| गेंदा लगभग भारती के खुश करत मनावत रहन “|

“हम भइया?” भारती थोड़ा चौंकली|

“हाँ काहे ना ? बैंगलोर में अपना ऑफिस में कुछ होला,चाहे तोहरा सोसाइटी में, जहाँ तू रहेलू, हजार फ्लैट के सोसायटी बा, सब जगह तू हर चीज़ में बढ़चढ़ के बोलेलू त एहिजा काहे ना?”

जानऽतारऽ गेंदा, ए भारती के छुईमुई मत समझिहऽ ई एकदम इंदिरागांधी हियऽ , जब बोले लागेले त अच्छा-अच्छा लोग खड़ा हो के सुनेला “| गोरख चाचा जइसे रुके के नामें नइखन लेत |

“अच्छा पापा बस करऽ, हम आइब भइया “| एतना कह के भारती अपना रूम में चलि गइली |

"माँ आज शाम के बाजार चल ना , तनी बनारसी साड़ी देख के खरीद लेब” ,”

“सुन ना भारती, हम ना जा पाइब बेटा, हमार घुटना बहुत दर्द करता, तू एगो काम करऽ, ऊ सरोजवा के फ़ोन क के बुला लऽ, हमरा कवनो छोटा मोटा काम रहेला त ओकरे के बुला लेबिला | बेचारा तोहार सहपाठी होखे के नाते आज तक लिहाज़ करेला “ |

चाची बोलते जात रही|

भारती चाची के राय पर सरोज के फ़ोन क के बुला लेहली|

“तोहरा भारती, बाजार करे खातिर सासाराम के बाजार मिलल ह, एतना बड़ा शहर में रहेलू ओहिजा छोड़ के एहिजा तोहरा सामान खरीदे के बा?“ ई बड़बड़ाते सरोज घर में घुसल |
“देखऽ सरोज, चले के बा त चलऽ, ना त बकवास न करऽ”| भारती भी बच्चन की तरह उलझ गइली |
पुराना मित्र जब मिलेलन त ना ओहदा सामने होला ना उम्र के बंदिश| सरोज आ भारती बस स्कूली बच्चन जइसन उलझ पड़ल लोग|
गोला बाजार खातिर ,भारती गाड़ी हवा में उड़ावत चल देहली |
बगल के सीट पर सरोजवा बइठ गइल | सरोज एक तरह से भारती के देख के गर्वान्वित रहत रहे| “भारती तू बहुत बड़ा कंपनी में काम करेलू न? खूब अच्छा तनख्वाह मिलेला न?” सरोजवा भारती से पूछलस | “हँ सरोज” |
“हँ तू लोग पढ़े लिखे में निकल गइलू लोग ,अउ चाचा, चाची भी खूब ध्यान देहलन तू लोग पे”|
“अइसे काहे बोलऽतारऽ सरोज, तूहूँ त अच्छा बिज़नेस करेलऽ”|
भारती एक तरह से सरोज के संतावना देत रही|
“काहे के बिज़नेस, क्लास में सबसे पीछे बइठ के टीचरन के मजाक बनावत रहीं| तब ना समझ में आइल कि जब जीवन के बारी आई तो ऊ अइसन मजाक बनाई कि रोते- रोते हँसे पड़ीं और हँसते -हँसते रोए पड़ी, दूध के बिज़नेस जइसे तइसे क के चल जाला”|
“भारती हमार घर रास्ते में ही बा। चलऽ तनी ए गरीब के घर देख लऽ”|
“सरोज देर हो जाई”|
"अरे चलऽ ना। अइसे भी कौन तहरा ऑफिस पकड़े के बा “ ?
सरोज के जिद के आगे भारती के एक ना चलल |
“अच्छा, चलऽ” भारती थोड़ा मुस्कुरा के कहली|
सरोज घर के रास्ता बतावत गइल, ओसहीं भारती गाड़ी चलावत गइली|
एगो चौड़ा गली मे सरोजवा गाड़ी रुकवइलस अउ ले गइल अपना मकान में|
मकान में घुसते उनकर माली हालत के अनुमान भारती के लाग गइल| दू कमरा के घर| जवना कमरा में भारती खड़ा रहली ओह में कुछ खास ना रहे| एगो लकड़ी के तीन सीटवाला सोफा रखल रहे अउ ओह पर घर के बनावल गद्दी लगावल रहे| एगो छोट टीवी टेबल पर रखल रहे|
“ए चुन्नु, ए चुन्नु , सीमा देखऽ के आईल बा”? सरोज चिल्ला चिल्ला के अपनी पत्नी आ बेटा के बुलावे लगलें|
पर्दा हटा के लगभग आठ वर्षीय सरोज के बेटा चुन्नू आइल| भारती के देख के तनी सकपका
गइल|
“चुन्नू ई देखऽ, ई तहार भारती फुआ हई, बहुत बड़ा साहिब हई, मम्मी कहाँ बीया?”
अभी सरोज पूछते रहन कि पानी ले के उनकर पत्नी सीमा प्रकट भइली | साधारण नाक -नक्शवाली पतली- दुबली औरत माथे पर पल्लू लिए सामने खड़ा रहली |
“भारती, मिलऽ हमरी पत्नी सीमा से। सीमा ई भारती हई, हमनीं के साथ में पढ़त रहीं जा। अरे सीमा, भकचका मत चाय पिलावऽ भारती के, कुछ खिलावऽ भाई”| सरोज बोलत जात रहलें |
चुन्नू सरोज के बेटा ओकरा गोदी में चढ़ गइल |
“पापा काल्ह फीस भर दिहऽ , आधा महीना बीत गइल बा | मास्टर साहब बहुत डाँटत रहन, हमार जूता भी लेबे के बा पीटीवाला अलग से|
चुन्नू बच्चा बेचारा के कवनो मतलब नइखे कि ओकरा घर में केहू मेहमान आइल बा |
“अच्छा बाबा भर देब” |
सरोज थोड़ा झेंप गइलें, भारती के सामने|
अंदर से सीमा चाय आ बिस्कुट ले अइली|
“दीदी राउर बहुत नाम सुननीं हँ , सुननीं हँ कि गेंदा भइया के चुनाव जीतवावे मे राउर बहुत बड़ा हाथ बा” | पता ना काहे भारती के ई बात कुछ ठीक ना लागल |
“चले के सरोज?, लेट हो जाई “ |
दूसरा दिन गोरख चाचा आ भारती गेंदा के चुनाव प्रचार में पहुँच गइल लोग|
“दीदी आज तू बोलबू न? “| भीड़ में से लगभग चौदह-पंद्रह साल के एगो लड़की दौड़ के भारती के पास आइलि आ पूछे लागलि | भारती हँस देहली|
गेंदा स्टेज पर से गुजारिश कइलन कि भारती आ के दू शब्द बोलें | भारती जब स्टेज पर चढ़ली त गाँववाला बिना भाषण के ही ज़ोर ज़ोर से ताली बजावे लगलन |
“सब चाचा, चाची, भाई, बहिन के प्रणाम। सासाराम के हम बेटी हईं आ आज अपना भाई खातिर रउआ लोग से मिन्नत करे आइल बानीं कि अगर ई जीत जइहें त जवन शिक्षा के अभियान बा “बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ” के तहत हर बेटी

के स्कूल ड्रेस अउ कंप्यूटर मुफ्त में दिवइहें, बिजली -पानी त पहिलहीं से मुद्दा में बा “ | भारती बोलत जात रहली आ गाँववालन के ताली पर ताली बाजत जात रहे |
कोना में खड़ा सरोज सब देखत रहलें|

भारती जब शाम के घरे अइली त देखली कि गोरख चाचा के हल्का खाँसी रहे|
“का भइल पापा? दवाई लेलऽ ह ?”
“हँ हो, कइसन रहल गेंदा के भाषण?
“पापा, साँच कह त गेंदा भइया में कवनो दम नइखे।
ददना के आगे गेंदा भइया टिकिहें ना”|
भारती चाचा से साँच बोले में ना चूकली |
“अच्छा पापा, द्व दिन के बाद हमरा निकले के बा, रबिया के बोल दिहऽ कि छुट्टी ना मारे|"

" भारती नाउन चाची याद बाड़ी?,”
"हँ माँ”|
“आज आई त उनका से आपन गोड़ रंगवा लिहऽ, अब बूढ़ा गइल बिया नउनिया, कबो ,कबो हाल समाचार पूछे आ जाले” |
भारती बस अपनी माँ के बात मे हाँ मे हाँ मिलावत जात रही|

“दीदी तनिको नइखू बदलल, ओसहीं गोरा रंग, सुन्दर छोटा मुँह बा तहार। मेहमान अउ बाबू नइखे आइल लोग?”|
“ना चाची “ | भारती हँसते बोलली |
“नाउन चाची रउआ अभियो बात करे में थाकत नइखीं “|
पैर रंगवावत- रंगवावत भारती कहली| अभी हँसी ठिठोली होते रहे कि सरोज अपन बेटा चुन्नू के लेके हाजिर हो गइलें |
“का हो भारती ई का करवावऽतारु ? , मने कुछो कसर मत छोड़िहऽ एहिजा के”|
ज़ोर ज़ोर से सरोज हँसत रहे | “बस सरोज”,| भारती तनी खीझ के कहली |
“अरे, चुन्नू आइल बा? हेने आओ बाबू “ | भारती बड़ी प्यार से ओकरा के बोलवली|
“चाची अब रहे दीं, हो गइल” | नाउन चाची के रोकत भारती कहली।
“ आवऽ सरोज बइठऽ। “
“पहिले ई देखऽ कि चुन्नूवा तोहरा के का दिखावे खातिर आइल बा?"
“का हऽ चुन्नू ?” भारती बड़ी लाड़ से पुछली चुन्नूवा से |
“बुआ जी देखिए आपका ही दिया हुआ ड्रेस जूता और बैग लिए हैं, आप पहचाने ही नहीं? थैंक यू सो मच फुआ , आई हैव ब्रॉट चॉकलेट फॉर यू “|
चुन्नूवा इंग्लिश में बोलत रहे आ एन्ने सरोज एकदम गर्व से फूलत जात रहलें|
“थैंक यू चुन्नू” | भारती गोदी में उठा लेहली आ प्यार करे लगली |
“वाह भारती, दोस्त तू हमार हऊ आउर उपहार तू हमरा बेटा के देतारु “ ? हमार उपहार कहाँ बा?
का चाची, हमरो उपहार मिले के चाहीं कि ना? “ सरोज, भारती के चिढ़ावत कहत रहलें।
“तोहरा के अइसन उपहार देब कि कब्बो ना भुलइबऽ”। भारती मुस्कुराते कहली।
“चुन्नु अब तू अंदर जा के दादी से पूरी तरकारी मांग के खा लऽ “|
चुन्नूवा दौड़ के अंदर गइल|
“भारती धन्यवाद, का करी ई दूध के बिज़नेस तू देखते बाड़ू कि एकर का हाल बा? हरदिन सोचीले कि अबकी मुनाफा होई त चुन्नूवा के इंग्लिश मीडियम स्कूल में डाल देब लेकिन हरबार कुछ न कुछ सामने आ जाला | सीमा कभी कुछो बोले ना लेकिन ओकर चुप्पी हमारा बहुत कुछ कह देबेला| देखऽ अबकी बार उम्मीद बा कि भइया अगर जीत गइलें त तनी दूध के बिज़नेस में फायदा मिली।" भारती चुपचाप सब सुनत रहली| कइसन जीवन के गाड़ी होला एक्के साथ पढ़ल साथी लेकिन पटरी दोनों के अलग अलग |
दुसरा दिन भारती आपन बैग पैक करत रहली कि गेंदा फिर से आ गइलन |
“जातारु का भारती?”
“हँ भइया , परसों जाइब,” |
“ वअरे भारती हो सके तो चुनाव तक रुक जा न, जनमानस तहरा से बहुत प्रभावित बा। तू रहबू त हमनीं के पार्टी के बल मिली “|
गेंदा भारती के रोके के कोशिश करे में लाग गइलन |
सच में भारती के उपस्थिति इतना प्रभावित होई केहू सोचले ना रहे |
“ना भइया, जाना जरूरी बा”।
“देख लऽ, एगो भाई के बिनती बहिन से बा। जो बहुत सालन बाद अपना घर आइल बिया “ |
एतना कह के गेंदा चल गइलें|
भारती थोरे असमंजस में पड़ गइली |
“माँ, ई गेंदा भइया त पीछे ही पड़ गइलें” भारती खींझत बोलली |

"त का भइल भारती? रुक जा ना, एक सप्ताह के त बात बा"।
चाची भी लगभग गेंदा के साथ देत रहली |
"अउ भारती गाँव में रोहिला के बियाह बा, तू बियाहो देख लिहऽ। बियाह के दुसरे दिन चुनाव बा, तीसरे दिन निकल जइहऽ" | गोरख बो चाची कहली |
भारती बेमन से रुक गइली|
शाम के अच्छा से तइयार होके भारती रोहिला के बियाह में जाए के तइयार हो गइली | भगवान रूप त उपहार में भारती के देले रहन | नारंगी बनारसी में साड़ी में गजब ढाहत रहली भारती |
चाचा, चाची आ भारती के ले के रबिया, रोहिला के वियाह स्थल पर पहुँचल |
बारात बड़ी धूमधाम से लागल| बैंड बाजा अपन लाल ड्रेस में ड्रम ,शहनाई बजावत दुआरे बारात लगा दिहलन | बाराती के तरफ से मार लइका सब नागिन नाच करके रोड पर ही लोट जात रहनसँ |
ई गांव के सबसे पसंदीदा नागिन नाच हऽ |
ई नाच के झुंड में सरोजो रहलें| दूनों हाथ उठा- उठा के नागिन नाच करत रहलें | माथा प गमछा बाँध के अउ ओकरे किनारा के बिन बना के खूब नाचत रहलें |
पता ना काहें कि गर्मी के चलते भारती के मन घबराए लागल | पसीना पसीना हो गइली | अइसन लागल जइसे ब्लडप्रेशर कम हो गइल होखे |
"पापा, घरे चलऽ, हमरा ठीक नइखे लागत " |
"अरे अब्बे कइसे चलीं? दुवार पुजाई भी नइखे भइल, एगो काम करऽ तू रबी के साथ चल जा हमनीं के कइसहूँ आ जाइल जाई " | गोरख चाचा बोललन|
गोरख चाचा रबिया के इशारा से बोलवलन त ओहिजे सरोजो रहलें , साथ में आ गइलें |
"का भइल चाचा? ",
"अरे भारती के तबियत बिगड़ गइल बा | रबी के साथे घरे भेजऽतानीं "|
"अगर रउआ कहीं त हम छोड़ दीं?"? रबी रउआ लोग के ले के आ जाई"|
"हँ, ई ठीक रही ", चाची तुरंत मान गइली |
सरोज आपन खटारा जीप निकलें अउ ओकरा पर भारती के बइठा के चल दिहलें| थोरे दूर पे जब गइलें त एगो चाय के दुकान पर जीप रोकलें |
"भारती तनी बाहर उतरऽ, हई ल पानी पियऽ आ बइठऽ एहिजा "|
ओहिजे बेंच पर इशारा करत कहलें | भारती नीचे उतरली आ पानी पिअली त ठंढी हवा में थोड़ा अच्छा लागल |
"सरोज सच में अभी ठीक लागऽता " | भारती गहिर साँस लेत बोलली |
"अरे तू लोग के ई भीषण गर्मी सहे के कहाँ आदत बा? ओहू में रोहिलवा के बाबूजी एगो पंखो ना लगवले रहन " | सरोज चिढ़त बोलत रहलें |
"चाय पियबू?"
"हँ, सरोज"।
सरोज दूगो चाय ले के अइलें | दूनो दोस्त चाय के चुस्की लेबे लागल लोग |
"त काल्ह चुनाव बा, जल्दी आ जइहऽ सरोज" | भारती तनी मुस्करात कहली|
"का करब आ के भारती जीते के त गेंदा भइया के ही बा | तू जे साथ में बाड़ू , हमार ददन भइया एह गाँव खातिर बहुत काम कइले बाड़न | बहुत आस रहे कि शायद एह साल हमरा दूध के बिज़नेस के कुछ आयाम मिली | लेकिन ऊ कहावत सुनले बाड़ू न कि नदी के प्रवाह ओनहीं होला जेने पानी के प्रवाह होला | गरीब अउर गरीब होता अमीर अउर अमीर होता"|
सरोज आपन चाय पियत जाते रहलें आ बोलत जात रहलें |
"चले के भारती हो गइल चाय पी के ?"
"हाँ सरोज"|
सरोज फिर से आपन जीप हवा में उड़ावे लगलें |
"सरोज एहिजा से बनारस एअरपोर्ट केतना दूर बा?"
"दू घंटा लागी भारती "।
"अच्छा त तू हमरा के बनारस एअरपोर्ट छोड़ द। "
"का ?" सरोज तनी चौंकलें।
"हँ सरोज"।
दुसरा दिन चुनाव शुरू भइल। ओकर परिणाम ददन के विजयी घोषित हो के भइल|
भारती के उपहार कोना में खड़ा सरोज के आँख डबडबा देलस |

बन्दना श्रीवास्तव
पुणे, महाराष्ट्र

नागरी प्रचारिणी सभा के मंच पर जभो-जभो

साहित्य समाज के दर्पन होला, साहित्य जगत के मूर्द्धन्य विद्वान आ मनीषी सब आपन सगरी उमिर साहित्यिक-तपश्चर्या में गुजार के भारत के साहित्यिक विरासत के ना खाली बचावे के काम कइले बा बल्कि एकरा के औरी अधिका बढ़ावे के काम कइले बा।आज के दौर में भी विद्वान सभन के एगो विशेष वर्ग बा जे अपनी साहित्यिक संस्था, सदन आ समूहन के माध्यम से रचनाधर्मिता के बढ़ावा व संरक्षण प्रदान करत नया लोगन के अपना साथे जोड़ के स्नेहपूर्वक मार्गदर्शन आ प्रोत्साहन दे के साहित्यिक सेवा में नया कीर्तिमान स्थापित करे आ करावे के काम कर रहल बा। एह विचार प्रवाह के बीचे ओ सभे वरिष्ठ सभन के छवि हृदय पटल पर चलचित्र की तरे चलायमान हो रहल बा जेकरा मार्गदर्शन में लिखे, पढ़े आ प्रस्तुति देवे आदि रचनाकारिता के कर्त्तव्य के बोध करे के क्रम धीरे-धीरे जारी बा।

लगभग एक दशक पहिले से भोजपुरी के विकास आ समृद्धि के ध्वज-पताका अउरी मशाल लेके आदरणीय श्री सतीश तिवारी जी के अध्यक्षता में खाली सारा देश ही ना बल्कि विदेशन में भी आपन पहचान कायम करेवाला संस्था "जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" के वार्षिक सम्मेलन के मंच पर कई बरिस के बाद पिछला बरिस वरिष्ठ आ पूर्व परिचित साहित्यकार सभ से भेंट भइल।

सम्माननीय पांडेय जी (संगीत सुभाष जी) के गिनती हमरी गोपालगंज जिला के गिनल-चुनल सांस्कृतिक आ साहित्यिक लोगन में होला। बचपन से हम पांडेय जी के गायन शैली के बड़ाई सुनले रहनीं। ओही घरी एक बेर अपना गाँव में उहाँ के गायकी देखे आ सुने के मौका हमरा मिलल रहे। "जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया" से जुड़ला की बाद आदरणीय के विशाल व्यक्तित्व के करीब से जाने के अवसर मिलल। भोजपुरी साहित्य जगत में स्वनामधन्य चंद्रशेखर मिश्र जी के परंपरा के आगे बढ़ावत अपनी सरस, विशिष्ट आ लोकप्रिय रचना के माध्यम से अभूतपूर्व योगदान दे के वैश्विक क्षितिज पर स्वर्णिम अक्षरन में नाव आ यादगारी दर्ज करावे वाला बहुते प्रसिद्धि पावेवाला कवि स्मृतिशेष राधामोहन चौबे "अंजन" जी के वरदहस्त पांडेय जी के न खाली मिलल बा बल्कि पांडेय जी उहाँ के आपन साहित्यिक गुरु भी मानीले आ हर क्षन मन में पूजत रहीले, इहे कारन बा कि पांडेय जी की हर रचना में 'अंजन' जी के सुपुण्य-दर्शन हो जाला। सरस्वती पूजन समारोह के सुअवसर पर कवि समाजसेवी अनुज श्री ऋषि तिवारी जी सिवान जिला के दरौली प्रखंडान्तर्गत चकरी गाँव में कवि सम्मेलन के आयोजन कइले रहनीं जवना में पहिला बेर बड़हन मंच पर काव्यपाठ करे के मौका श्री पांडेय जी के माध्यम से ही हमरा मिलल रहे।

हमार बहुत इच्छा रहल कि पांडेय जी माई वीणापाणिनी के अनन्य भक्त हईं ए से नागरी प्रचारिणी सभा (देवरिया) में उहाँ के शुभागमन होखो ओइजा के पदासीन पदाधिकारी आ दिव्यमूर्ति कविसभन से एगो नया संपर्क आ परिचय स्थापित होखो। समय के सापेक्ष विगत शनिवासरीय मासिक कविगोष्ठी में आप सभन के बीचे मुख्य अतिथि के अविस्मरणीय आ सुखद भूमिका निर्वहन करत अउरी काव्यपाठ करत आदरणीय पांडे जी के देखि के मन बहुते प्रसन्न भइल। साहित्य जगत के एगो छोर अउरी सगरी छोरन से मजबूती से बन्हाइल रहो एही क्रम में आप सब सम्माननीयगण महामंत्री सर्व श्री अनिल कुमार त्रिपाठी जी नागरी प्रचारिणी सभा देवरिया भूतपूर्व महामंत्री श्री इंद्र कुमार दीक्षित जी,आदरणीय श्री सरोज पांडेय जी, सम्माननीय श्री सौदागर सिंह जी आ अन्य सभे वरिष्ठ कवि जन के स्नेहयुत-संबल हमनीं के सर्वदा सुलभ रहे एही अभीष्ट शुभकामना के साथे आप सभन के –

◆◆◆

रामेश्वर तिवारी "राजन"

नागरी प्रचारिणी सभा के कार्यक्रम के झलकी

भोजपुरी शिरोमणि पं. अक्षयवर दीक्षित जी के जयन्ती (2 जुलाई) पर "सिरिजन" परिवार के तरफ से सादर नमन।

मशरख, रामाज्ञा प्रसाद सिह 'विकल' जी के अभिनन्दन आ अभिनन्दन ग्रंथ के विमोचन के अवसर पर प्रो. डॉ. जयकान्त सिह, ब्रजभूषण मिश्र, संगीत सुभाष, सेवानिवृत्ति न्यायाधीश दिनेश कुमार शर्मा, ओमप्रकाश सिह, कौशल मुहब्बतपुरी आ अन्य नामचीन भोजपुरी साहित्यकार लोग के उपस्थिति।

कार्यक्रम के कुछ तस्वीर

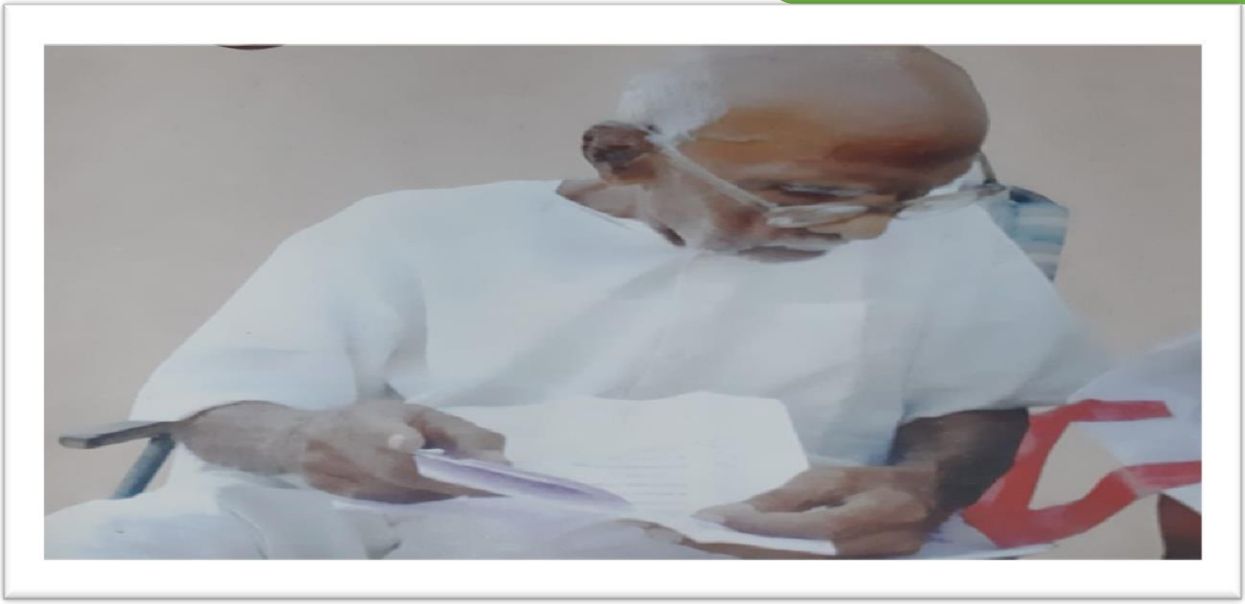

भोजपुरी शिरोमणि पं. अक्षयवर दीक्षित जी के जयन्ती (2 जुलाई) पर "सिरिजन" परिवार के ओर से सादर नमन।

सिरिजन डेस्कः बीतल 24 जून के कन्या मध्य विद्यालय मशरख के प्रांगण में आयोजित रामाज्ञा प्रसाद सिह 'विकल' के अभिनन्दन ग्रंथ के विमोचन भइल। एह मौका पर रामाज्ञा जी के अभिनन्दनो कइल गइल। एह सारस्वत कार्यक्रम के अवसर पर प्रो. डॉ. जयकान्त सिह, ब्रजभूषण मिश्र, संगीत सुभाष, सेवानिवृत्त न्यायाधीश दिनेश कुमार शर्मा, ओम प्रकाश सिह, कौशल मुहब्ब्तपुरी आ अन्य नामचीन भोजपुरी साहित्यकार लोग के गरिमामयी उपस्थिति रहे।

राउर बात

सिरिजन के 16वाँ अंक पढ़े के सौभाग्य मिलल, आभारी बानी, कृपादृष्टि बनवले रहीं!'भाषा के संकट' प डॉ. अनिल चौबे के सम्पादकीय विद्वतापूर्ण बा। 'निहोरा' में अश्लीलता से दूरी बनावे के बात समय के माँग बा काहें कि इ हमनी के माईभाषा के अस्तित्व बचावे खातिर नितांत आवश्यक बा। 'कनखी' छेदतिया, शफियाबादी जी मरम तक बात पहुँचावतानी, 'शब्द कौतुक' के ब्यापकता श्लाघ्य बा आ संस्मरण 'शास्त्री नगर' फेनु से लइकाईं कावर ले गइल हा। 'जा ना का बतिअइब तूं' में 'हमरे टोपी माथ पहिन के भेंटल सइ सनमान' आ 'ए सँवरू' में 'धूरि के बनावत—बिगारत अटारी' वाली अंतरा हृदयस्पर्शी बिआ। भोजपुरी सरसी छंद वास्तव में रस से भरल आ कहानी 'बतकूचन' में लेखक अपना समाज के बहुते बढ़िया शब्द—चित्रण कइले बानी। वस्तुत: सऊँसे पत्रिका पठनीय से आगे बढ़त संग्रहणीय के ओर जा रहल बिआ। बधाई!विनयावनत

अभिलाष दूबे, ग्रा पो. सलेमपुर, जिला- भोजपुर, (बिहार)

सिरिजन के अप्रैल जून माह के अंक हम पढ़नी हँ। हमरा बहुत नीक लागल. एहीसे हम इ पाती लिख रहल बानी। आवरण पृष्ठ के कला पक्ष के त जवाबे नइखे। दिनेश पाण्डेय जी के भी आभार। लेखनी उहाँ के बहुत रुचिकर बा। सिरिजन परिवार के एक हाली फेरु से सादर प्रणाम

डॉ कमल उपाध्याय,बलिया, उत्तरप्रदेश

व्हाट्सप्प के माध्यम से सिरिजन के सोलहंवां अंक मिलल। हमेशा की तरे शानदार बा सिरिजन के ई अंक भी ।बहुत बहुत बधाई बा पूरा सिरिजन के सम्पादक गोल के ।जे एतना मेहनत क के आज सिरिजन के एह मोकाम तक ले पहुँचावें में सफल भइल बा ।

रिकी शर्मा, आसनसोल, पश्चिम बंगाल

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया के "सिरिजन" तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका अप्रैल-जून 2022 के टटका अंक माननीय श्री सुभाष पाण्डेय "सुभाष संगीत" गुरूदेव के वाटशाप के माध्यम से प्राप्त भईल हऽ। ७६ पेज के ऐ पीडीएफ फाईल के अंक में भोजपुरी के गीत-संगीत, गजल, आलेख, कहानी, के संगे भोजपुरी साहित्य के बहुत से भुलाईल कहाऊति, दोहा, संस्मरण, शब्द कौतुक अऊर पुरूखन के कोठार से पुरनका रचना पढ़े के मिलल। जवना के पढ़ला के बाद मन गदगद हो गईल। हम पुरन्जय कुमार गुप्ता जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया परिवार के "सिरिजन" तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका के संपादक मंडल, अऊर भोजपुरी से जुड़ल सभे कविगण, रचनाकार महोदय लोगन के हृदय तल से आभार प्रकट करत बानी जेकरे अथक प्रयास से ई सब पढ़े के मिलल हऽ.. ॥ बहुत बहुत धन्यबाद

पुरन्जय कुमार गुप्ता॑ बद्दी॑ हिमाचल प्रदेश

प्रधान सम्पादक सुभाष पाण्डेय आ सिरिजन-परिवार के कार्य सराहनीय बा। भोजपुरी के समृद्ध करे में सभे लागल बा।एकर अनुमान पत्रिका के स्तरे देखके कइल जा सकेला।प्रधान के प्रधानता कवनो वस्तु पर आपन छाप लगाइये देले। जवना साहित्यिक पत्रिका के मुखिया साहित्य-मर्मज्ञ होखसु, ऊ पत्रिका साहित्यकारन के प्रिय त होखबे करी, नवोदितन खातिर प्रेरणा- स्रोत आ समाजो खातिर मार्गदर्शक होखी।राउर कवित्व से संस्कृत सिरिजन सिरिजन के पथप्रदर्शक रहो आ रउरा साथे हमनी का सहयात्री रहीं, ई बड़ उपलब्धि होई।

मार्कण्डेय शारदेय, पटना, बिहार

श्री राम जी के जन्मोत्सव पर उन्ही के इयाद करत सिरिजन के सोलहंवा अंक के आवरण मनोहारी बा, एकर नियमित प्रकाशन पर सिरिजन के सम्पादकीय समूह के हार्दिक धन्यवाद आ बहुत-बहुत बधाई।

अखिलेश्वर मिश्रा, पटना,बिहार

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे ।

◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

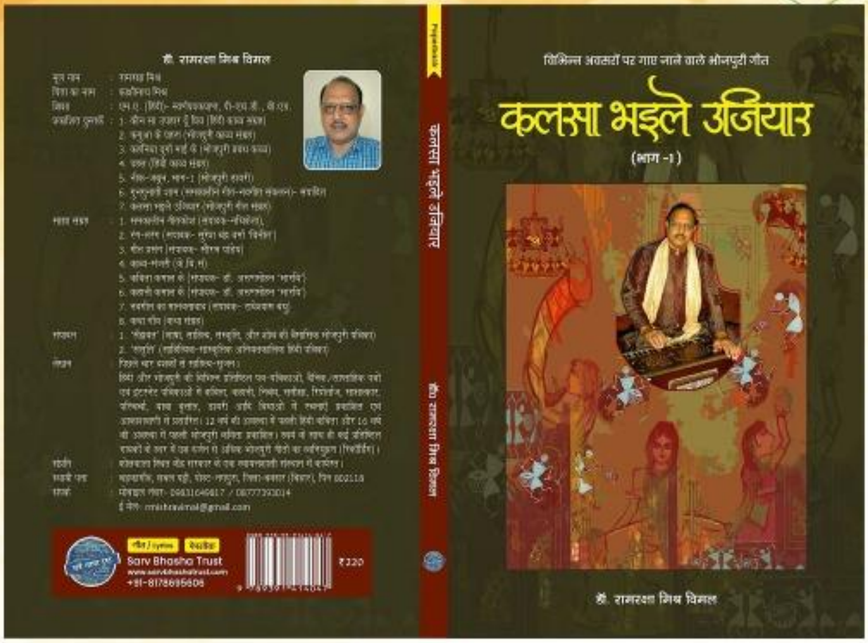

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण तारा डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं:

सर्व भाषा ट्रस्ट

मोबाइल नं.-+ 91-8178695606